विषय सूची

॥ इति शुभम् ॥

Scanned by CamScanner

श्रीग्रन्थकार जी के आदि गुरुदेव श्रीसीताराम उपासना रसिकाचार्य

श्री श्री १००८ श्री रामचरण दास जी
(श्रीकरुणासिन्धुजी) महाराज

श्रीजानकी घाट - बड़ास्थान, श्री अयोध्या जी

❀ श्री अमर रामायण ❀

(श्रीराम रत्न मञ्जूषा)

❊ बन्दना ❊

जै जै सीताराम जी सबके कारण एक ॥
अद्भुत धाम चरित्र युत निरखत सन्त विवेक ॥१॥
रूप सींव रस सींव दोउ निर्गुण सगुण अपार ॥
रास रंग रस सिन्धु में राम नाम सुख सार ॥२॥
जै मिथिलाधिप नन्दनी जै अवधेश किशोर ॥
जैति चारुशीला अली सकल सखिन शिर मौर ॥३॥
जै जै जै हनुमान श्री श्रीप्रसाद अवतार ॥
चारुशिला सर्वेश्वरी तीन रूप निजधार ॥४॥
जै श्री शुभगा 'भरत' तन सेवा समय सुधार ॥
महाविष्णु अवतार महि 'सनक' 'सुशीला' चार ॥५॥
जै विमला अरु 'लछिमना' लक्ष्मण रूपहु धार ॥
नारायण, मुनि शेष तन सेवा समय विचार ॥६॥
जै हेमा 'श्री' रिपुदमन, तीन रूप सुख सार ॥
दम्पति सेवा सुरुख लखि 'भौमा' सुक मुनि धार ॥७॥
सूर्य अंश सुग्रीव 'शिव' शंकर्षण, अवतार ॥
जय अतिशीला प्यारि प्रिय सु वरारोहा धार ॥८॥
जयति विभीषण 'भीषणा' विश्व मोहनी शक्ति ॥
पद्म सुगन्धा लाड़िली लाल प्रिया वर भक्ति ॥९॥
भू शक्ती भूधरण की सुलोचना सिय प्यारि ॥
जयति जृम्भणा हरि प्रिया जाम्बवान तनुधारि ॥१०॥
जयति क्षमावति क्षेमदा 'क्षेमा' क्षमावतार ॥
अंगद विद्या वारिधर 'वागीशा' वर चार ॥११॥
पार्षदाष्ट सिय राम के रसिकन हिय सुख सार ॥
बन्दौं सबके पद कमल दिव्य दृष्टि दातार ॥१२॥

—:❀:—

* श्री अमर रामायण टीकाकार व प्रकाशकः *

जानकीशरण मधुकरिया

श्रीचारुशीला मन्दिर, श्रीजानकीघाट

श्री अयोध्या जी

महाकपाट पिहितो दूरात्सन्दर्शितो जनैः ।
दिगन्त मूर्छितैर्नादैस्तूर्याणामपि नादितः ॥१६॥

उन फाटकों को बन्द करने के लिए महान किवाड़ रत्नों से जटित दूर से जनता को दीख पड़ते हैं उन फाटकों पर तूरी आदि बाजाओं के नाद दिशाओं को मूर्छित किए हुए हैं ॥१६॥

द्वारेषु रक्षितः काण्ड पृष्टैः सर्वाङ्ग भूषितैः ।
उपस्थितैः समावृत्तः कृत सख्यैः स शैन्यकैः ॥१७॥
देशान्तरीय राज्ञाश्च पुत्रै रूक्षित वाहनैः ।
मल्लानाञ्च नटादीनाँ कुतुका गन्तुकैरपि ॥१८॥

द्वारों के रक्षा करने वाली सेना सर्वाङ्ग से भूषित है। बाहर के आये हुए देशान्तरीय राजा लोग राजपुत्रलोग अपने वाहन, सेना पहलवान नटादि कौतुक पूर्वक सब उन फाटकों से सुरक्षित नगर में आते हैं ॥१७॥ ॥१८॥

प्राकारस्यान्तरालेस्य चतुर्दिक्षु विभागतः ।
गजानामश्वकानाञ्च चतुर्दिश्यादिशोभिनाम् ॥१९॥

इस प्रकार की लक्ष्मण जी के महल के बाहरी आवरण के अन्तराल में चारों दिशाओं में अलग २ खण्ड विभाग से अलग २ जाति के दिशा भेद से हाथी, घोड़े अत्यन्त शोभा पूर्वक निवास करते हैं ॥१९॥

वृषभानां गवाञ्चैव महिषीणां गृहोत्तमाः ।
शैरिभोष्ट्रानश्वकानां सर्वेस्युर्मणि चित्रिताः ॥२०॥

तथा बैल, गाय, भैंस, ऊँट, खच्चर घोड़े इन सबके भी उत्तम महल मणियों से चित्र विचित्र शोभित हैं ॥ २० ॥

वन्या क्रीडार्थं संगृह्या पक्षिणा पशवश्च ये ।
गृहाश्च तत्र वै तेषां रक्षकानां गृहान्विताः ॥२१॥

बन में होने वाले पशु पक्षियाँ भी जो खेलने के लिये लाए गए हैं उनके और उनके रक्षकों के घर भी उसी आवरण में शोभित हैं ॥२१॥

शिविकानांस्यन्दनानांगृहास्तोरण भूषिताः ।
गजै र्वा हय हयैश्चापि तेषां सन्ति विभागतः ॥२२॥

शिविका, पालकी, रथों के भी घर तोरणादिकों से भूषित हैं। गज रथ, हयरथों के भी महल उसी आवरण में विभाग पूर्वक है ॥२२॥

स्यन्दनाश्चेभ शिविका अमीषां रत्नकाञ्चनैः ।
निर्मितानि भूषणानि तथा घण्टादि सज्जनाः । २३ ।

गज-रथ, अश्व-रथ, शिविकादिकों में रत्नों की स्वर्णमयी जालियाँ बनी हैं। विविध प्रकार के भूषण तथा घन्टादिक सजे हैं ॥२३॥

Scanned by CamScanner

भिन्नभिन्नानि सर्वेषा मेषां सद्मानि तत्र च।
प्रथमावरणे त्वेवं राजपुत्रस्य सद्मनः ॥२४॥

इन सबके भी महल अलग २ राजपुत्र श्री लक्ष्मण जी के महल के प्रथमावरण में ही हैं ॥ २४ ॥

लक्ष्मणस्याति विस्तारे पताकाध्वज संकुले।
भूषिताँगै रक्षकैश्च सम्बाधेऽसंख्य वैभवाः ॥२५॥

ये सब महल भूषित अङ्ग वाले द्वारपालों की भीड़ से सुरक्षित ध्वजा पताकादि सघन सजावट असंख्य वैभव से अति विस्तार से शोभित हैं ॥२५॥

द्वितीये सद्मनस्तस्य प्राकारेत्युच्च भित्तिके।
वनानि प्रमदानाश्च संकुलानि लताद्रुमैः ॥२६।

उस महल के दूसरे आवरण में अत्यन्त ऊँची भीति वाले परकोटा, प्रमदाओं के बन, लता वृक्षों के कुञ्जादिकों की सघनता छाई हुई है॥२६॥

सर्वर्तु फल पुष्पाढ्यौ र्प्रफुल्लैर्बहु गुल्मकैः।
खचिद्रत्नालवालैश्च शोभितानि समन्ततः ।२७॥

सब ऋतुओं में पुष्प फलों से लदे नयी उम्र के वृक्ष रत्न खचित थाला वाले दशों दिशाओं से शोभित हैं ॥२७॥

तड़ाग वापिका कूपा मणिबद्ध तटा मुखाः।
मनिपानाश्च राजन्ते रुक्मार्चा गणमण्डिताः ॥२८॥

तालाब, बावड़ी, कुआँ सब मणिमय किनाराघाट बँधे हूए मुख वाले हैं कुओं के किनारे पानी के हौदा भी स्वर्ण रचित मणि चित्रित हैं ॥२८॥

वापिकाश्च जलं चित्र गृहास्तत्र मनोहराः।
तटेषु च काशाराणां गृहामध्येपि चित्रकाः ॥२९॥

बावड़ियों के भीतर चित्रित मनोहर महल तथा इसी प्रकार तालाबों के किनारे वाले महल और कहीं जल के भीतर वाले महल ये भीं सब चित्र विचित्र हैं ॥२९॥

तड़ाग वापिका तीरे नीरेपि जल कुक्कुटाः।
कादम्बा राजहंशाश्च क्रीडन्ति च नदन्ति च ।३०।

तालाबों में बावड़ियों में किनारों पर जल के बीच जल कुक्कुट, कलहंस, राजहंस, चकवा, चकवी आदिक खेलते हैं, बोलते हैं; चलते हैं ॥३०॥

गायन्ति कोकिला कापि नृत्यन्ति शिखिनःक्वचित्।
पठन्ति मिलिताः क्वापि कीराः नीलारूणादयः॥३१॥

कहीं पर कोकिला गा रहीं हैं; मयूर नृत्य कर रहे हैं; अरूण नीलादि रङ्ग भेद से तोता मैना-दिक मिलकर पढ़ रहे हैं ॥३१॥

Scanned by CamScanner

बृहद्द्रुमाणां सर्वेषां लशत्काञ्चन वेदिकाः ।
रसाल वकुलादीनां सुवर्ण स्कन्ध शोभिताम् ॥३२॥

बगीचाओं के किनारे २ वड़े २ वृक्षों के नीचे स्वर्ण की वेदिकाएें शोभित हैं। आम, मौलसिरी आदिक वड़े वृक्षों की डालें स्वर्ण मयी चमक से शोभित हैं ॥३२॥

कृत्तिमा वेदिकानान्तु प्रान्ते तासां मयूरकाः ।
हंशाः सुकाश्च शोभन्ते मणिभिवहुवर्णकैः ॥३३॥

वेदिकाओं के किनारों पर कृत्रिम मयूर नृत्य कर रहे हैं। हंस शुक शोभित हो रहे हैं वेदियाँ वहु रङ्ग की मणियों से बनी हुई सुन्दर शोभित हैं ॥३३॥

रन्तुं स्थातुं तु नारीणां विशालाश्च वितर्दयः।
लतानामन्तरे सन्ति चित्राचारू विचित्रकैः ॥३४॥

उन विशाल वेदिओं पर स्त्रियों के वैठने और रमण करने के लिये लताओं के वितान तने हैं जिनमें श्रेष्ठ चित्र विचित्र चित्रकारियाँ की हुई हैं ॥३४॥

जल जन्त्रान्तराद्यापि काश्चिद्वाद्यन्तरा अपि ।
कृत्तिमा स्त्रीगणां स्तत्र शोभन्ते दण्डहस्तकाः॥३५॥

जहाँ तहाँ जल के जंत्र फुआराऐं छोड़ते हुए किन्हीं वेदिओं को ढांके हुए हैं। वेदिओं में से संगीत की आवाज आ रही है कृत्रिम स्त्रियाऐं नृत्य करती हुई तथा कोई हाथ में डन्डा ली हुई पहरा करती हुई शोभित हैं।।३५।

अजस्रं तत्र क्रीडन्त्यः संजितैश्च स्त्रियो वराः।
तथामृदङ्ग स्वानङ्कैः पूरयन्ति दिशोदशः ॥३६।

एक रस उन वेदिओं पर खेलती हुई मृदङ्गादि वाजाओं को वजातीं हुईं दशों दिशाओं को आवाज से भर रही हैं ॥३६॥

इति श्रीशङ्करकृते श्रीअमररामायणे श्रीसीताराम
रत्नमञ्जूषायां श्रीलक्ष्मणभवन वर्णनो
नाम विंशतितमः सर्गः ॥२०॥

इति श्रीमधुकर रूप रसास्वादिना कृता टीकायां श्रीलक्ष्मण भवन
वर्णनों नाम विंशतितमः सर्गः ॥२०॥

अथास्य सन्ति प्राकारे सप्तम स्तृतिये गृहा ।
वस्तूनां हिविभागेन मणिचित्रैः सुशोभनाः ॥ १ ॥

अव श्रीलक्ष्मण जी के सप्तावरण महल के तीसरे आवरण का वर्णन करती हूँ। जिस महल में जो वस्तु रक्खी है उसी वस्तु के नाम पर वह महल मणिमय चित्र विचित्र शोभित हैं ॥१॥

Scanned by CamScanner

चतुर्विधानां वस्त्राणां वर्णैस्तेष्वपिभेदतः ।
तेषां स्युश्चैकतोदिव्या गृहा स्तोरण भास्वराः ॥२॥

सूती, ऊनी, मकड़ी, कृमि भेद से चार प्रकार के वस्त्रों के पहनने वालों की जाति भेद से अलग अलग महल दिव्य तोरण कलशादिकों से प्रकाशमान हैं॥२॥

तथैकतो भूषणाना मागाराणि सुतोरणैः ।
भूषितानि विराजन्ते स्त्रीपुंसा मपिभेदतः ॥३॥

उसी तरह से भूषणों के भी महल स्त्री पुरुष भेद से ध्वजा पताकादिकों से भूषित हैं ॥३॥

तथैकतो मणीनाञ्च पृथक्सन्ति सुपंक्तितः ।
मुक्तादीनां गृहायत्र मणिस्तम्भैः सुचित्रिताः ॥४॥

उसी तरह से मणियों मुक्तादिकों के भेद से पंक्ति २ के भेद से महल मणिमय चित्रित खम्भा-वलियों से शोभित हैं ॥४॥

सिद्धानांश्चप्यसिद्धानां सर्वेषां ह्यत्र शोभनाः ।
ताम्रादीनाञ्च धातूना मध्यक्ष्याः सम्वसन्तिच ॥
तत्र तत्रैव सर्वेषां निपुणानुचरै र्युताः ।
भूषणांशुकभूषितास्ते सौन्दर्य गुणशालिनः ॥६॥

इसी प्रकार ताम्र आदि धातुओं के सिद्ध असिद्ध भेद से तथा उनके रक्षक अध्यक्षों के महल शोभित हैं। उन २ स्थानों में उन सबके अनुचर बड़े चतुर सुन्दर वस्त्राभूषणों से और सौन्दर्यादिक गुणों से शोभित है ॥६॥

प्राकारेस्य चतुर्थे तु सन्ति सर्वान्नकागृहाः ।
पाकगृहापि तत्रैव वेशवाराभिधापि च ॥७॥

चौथे आवरण में सब महल सिद्ध असिद्ध भेद से अन्न के हैं। रसोई घर, मसाला घर और भोजन घर भी उसी आवरण में हैं ॥७॥

समारथाय च कूर्वन्तिभोजनं द्विविधाश्च ते ।
स्त्रियश्च पुरुषायत्र ब्राह्मणा भिक्षुका अपि ॥८॥

☞ भोजन के महलों में स्त्री पुरुष भेद से, ब्राह्मण भिक्षुकादि भेद से दो दो प्रकार के भोजनों के अलग २ हैं ॥८॥

एवञ्चतुर्थ प्राकारेमणि चित्रित तोरणाः ।
पताक कलशै दिव्या गृहास्तज्जन शंकुलाः ॥९॥

इस प्रकार उस चौथे आवरण के हर एक महल मणियों से चित्रित तोरण, पताका, कलशादिकों से सुसज्जित सज्जन वृन्दों से भरे हुये दिव्य महल हैं ॥९॥

प्राकारे पञ्चमेत्वस्य वितानपटभूषिताः ।
शोभनानि सभार्थाः स्युः गृहा विस्मय कारकाः ॥१०॥

पांचवे आवरण के महलों में वितान गलीचा, परदा आदि सजे हुये अति शोभित हैं। कोई महल सभा के हैं कोई विलास के हैं इस प्रकार सभी महल आश्चर्य चकित कर देने वाले हैं ॥१०॥

एवं षष्टे वधूनांहि सभार्थाः सद्‌गृहा अपि ।
तासां रहस्यार्थ गृहाः प्राकारे सप्तमे तथा ।११॥

इसी प्रकार छठवे आवरण में भी स्त्रियों के सभा महल तथा उनके विलास महल अति शोभित हैं ॥११॥

मञ्जीरध्वनिभिः पूर्णा अङ्गनानां कलस्वरैः ।
वीणा मृदङ्ग सहितैं रजस्रं ते सुधागृहाः ॥१२॥

इसी प्रकार सातवें आवरण में भी स्त्रियों के भूषण-झनकार, कोकिल कण्ठ, वीणा, मृदंगादि बाजाओं से एक रस अमृतमयी कल्लोल मचा है ॥१२॥

इति श्रीशङ्कर कृते श्रीअमररामायणे श्रीसीतारामरत्नमञ्जूषायाम्
श्रीलक्ष्मणभवनवर्णनोनाम एकत्रिंशः सर्गः ॥२१॥

इति श्री मधुकर रूप रसास्वादिना कृत टीकायां लक्ष्मण भवन वर्णनो नाम एकत्रिंशः सर्गः ॥२१॥

भवनात्कौशलेन्द्रस्य भागे सोत्तरपूर्वके ।
वनं शृङ्गारकं नाम सर्वतः शोभनं परम् ॥१॥

महाराज श्री कोसलेन्द्र दशरथ जी के महल के पूर्व उत्तर कोना (ईशान कोंण) में शृङ्गारक नाम का परम शोभित वन है ॥१॥

फल पुष्प पलाशाढ्यैः द्रुमैः सर्वर्तु रम्यकम् ।
लतानां सुप्रतानैस्त स्कृतं कुञ्ज मनोहरम् ॥२॥

जिसमें फल पुष्पों से लदे पलासादिक वृक्ष सब ऋतुओं में रमणीय शोभा देते हैं जहां तहां लताओं के वितान और कुञ्ज भी शोभित हैं ॥२॥

नानावर्णैः पुष्प गुल्मैश्चतु दिक्षु विराजितम् ।
भ्रमद् भ्रमरिकाभिस्तन्मधुरस्वर गुञ्जितम् ॥३॥

नाना रङ्ग के फूले हुये छोटे छोटे वृक्ष चारों दिशाओं में शोभित हैं। मधुर स्वर से गुञ्जित भ्रमरिकाओं के झुण्ड चारों तरफ घूम रही हैं॥३॥

मयूरीभिर्मयूरै स्तन्नृत्यन्निव कलागणैः ।
पिकस्वनैं र्गीयमानं मुनीनांहि मनोहरम् ॥४॥

जहां तहां मयूरियों के साथ मयूर नृत्य की कला से खड़े हैं। कोकिलाओं का कल्लोल मचा है। गाने वालियों के गाने से मुनियों का मन मोहित हो रहा है ॥४॥

Scanned by CamScanner

पठद्भिस्तु शुकैः किन्त दुद्गृणान्निव वैदिकम् ।
खेलद्भि मृग यूथैस्तु क्रीडमानं शुभायने ।५॥

सुग्गावों के झुण्ड पढ़ रहे हैं मानो वेदों को उगल रहे हैं। मृगियों के झुण्ड सुन्दर स्थानों में विलास कर रहे हैं ॥५॥

वहुशोन्ये पक्षिगणाः फलानिमधुराणिच ।
अदन्तो हि नदन्तस्ते निवसन्ति सुखंवनम् ॥६॥

और बहुत से पक्षी मधुर स्वादिष्ट फलों को खाते हुए सुखपूर्वक वन में निवास करके वन में कोलाहल मचाये हुये हैं ॥६॥

वाताः सुगन्धमादाय पुष्पाणा मति शीतलाः ।
प्रसरन्ति बने तस्मिन्मन्दं मन्दतरं सदा ॥७॥

वायु पुष्पों की सुगन्ध को लेकर के उस बन में शीतल होकर सब दिन मन्द गति से बहता है ॥७॥

तड़ाग वापिका कूपा मणिबद्धतटा मुखाः ।
शोभमाना तटा गारै हंश सारस क्रीडनैः ॥८॥

तालाब बावड़ी, कूपों के किनारे सब मणियों से बँधे हैं कहीं २ तालाबों के किनारे महल बने हैं और भीतर सरोवर के तट पर हंस सारस खेल रहे हैं ॥८॥

क्रीडन्तीभिः सुन्दरी भिस्तद्वनं सुविशङ्कटम् ।
अन्तरे दीप्यमानंस्या द्वहि वीरैः सुरचितम् ।९॥

सब प्रकार के संकटों से रहित उस बन में सुन्दरियां (स्त्रियायें) खेलती हैं। इस प्रकार का वह वन भीतर में अत्यन्त प्रकाशमान और बाहर वीरों द्वारा सुरक्षित है ॥९॥

इत्थंभूते वने रम्ये जानकी रमण प्रभोः ।
भ्राजते भवनं रम्य मसंख्योच विशालकम् ॥१०॥

रमणीय बन में श्रीजानकी जी के रमण प्रभु श्रीराम जी का महान प्रकाशमान महल असंख्य योजन ऊँचा महान् विस्तार वाला है ॥१०॥

मणिभि श्चित्रितै स्सप्त प्राकारैश्च परिवृतम् ।
काञ्चनैः कलशैर्दिव्यैः ध्वजै द्वरात्प्रदर्शितम् ॥११॥

मणियों से चित्र विचित्र सात परकोटायें बाहरी भाग में हैं। जो स्वर्ण के कलश ध्वजादिकों द्वारा दूर से दीख पड़ते हैं ॥११॥

तेतु सप्तैव प्रकाराः त्रिकद्वारोच्च गोपुरैः ।
शोभमानाश्चतुर्दिक्षु व्योम जाल गवाक्षकैः ॥१२॥

वे सातों आवरण चारों दिशाओं में तीन २ मुख वाले फाटक ऊँचे गोपुरों से शोभायमान छज्जा, झरोखादि मणि जालियों से अत्यन्त शोभायमान है ॥१२॥

Scanned by CamScanner

प्रथमस्य चतुर्दिक्षु प्राकारस्य महाभटैः ।
रक्षितानि गोपुराणि बहिस्तो द्वितयस्यतु ॥१३॥

उस कनकभवन के बाहरी वाले प्रथम आवरण का वर्णन करते हैं जिसके फाटक की बाहर से दोनों तरफ वीर लोग रक्षा कर रहे हैं ॥१३॥

ततोऽभ्यन्तरतस्सर्वं सौविदल्लैर्विभूषितैः ।
दासीभिरूपशीलाभिः पुम्वेषाभि स्सुरक्षितम् ।१४॥

और भीतरी तरफ से हाथ में छड़ी लिए हुए पहरेदार सुन्दर वस्त्राभूषणों से भूषित रूप गुण शीलादि सम्पन्न दासियां पुरुष भेष में रक्षा कर रही हैं ॥१४॥

प्रसस्ताः कोटिशः सन्ति हयेभा रक्षिताः शतैः ।
जनैर्योग करैस्तेषां भूषिता रत्न भूषणैः ॥१५॥

तथा हाथी घोड़ा और उनके रक्षा करने वाले प्रशंसनीय सैकड़ों करोड़ रक्षक निवास करते हैं। उनके सहायक वस्त्राभूषणों से भूषित और भी बहुत हैं ॥१५॥

पंक्तितः प्रथमे तेषां गृहा प्राकार लग्नकाः ।
पाठकानां तथा तेषां पालकानां गृहाअपि ॥१६॥

इन सबके रहने के लिए प्रथम आवरण में परकोटा से लगे हुए पंक्ति के पंक्ति महल हैं और उन हाथी घोड़ाओं के पढ़ाने वाले, पालने वालों के भी महल उसी में हैं ॥१६॥

स्यन्दनाः राजताः केचित्काञ्चनाः खचिताबहु ।
डयनानि बिमानानि नानाकाराणि भास्वरैः ॥१७॥

तथा उसी आवरण में उन हाथी घोड़ाओं के जो रथ हैं वे कोई चांदी के हैं, कोई सोना के हैं, कोई बहुत प्रकार के मणियों से खचे हैं। इसी प्रकार शिविका, बिमानादि भी नाना आकार प्रकार के प्रकाशमान हैं ॥१७॥

मणिभिः खचितान्येषां गृहाः प्राकारकेत्र च ।
अध्यक्ष्याणां तथा तेषां गृहाः सन्ति सुतोरणाः ॥१८॥

इन सबके रखने के महल भी इसी आवरण में इनके अध्यक्षों के रहने के घरों सहित हैं ॥१८॥

आपणा विपणा श्चात्र देशीयाश्चादिगन्तकाः ।
पृथक् पृथक् च सर्वेषां वस्तूना मट्ट हट्टका ॥१९॥

और इसी आवरण में देश देशान्तरों के व्यापारियों के बाजार भी हैं। प्रत्येक वस्तुओं के अलग २ हाट व अलग २ महल हैं ॥१९॥

विभागेन च सर्वेते संघता वस्तु हट्टकाः ।
विक्रेत्रीणां कारकाणां कला वस्तु विशेषिणाम् ॥२०॥

सभी वस्तुओं के हाट सुन्दर सघनता पूवक अलग २ हैं उन्हीं हाटों में उन वस्तुओं के बेचने वाले और पैदा करने वालों के भी उद्योग केन्द्र तथा निवास स्थान भी हैं ॥२०॥

Scanned by CamScanner

सञ्चनः प्रथमे त्वेवं महाज्योति र्वृ त्तस्यहि ।
प्राकारे रामभद्रस्य वृत्तं ज्ञेयं समृद्धिकम् ॥२१॥

महान् प्रकाश मण्डल से घिरा हुआ श्रीरामजी के महल का यह प्रथमावरण सब प्रकार के महान् ऐश्वर्य से परिपूर्ण है ऐसा जानना चाहिये ॥२१॥

अथास्य द्वितयेसन्ति प्राकारेति विशङ्कटे ।
शञ्चनः रामचन्द्रस्य विविधाः पुष्पवाटिकाः ॥२२।

अब इसके बाद कनक भवन के दूसरे आवरण का सब प्रकार के संकटों से रहित विविध प्रकार की पुष्प-बाटिकाओं से संयुक्त श्रीरामचन्द्र जी के महलों को जानना चाहिये ॥२२॥

प्राकार लग्नकाः सन्ति तथाचोभयतो दिशम् ।
गृहावल्य स्तोरणादि भूपिताः कलशध्वजाः ॥२३॥

आवरण के दोनों भाग वाले परकोटाओं में सटे हुये महलों की पंक्ति तोरण, ध्वजा, कलशादिकों से भूषित हैं ॥२३॥

मध्ये मध्येगृहावल्यो द्रुमाः खर्व प्रकाण्डकाः।
तैर्घनं बिपिनं रम्यं नानामिष्ट फलान्वितम् ॥२४॥

बीच वाले बगीचाओं में भी चारों तरफ बृक्षों की पंक्तियां फल पत्र पुष्पों से भरी शोभित हैं मध्य बागों में भी महलों की पंक्तियां हैं। इस प्रकार के बृक्ष और महलों से सघन बन नाना प्रकार के मीठे फल पुष्पों से अत्यन्त रमणीय हैं ॥२४॥

नालकेरि वनं द्राक्षा वनञ्चैव रसालकम् ।
कदलीवन मेवश्च नाम्ना बहुवनान्यपि ॥२५॥

किसी बन का नाम नालकेरि बन है, किसी का द्राक्षा बन, किसी का रसाल वन, किसी का कदली वन, इस प्रकार बहुत बनों के वस्तु भेद से नाना नाम हैं ॥२५॥

मध्ये तेषां वनानान्तु कूप वापी सरांसि च ।
विशाला वेदिकारम्या मणिभिः कृत चित्रकाः ॥२६॥

उन वनों के बीच २ कुआं बावड़ी, सरोबर, बड़ी २ रमणीय वेदियां, मणिमय कृत्रिम यन्त्र के चित्र हैं ॥२६॥

प्रल्फुल्ल पुष्प गुल्माना मालवालैश्च सङ्गताः ।
कुत्रचि त्कुञ्जगा वेदी सरसां मध्यशोभनाः ॥२७॥

खिले हुए नाना रङ्ग के फूलों के छोटे २ बृक्ष तथा उनके थाला पंक्ति के पंक्ति सुन्दर संगति से शोभित हैं। कहीं २ कुञ्जों के भीतर वेदी, कहीं २ सरोवरों के भीतर कुञ्ज शोभित हैं ॥२७॥

द्विजाश्च बहुवर्णाहि हंशाः पिक मयूरकाः ।
शुकाश्चसारसाः क्रौञ्चा श्चक्रवाक चकोरकाः ॥२८॥

हंस, कोकिला, मोर, सुक, सारस, क्रौंच, चकवा, चकवी, चकोर आदि बहुत जाति के पक्षी रङ्ग रङ्ग के शोभित हैं ॥२८॥

Scanned by CamScanner

तेतु युग्मैश्च युग्मैश्च क्रीडन्ति यत्र तत्र च ।
खादन्ति फल मिष्टानि स्वनन्ति मधुर स्वनम् ॥२६॥

वे सब पक्षी दो दो करके जहां तहां खेलते, स्वादिष्ट मीठे फल खाते हुये मधुर स्वर से बोल रहे हैं ॥२६॥

कञ्ज कोप गताः केचित्केचित्पुष्प लतास्थिताः ।
सर्वत्र परिगुञ्जन्ति कृतपानमधुव्रताः ॥३०॥

इसी प्रकार भ्रमर कोई कमल कोष में बैठे, कोई पुष्प लताओं में बैठे मधु पान करके सर्वत्र गूंज रहे है ॥३०॥

कुत्र चित्कृतयूथाश्च मृगिभिस्सहिता मृगाः ।
बहुवर्णाः स्वर्णशृङ्गाः कण्ठपाद विभूषिताः ॥३१॥

कहीं पर झुण्ड के झुण्ड मृगियों के सहित बहुत रङ्ग के बहुत जाति के मृग स्वर्ण के सींग मढ़े हुए, कण्ठ पाद भूषणों से भूषित हैं ॥३१॥

पूरयन्तो दिशस्तेतु पादकङ्कण झंकृतैः ।
कुर्दन्ति च प्रधावन्तः कान्ताभिश्च पलायिताः॥ ३२॥

वे मृगा मृगियों के झुण्ड कूदते हुये अपने चरणों के नूपुर किंकिणी झनकार से दशों दिशाओं को गुन्जित करते हुए स्त्रियों के द्वारा भगाये जाने पर कूद कर दौड़ते हैं ॥३२॥

गृहाश्च मणिवद्धानां वापीनां मध्यमण्डिताः ।
प्रतिध्वानैस्तु तत्रोत्थै र्नारीणां गान वाद्यतः ॥३३॥

उन वनों में बावड़ियों के अन्दर मणिमय महल शोभित हैं उन महलों में स्त्रियों के गाने बजाने की आवाज बावड़ियों से बाहर आकर दिशाओं में प्रतिध्वनित हो रही हैं ॥३३॥

घन शब्द भ्रमापन्नाः केकिनो तत्र तत्रच ।
नृत्यन्ति शब्दयन्तस्ते विदधुः कौतुकं परम् ॥३४॥

मोर इस शब्द को सुन कर मेघ गर्जन के भ्रम से जहां तहाँ बोलते हुये नृत्य करने लगते हैं इस प्रकार वे बावड़ियां महान कौतुक का विस्तार कर रही हैं ॥३४॥

तड़ाग तटगेहानि मणिभिर्निर्मितानि च।
उच्चद्धोम गवाक्षैश्च कलशैः शोभितानि च ॥३५॥

कहीं पर तालाबों के किनारे २ जो मणिमय महल हैं उनकी ऊँची अटारी, छज्जा, झरोंखा, ऊँचे कलश शोभित हैं ॥३५॥

क्रीडन्तीनां हि रामस्य रमणीनां सुगायनैः ।
सुस्वरैः पूरिताः सर्वे गृहा वाद्यप्रघोषकैः ॥३६॥

उन महल और सरोवरों में श्रीरामजी की रमणीगण सुन्दर स्वर से गान करके अपने वाद्यादि संगीत घोष से दशों दिशाओं को भर रही हैं ॥३६॥

Scanned by CamScanner

अजस्रं रमते तत्र सुन्दरीणां गणे गणे ।
रामोपि वनिताशक्तः श्रीमान्सुन्दर विग्रहः ॥३७॥

इस प्रकार की उन स्त्रियों के झुण्डों के साथ सुन्दर विग्रह श्रीमान् राम जी एक रस उन वनिताओं में आसक्त होकर रमण करते हैं ॥३७॥

इति श्रीशङ्कर कृते श्रीअमर रामायणे श्रीसीतारामरत्नमञ्जूषायां श्रीरामजानकीभवने वाटिकागार वापिकावर्णनो नाम द्वाविंशस्सर्गः ॥२२॥

इति श्री मधुकर रूप रसास्वादिना कृता टीकायां श्रीरामजानकी भवने वाटिकागार वापिका वर्णनो नाम द्वाविंशः सर्गः समाप्तः ॥२२॥

शरोभिर्वापिका कूपै र्वाटिका च तयान्वितः ।
क्रीडा वस्त्वभिधा गारैर्युक्तः प्रासाद उच्यते ॥१॥

जिसमें सरोवर हों; वापिका, कूप हों, वाटिकाएं हों, खेलने के अलग २ नाम वाले छोटे-छोटे घर हों, ऐसे इनसे युक्त जो महल हो उसको प्रासाद कहते हैं ॥१॥

चतुर्दिक्ष्वप्युभयतः सन्मुखाश्च परस्परम् ।
श्रेण्यः प्रासादकानान्तु मिलितक्षोम जालकाः ॥२॥

चारों दिशाओं में दोनों तरफ से सन्मुख परस्पर जो सीढ़ियां हों तथा छज्जाएं भं ॥२॥

एवं प्रासाद पंक्ति स्यात्पंक्तीनां लक्ष्य कोटिभिः
प्रासाद मण्डलञ्चैकं कलशध्वज मण्डितम् ॥३॥

सुन्दर जाली युक्त हों इस प्रकार के प्रासादों की लाइन हो उसे प्रासाद पंक्ति कहते हैं, इस प्रकार की प्रासादों की पंक्तियां लाख करोड़ हों तो उसको एक प्रासाद मण्डल कहा जाता है जो कि ध्वजा कलशादि से मण्डित हो ॥३॥

मण्डलानां परार्द्धं तु प्रासादखण्ड मुच्यते ।
तयोः खण्डान्तर मण्डलान्तरं त्वर्ध्वकेन वै ॥४॥

एक परार्द्ध मण्डलों को प्रासाद खण्ड कहा जाता है। खण्डान्तर और मण्डलान्तर इन दोनों के मेल को अर्द्धक कहा जाता है ॥४॥

मध्य स्थान पञ्च कुम्भं चतुर्द्वारं वशु गृहम् ।
प्राकार मिलितागारै र्वृत्तं द्वार चतुष्टयम् ॥५॥

अर्द्धक के बीच स्थान को पंच कुम्भ कहा जाता है जिसमें चार द्वार आठ महल होते हैं। परकोटाओं से मिले हुये जो महल होते हैं उनके मण्डल में चारों दिशा द्वार हों ॥५॥

एवं विधस्तु प्रासादो मण्डपोसौ प्रकीर्तितः ।
अगृहो यदि प्राकार स्तदा स्यादर्द्ध मण्डपम् ।६॥

इस विधि से जो प्रासाद हो उसको "मण्डप" कहते हैं। यदि परकोटा बिना महल के केवल गोल चार फाटक वाला हो तो उसे "अर्द्ध मण्डप" कहते हैं ॥६॥

Scanned by CamScanner

चतुर्दिक्षुश्चतुष्कद्वयं गोपुरोच्च प्रकोष्टकैः।
संयुतं मण्डपं यत्तु शभागृह मितीर्यते ॥७॥

चारों दिशाओं के बगलों में ऊँचे गोपुर लम्बो प्रकोष्ठ वाले हों इनसे युक्त जो मण्डप हो उसको सभा गृह कहते हैं ॥७॥

स्यात्प्राकारश्चतुर्द्वार स्तद्बहिः प्रतिद्वारकम् ।
द्वे द्वे कक्षेतिहा वृत्या चतुर्दिक्ष्वपि स्वङ्गणम् ॥८॥

चार दरवाजे वाला परकोटा हो उसके बाहर में फिर और द्वार हों । इनके बीच तीन आवरण दो २ कक्ष (अन्तराल) हों और चारों दिशाओं में आंगन हों ॥८॥

चतुरस्त्रं वाशगृह पृष्टगृहं द्विकोष्टकम् ।
पक्ष गृहेपि द्वे तत्र द्वि सञ्चश्च प्रशालकम् ॥९॥

चार आवरण रहने के महल हों; दोनों बगलों में पृष्ठ (पीठ) घर हों और उनके दोनों बगलों में सहायक घर भी हों इस प्रकार के जो दो संचय हों उसको "प्रसालक" कहते हैं ॥९॥

तस्याग्रे चन्द्रकक्षयास्याचतो धस्त्वङ्गणम्भवेत् ।
आलिन्दापि चतुर्दिक्षु पृष्ट गेहाग्रवाटिकाः ॥१०॥

उसके आगे एक आवरण हों; उसके नीचे के भाग आंगन हो; चारों दिशाओं में खम्भे भी हों; उसके पीठ वाले घरों के आगे वाटिका भी हो १०॥

उपरिष्ठा द्वाश गृहं द्विकोष्ठम्वात्रिकोष्ठकम् ।
भवेत्किम्वा सप्तकोष्ठमेवं स्यात्स्वस्तिकाख्यकम्॥११।

उसके ऊपर भाग में निवास का घर हो, वह चाहे दो कोठा वाला हो, चाहे तीन कोठा वाला हो अथवा सात कोठा वाला क्यों न हो इस प्रकार के महल को स्वस्तिक नाम से कहते हैं ॥११॥

स्थात्तदेव प्रतिदिशं प्राकारे चाष्ट द्वारकम् ।
नाम्नाहि सर्वतो भद्रं गर्भागारेष्ट कुम्भकम् ॥१२॥

इसी प्रकार के स्वस्तिक महल प्रत्येक दिशाओं में आठ द्वार वाले हों तो उसको "सर्वतोभद्र" नाम से कहते हैं। इसके गर्भ वाले महल में भी आठ कलस होते हैं ॥१२॥

स्यात्सर्वन्तूक्त विधिना प्रकारे चैकद्वार वत् ।
विच्छन्दकं गृहं नाम्ना विहितं विश्वकर्मणा ॥१३॥

पूर्व विधिओं से कहे हुये सब एक परकोटा के अन्दर एक सदृश द्वार वाले जो महल हों उनको विश्व-कर्मा ने विच्छंदक नाम से कहा है ॥१३॥

प्राकारस्तुत्रिभियु क्तं पूर्वमुत्तर पश्चिमम् ।
क्रमेणेव च द्वाराणि नद्या वर्त्तन्तु तद्गृहम् ॥१४॥

यही यदि पूर्व उत्तर पश्चिम क्रमशः तीन पर कोटाओं से युक्त हो और इसी क्रम से उसके द्वार भी हों तो उसकों नद्यावर्त गृह कहा जाता है ॥१४॥

Scanned by CamScanner

वतुर्लैसप्त प्राकारैर्युक्तं गर्भं गृहं भवेत् ।
सप्तकक्षं चतुर्दिक्षु नागकुण्डलकंहि तत् ॥१५॥

गोलाकार सात प्राकार हों, भीतर सात आवरण चारों दिशा गर्भ गृह भी हों तो उसको नाग कुण्डली भवन कहते हैं ॥१५॥

सप्तष्वावरणेष्वेवं गृहा रत्नैक निर्मिताः ।
पत्नीनां रामचन्द्रस्य ह्यशंख्यानामशंख्यकाः ।१६॥

इस प्रकार सातों आवरणों में रत्नों से निर्मित महल में जिनमें श्रीरामचन्द्र जी की असंख्य संख्यायें स्त्रियाँ यें (पत्नियां) रहती हैं ॥१६॥

सन्त्येवं पट्टकान्ताया जानक्या रत्ननिर्मिताः ।
तासामभ्यन्तरा रत्नै श्चित्रिता बहु वर्णकैः ॥१७॥

इस प्रकार महापट्ट कान्ता श्री जानकी जी के रत्न निर्मित महान अन्तर वाले चित्र विचित्र बहुत रंग के ॥१७॥

ऋतुचिता गृहाः केचित्केचि त्तद्रूप कल्पकाः ।
निशा प्रदर्शकाः केचि त्केचिदिन प्रदर्शकाः ॥१८॥

ऋतु के अनुकूल और कोई ऋतु के अनुरूप महलों का वर्णन किया । ये महल कोई २ दिनमें रात को दिखाने वाले कोई रात में दिन को दिखाने वाले हैं ॥१८॥

क्रमेणैव शृणिवदानि सीताया वाश मन्दिरम् ।
तथा तस्याः सखीनाञ्च मुख्यानाञ्च यथोचितम् ॥१६॥

अब श्री जानकी जी के निवास मन्दिर का भी क्रमशः वर्णन करती हूँ सुनो । और उसीप्रकार श्री जानकी जी की मुख्य सखियों के महलों का भी यथोचित वर्णन करके सुनाती हूँ ॥१६॥

चारुशीला लक्ष्मणाच पद्मगन्धा सुलोचना ।
वरारोहापि च्येमाच हेमापि शुभगा च ताः ॥२०॥

प्रधान सखी श्री चारुचीला, लक्ष्मणा, पद्मगन्धा, सुलोचना, वरारोहा, चेमा, हेमा, सुभगा ये आठ हैं ॥२०॥

सर्वासाम्प्रेरकाः विद्धि ह्येताः रामस्य सीतया ।
स्थापिताराज कन्यानां पत्नीनां रूप विग्रहाः ॥२१॥

हे सुकान्ति ? श्रीसीतारामजी की समस्त सखियों में मुख्य ये आठ सबकी प्रेरणा करने वाली हैं ऐसा तुम समझो । समस्त राजकन्या श्रीराम जी की पत्नियोंमें प्रधानरूप और श्रीविग्रह वाली हैं।२१।

नित्याश्च नित्य मुक्ताश्च सिद्धान्शाः साध्यसम्भवाः ।
इति भेदद्वयं राम पत्नीषु राजकन्यके ॥२२॥

हे राजकन्यके ? श्री राम जी की पत्नियों में नित्य पार्षद नित्य मुक्त पार्षद ये दो भेद वाले सिद्धाङ्ग और साध्य सम्भव दो रूप से प्राप्त हुये हैं ॥२२।

Scanned by CamScanner

चतुष्षष्टि कलाभिज्ञा विद्याश्चैव चतुर्दश ।
प्रवीणाः तासु सर्वास्ताः श्रीजानक्या प्रसादतः ॥२३॥

ये सब के सब चौसठ कलाओं के जानने वाली, चौदह विद्याओं को जानने वाली श्री जानकी जी के प्रसाद से सब महा चतुरी हैं ॥२३॥

सख्यश्चतुषष्टिका स्तु मुख्यास्तासांतु त्रिंशतिः ।
द्वेच तासां षोडशापि ह्यष्टौ तापांप्रकीर्तिताः ॥२४॥

अनन्त सखियों में से चौसठ यूथेश्वरी मुख्य हैं । उन चौसठमें भी ३२ यूथेश्वरी मुख्य हैं । उन बत्तीस में भी सोलह और सोलहो में भी ये श्रीचारुशीलादिक आठ मुख्य हैं ॥२४॥

परितो वेस्मन स्त्वाषां सद्मा न्युच्चतराणिच ।
श्रीजानक्या श्चतुर्वृत्या शोभन्ते कलशादिभिः ॥२५॥

श्री कनक भवन में एक आवरण के चारों तरफ इन आठ प्रधान सखियों के अति उच्चतर महल हैं जो श्री जानकी जी के महल के चारों तरफ ध्वजा, पताका, कलशादिकों से सुन्दर शोभितहैं॥२५॥

चतुष्षष्ठि मुख्यास्तासा मावाशामण्डलान्तरैः ।
द्वेचत्रिंशत्युनस्तासांप्रत्येक मण्डलेन च ॥२६॥

चौंसठ जो मुख्य सखी हैं उनके महलों का मण्डल मण्डल करके अलग २ अन्तर पूर्वक एक आवरण और इसी प्रकार फिर ३२ यूथेश्वरियों का दूसरा आवरण है ॥२६॥

खण्डान्तरेण प्रत्येकं षोडसानांप्रकीर्तिताः ।
अष्टौ तासां तु प्रासाद खण्डेन वसतीः शुभाः ॥२७॥

और इसी तरह से १६ यूथेश्वरियों का खण्डान्तर भेद से तीसरे आवरण में १६ महल कहे गये हैं और उनके बाद आठ जो मुख्य (प्रधान) सखी कही गयी हैं उनके महल भी खण्ड भेद से चौथे आवरण में कहे गये हैं जिनमें ॥२७॥

मन्दिर श्चारुशीलायाः स्वस्तिकाख्यं रहस्यकं ।
विशालश्च क्रमोचश्च रत्न तोरण भूषितम् ॥२८॥

श्री चारुशीला जी का महल महान् रहस्य वाला स्वस्तिक भवन नाम से कहा जाता है जो क्रमशः अति विशाल रत्न, तोरण कलशादिकों से भूषित है ॥२८॥

वितान विस्तरै रंर्न्यंबहु वर्णांशुकावृतम् ।
वहुरत्नै निर्मिताभिः स्तम्भश्रेणि भिरन्तरे ॥२९॥

उस स्वस्तिक भवन में प्रत्येक खण्डों के अन्दर सुन्दर वितान, बिछावन, परदादिक, वस्त्र बड़े ही रमणीय रङ्ग २ के जरी के बने हैं । भीतर में महान रत्नों से खचित खम्भों की पंक्तियां हैं ॥२९॥

महाप्रकाश संशोभं निशा तिमिर हारकम् ।
विधान जाल गुम्फैश्च मनो नेत्र हरं परम् ॥३०॥

जो महाप्रकाश से अति शोभित रात्रियों में भी अन्धकार को दूर करने वालीं, रत्न जालों सुन्दर विधान पूर्वक गुम्फित, मन और नेत्रों के हरने वाले परम सुन्दर हैं ॥३०॥

Scanned by CamScanner

गवाक्ष गोपुरै र्दीप्तं रत्न जालैश्चकासितम् ।
पताकाभिर्ध्वजै रुच्चैस्स्वर्ण कुम्भैश्च मण्डितम् ॥३१॥

ऊंचे २ गोपुर छज्जे झरोखे रत्नों की जालियों से प्रकाशमान, ऊँचे ध्वजा, पताका, स्वर्ण कलशादिकों से शोभित हैं ॥३१॥

शभा गारं विशालञ्च मुक्तादामविभूषितम् ।
स्वर्ण सूत्राञ्चितै र्वस्त्रैर्वितानैर्परि शोभितम् ॥३२॥

उस वास्तविक भवन में जो सभा महल है वह अति विशाल मुक्ताओं की लरो से और स्वर्ण सूत्र-जालियों से भूषित है तथा वितान, बिछावन, परदे आदिक जरी के वस्त्रों से अति शोभित है ॥३२॥

नाना रत्नै र्निर्मितैश्च स्तम्भश्रेणि विभासितम् ।
मुक्तागुम्फै स्तोरणैश्च रत्न जालैश्चकाशितम् ॥३३॥

और नाना रत्नों से निर्मित खम्भों की पंक्तियां प्रकाशमान हो रही हैं। मुक्ता हैं गुम्फित जिनमें ऐसे रत्नों के तोरण तथा रत्नों की जालियां प्रकाशमान हो रही हैं ॥३३॥

भूषासना भूषणादि संज्ञया वहुशो गृहाः ।
विभागैः शोभामानास्ते विशालाः परमोच्चकाः ॥३४॥

भूषणों के, वस्त्रों के सिंहासनोंके, भोजनके भेद से बहुत से महल सुन्दर विभाग पूर्वक विशाल परम उच्च शोभायमान हो रहे हैं ॥३४॥

अप्यष्टावस्या स्सचिवा गुणपंक्ति गुणालया ।
रूपराजी रूपशीला सौरभाङ्गी वरालका ॥३५॥

ये सर्वेश्वरी श्री चारुशीला जू के आठ मन्त्री हैं उनके नाम-गुणपंक्ति, गुणालया, रूप राजी, रूप शीला, सौरभाङ्गी, वरालका, रङ्गिका रसिका हैं ॥३५॥

रङ्गिका रसिका चे ति मुख्या रूप गुणै रपि ।
प्रासाद पंक्तय स्तासां परिणत्य लशन्ति च ॥३६॥

ये श्रीसर्वेश्वरी जू के ८ मुख्य मन्त्री रूप गुणों में भी मुख्या हैं। इन आठों के महल श्रीसर्वेश्वरी जी के महल के चारों तरफ मण्डलाकार शोभित हैं ॥३६॥

अथाग्वष्टासु मुख्याना मनुगा सुयथाक्रमम् ।
एकै कस्या अपि द्वे द्वे अग्र गे स्तः नृपात्मजे ॥३७॥

अब इन आठ मुख्य मन्त्रियों के अनुग (उपमन्त्री) भी उसी क्रम से एक २ के दो दो हैं जो वे भी अपने अनुयायियों में अग्रगण्या हैं ॥३७॥

उपकार्य्यं विधायिन्य एवं षष्ट्या वधिर्यथा ।
तासां तासां मन्दिराणि स्वस्वामिन्या निवासके ॥३८॥

इस प्रकार यह उपकार्यो का विधान करने वाली श्री सर्वेश्वरी जी के उन आठ प्रधान मन्त्रियों के बाद १६ उपमन्त्री ३२ अनुग उपमन्त्री ६४ सहायक मन्त्रियों के महल भी इसी क्रम से हैं जो अपने २ स्वामिनियों के निवास के सामने सेवा में अनुकूल हो सकती हैं ॥३८॥

Scanned by CamScanner

अष्टौ षोडश द्वात्रिंश चतुष्षष्टयावधिर्यथा।
षोडसाना मपिज्ञेया सर्वाश्च गुण अत्तराः। ३६॥
द्वात्रिंशच्चतथातासांपूर्वानुक्रम भेदतः।
चतुष्षष्टि स्तथातासा मेवम्मुख्यगणाविदुः ॥४०॥

जिस प्रकार श्रीसर्वेश्वरी जी के आठ, सोलह, बत्तीस. चौंसठ इस क्रम से मन्त्री हैं उसी प्रकार सर्वेश्वरी जी के एक २ मन्त्री के आठ, सोलह. बत्तीस, चौंसठ क्रम से मन्त्री हैं। यह क्रम अष्ट प्रधान-मन्त्री. सोलह उप मन्त्री, बत्तीस अनुग मन्त्री. चौंसठ सहायक मन्त्री-इन सबके लिए हैं। इस प्रकार यह मुख्य सखियों का एक २ गण कहा जाता है ॥३६-४०॥

अष्टौषोडश द्वात्रिंश त्प्रत्येकं राजकन्यके।
सर्वा गुणाढ्या रूपाढ्याः श्रीजानक्याः प्रियंकराः ॥४१॥

हे राजकन्यके ! ये श्रीसर्वेश्वरी जू के आठ, सोलह, बत्तीस, चौंसठ के हिसाब से प्रत्येक मन्त्री सबके सब सर्वगुण सम्पन्न हैं, सबके सब रूप की खानि हैं, सबके सब श्रीजानकीजी का प्रिय करने (मुख ताकने) वाली हैं ॥४१॥

अथश्रीमल्लक्ष्मणाया अष्टौविन्दा गुणावली।
सुगन्धा मुदमाला च मोदनी प्राज्ञिका तथा ॥४२॥

इसी प्रकार श्रीलक्ष्मणाजी के भी आठ प्रधान मन्त्री हैं उनके नाम-विन्दा, गुणावली, सुगन्धा, मुदमाला, मोदनी, प्राज्ञिका ॥४२॥

अरविन्दा सांवरी च गुण रूप मनोहराः।
तथा च पद्मगन्धायाः वेद युग्म मिता विदुः ॥४३॥

अरबिन्दा, साँवरी है। ये आठ गुण और रूप में भी मन को हरने वाली हैं। इसी प्रकार भी किशोरी जी की मुख्य सखी श्री पद्मगन्धा जी की आठ मन्त्री हैं ॥४३॥

राजीवा राजहंसी च नीलाक्षी काञ्चिका तथा।
वीणावती रागमाला चन्द्रभा जिष्णुका किल ॥४४॥

उनके नाम राजीवा, राजहंसी, नीलाक्षी, काञ्चिका. वीणावती, रागमाला, चन्द्रभा, जिष्णुका है ॥४४॥

अथ सुलोचनायास्तु प्रज्ञा मेधा च माधवी।
सुशायिका शान्तिका च सुघोषा सन्धिवासिनी ॥४५॥

इसी प्रकार श्रीजानकी जी की मुख्य सखी श्रीसुलोचना जी के भी आठ मन्त्री हैं उनके नाम—प्रज्ञा, मेधा, माधवी, सुसायिका, शान्तिका, सुघोषा, सन्धिवासिनी ॥४५॥

सुभाला चाष्ट संख्याता श्चैताः सर्वगुणाधिकाः।
रूप यौवन शालिन्यो जानक्याः प्रिय वाञ्छिकाः ॥४६॥

सुभाला हैं। ये आठों सब प्रकार से रूप और गुणों में बढ़ी चढ़ी हैं। रूप और यौवन वाली श्रीजानकी जी का प्रिय (हित) चाहने वाली हैं ॥४६॥

Scanned by CamScanner

अथास्यु वॅरारोहायाः प्रेमा प्राज्ञीचधीमती ।
मध्या सेवा प्रभा प्राचीरेवे त्यष्टौ गुणायताः ॥४७॥

इसी प्रकार श्रीजानकी जी की प्रधान सखी श्रीवरारोहा जी के आठ मन्त्री हैं उनके नाम–प्रेमा, प्राज्ञी, धीमती, मध्या, सेवा, प्रभा, प्राची, रेवा है। ये आठों सद्गुणों की खानि हैं ॥४७॥

श्रीक्षेमाया श्तथा चाष्टौ श्यामा सौभा शुभा जया।
विज्ञा चीरा चन्द्रिका च नेमी त्यष्टौ प्रवीणकाः ॥४८॥

इसी प्रकार श्रीजानकी जी की मुख्य सखी श्रीक्षेमा जी के भी आठ मन्त्री हैं। उनके नाम—श्यामा. सौभा, शुभा, जया, विज्ञा, चीरा, चन्द्रिका, नेमी है। ये आठों अति चतुरी हैं ॥४८॥

अञ्चिताची काञ्चनी च चन्द्रभा नवली स्वना।
मोदायता स्वम्बका च सुधायेत्यष्ट संख्यकाः ॥४९॥
श्रीहेमायाश्च लावण्या प्रीणा प्राशी गुणा सुधा।
कान्ती शान्ती प्रमे त्याधाः शुभगायासमन्ततः ॥५०॥

इसी प्रकार श्रीजानकी जी की मुख्य सखी श्रीहेमाजी के आठ मन्त्री हैं उनके नाम–अञ्चिताची, काञ्चनी, चन्द्रभा, नवली, स्वना, मोदायता, सम्बका, सुधाया है। इसी प्रकार श्रीजानकी जी की मुख्य सखी श्रीसुभगा जी के आठ मन्त्री हैं उनके नाम–लावण्या, प्रीणा, प्रासी, गुणा, सुधा, कान्ति, शान्ति प्रमा–है ॥४९–५०॥

चतुरावर्णके स्वासां मन्दिराणि समन्ततः।
अन्वयेन यथायोग्यं निवसन्ति महत्तराः ॥५१॥

श्रीकनक भवन में श्रीजानकी जी के महल के अन्दर के बाहरी भाग चौथे आवरण में इन श्रीजानकी जी की प्रधान आठ सखियों के तथा इन प्रधान सखियों के मन्त्रियों के महल आवरण के तरफ क्रमशः यथा योग्य महान् वैभव पूर्ण हैं ॥५१॥

अथ श्रीमल्लक्ष्मणाया नद्यावर्तं सुमन्दिरम् ।
प्राकारैस्त्रिभिरावृत्तं लघ्नागारैः विशालकैः ॥५२॥

जिस प्रकार सर्वेश्वरी श्रीचारुशीला जू का निवास स्थान स्वस्तिक भवन है उसी प्रकार प्रधान सखी श्रीलक्ष्मणा जी का नद्यावर्त मन्दिर है जो तीन परकोटाओं से घिरा है जिनमें सहायक महल बड़े बड़े ऊँचे हैं ॥५२॥

मन्दिरं पद्मगन्धाया राजपुत्रि तथाविधम्।
सुलोचनाया अप्येवं प्राकारैस्त्रिभिरावृतम् ॥५३॥

हे राजपुत्री ! इसी प्रकार प्रधान सखी श्रीपद्मगन्धा जी के महल का नाम भी नद्यावर्त मन्दिर है। इसी प्रकार प्रधान सखी श्रीसुलोचना जी के भी महल का नाम नद्यावर्त मन्दिर है जो तीन परकोटाओं से घिरा है ॥५३॥

Scanned by CamScanner

तथाच वरारोहाया सर्वतोभद्र मन्दिरम् ।
क्षेमाया मन्दिरं दिव्यं नागकुण्डलिकं शुभे ॥५४॥

इसी प्रकार प्रधान सखी श्री वरारोहा जी के महल का नाम सर्वतोभद्र मन्दिर है। हे शुभे इसी प्रकार प्रधान सखी श्रीक्षेमा जी के दिव्य महल का नाम नाग कुण्डली भवन है ॥५४॥

स्वस्तिकाख्यश्च हेमायाः प्राकारैः परिवर्तितम् ।
तथाच शुभगायास्तु विछन्दक विधानकम् ॥५५॥

इसी प्रकार प्रधान सखी श्रीहेमा जी के महल का नाम स्वस्तिक भवन है जो तीन परकोटाओं से घिरा है। इसी प्रकार प्रधान सखी श्रीसुभगा जी के महल का नाम विच्छंदक भवन है ॥५५॥

एव मेवञ्च सर्वासा म्मन्दिराणि समन्ततः ।
पृथक् पृथक् विधानेन जाल माल गवाक्षकैः ॥५६॥

इसी प्रकार सब सोलह, बत्तीस, चौंसठ मुख्य सखियों के भी महल कनक भवन के चौथे, पांचवे छटवे आवरण में चारों तरफ अलग २ छज्जा झरोखा, जाली आदि सजावटों से युक्त हैं ॥५६॥

तेषां द्वारसहस्रेषु प्रतिद्वारेच भूषिताः ।
स्वर्णदण्डधरा सख्य स्तिष्ठन्ति गणसंख्यया ।५७॥

उन सब महलों के हजारों की संख्या में फाटक हैं प्रत्येक फाटक ध्वजा, पताका, तोरण, केतु, कलशादिकों से भूषित गोपुर वाले हैं। प्रत्येक फाटक पर स्वर्ण दण्डों को हाथ में ली हुई गणों के हिसाब से सखियां पहरा करती हैं।५७॥

गणो वसु द्वयेनैव चैकया मुख्ययासह ।
तैरष्टभिस्तु स्याद्यूथो स्वष्टभिस्तैश्च . यःस्मृतः ॥५८॥

सोलह गणों की एक जो मुख्या है उन आठ मुख्याओंका एक यूथ कहा जाता है। इस प्रकार के यूथ की जो प्रधान है उसका नाम यूथेश्वरी है ॥५८॥

अष्टाभिस्तै रुचयस्या द्विचयस्तैस्तु चाष्टभिः ।
निचय स्तैरष्टाभिश्च निवहस्तै स्तथा विधः ॥५९॥

आठ यूथेश्वरियों का एक उच्चय होता है। आठ उच्चयोंका एक विचय होता है। आठ बिचयों का एक निचय होता है। आठ निचयों का एक निवह होता है ॥५९॥

निवहैरष्टभिर्व्यूहः सन्दोह स्तैस्तु चाष्टभिः ।
विशरस्तै रष्टभिश्च ब्रजः स्यात्तैस्तु चाष्टभिः ।६०॥

आठ निवहों का एक व्यूह होता है। आठ व्यूहों का एक संदोह होता है। आठ संदोहों का एक विशर होता है। आठ विशरों का एक ब्रज होता है ॥६०॥

एवम्विधानकलिते र्नीचाश्चेट्यो प्यसंख्यकाः ।
काश्चिद्दण्डधराः काश्चि च्छत्र चामर हस्तकाः ।६१॥

इस प्रकार के विधानों से प्रत्येक अष्ट, षोडश, बत्तीस चौंसठ सखियों के साथ यह ब्रज विधान बना हुआ है। इस तरह से श्री कनकभवन में असंख्य संख्या में नीच से भी नीच दासियों का विधान बना हुआ है। कोई दण्ड लिए कोई छत्र चवर लिए सब सबकी सेवा करती हैं ॥६१॥

Scanned by CamScanner

इतस्ततश्चरन्तीनां पादभूषण झंकृतिः ।
प्राशाद पंक्तयोऽजस्त्रम्प्रति ध्वानैः प्रपूरिताः ॥६२॥

इस प्रकार की सखियों के महल पंक्तियों में इधर उधर विचरती हुई पाद भूषण, कंकन किंकिनी आदिकों का शब्द एक रस गुञ्जित रहता है ॥६२॥

चारुशीलादि मुख्यानामेवं स्याच्चतुरावृतैः ।
प्राशाद खण्डलान्येवं मण्डलानि समन्ततः ॥६३॥

सर्वेश्वरी श्रीचारुशीलाजी को मुख्य लेकर श्रीजानकी जी की आठ, सोलह, बत्तीस, चौंसठ सखियों का तीसरा आवरण, चौथावरण; पाँचवावरण, छटवाँ वरण ये चार आवरणों में महलों के खण्डों के तथा मण्डलों के भेद से चारों तरफ भरे हुए हैं ॥६३॥

इति श्रीशङ्कर कृते श्रीअमर रामायणे श्रीसीताराम रत्नमञ्जूषायां अयोध्याख्याने श्रीरामभवन वर्णनो नामत्रयो विंशतिस्सर्गः ॥२३॥

इति श्रीमधुकर रूप रसास्वादिना कृता टीकायां श्रीरामभवन वर्णनो नाम त्रयोविंशतिः सर्गः समाप्तः ॥२३॥

एवं वृत्तं चतुर्वृत्या वर्णितं योगमुद्रया ।
राजकन्यां प्रति देवि पुनरुक्तंश्चतच्छृणु ॥१॥

श्रीशंकर जी बोले कि हे पार्वती ? श्री योगमुद्रा जी ने राजकन्या सुकान्ति के प्रति कनक भवन के इन चार आवरणों का वर्णन करके फिर जो कुछ कहा है उसको मैं तुम से कहता हूँ सुनो ॥१॥

योगमुद्रोवाच—अनन्तरं चतुर्वृत्याः शृणुराजसुतेपरम् ।
रम्यश्च षोडशदलं सुचामीकर निर्मितम् ॥२॥

श्री योगमुद्रा जी बोलीं कि हे सुकान्ति ? मैंने जो सर्वेश्वरी श्री चारुशीला आदि प्रधान आठ सखियों के महल का वर्णन किया उसी तरह से सोलह, बत्तीस, चौंसठ सखियों के महल स्वर्ण निर्मित मणि जटित हैं ऐसा जानो ॥२॥

परिणाहो दीर्घता च न वर्णीयाप्यसंख्यतः ।
तस्य प्रति दलं सन्ति गृहाश्चैवातु रूपकाः ॥३॥

चारों आवरणों की पूरी नाप तथा चौड़ाई लम्बाई का हिसाब असंख्य होने से मैं वर्णन नहीं कर सकती हूँ । अब इन चारों आवरणों के भीतर ऋतु अनुरूप, ऋतु अनुकूल भेद से बाहर दल वाले कमल की तरह ॥३॥

एवं तु द्वादश प्रोक्ता ऋतूनां हि शुभगृहाः ।
रसोन्मितादक्षिणाश्च वर्णैश्चापि तथा विधाः ॥४॥

बारह वन और उन वनों के अन्दर वनों के योग्य सुन्दर महल हैं । ये बारहों वन व महल ऋतुओं के रस को बरसाने वाले तथा उसी अनुकूल अङ्ग वाले तथा उसी अनुकूल कुशलता पूर्वक सेवा करने वाली परिचारिकाओं से युक्त हैं ।४॥

Scanned by CamScanner

वासन्ताः पीतवर्णाश्चनैदाघा धूम्र वर्णकाः ।

प्राविषाश्चित्र वर्णाश्च सारदाः शुभवर्णकाः ॥५॥

जैसे—वसन्त अनुकूल और अनुरूप वन पीले रङ्ग के हैं उसी प्रकार ग्रीष्म अनुरूप अनुकूल भी धूम्रवर्ण तथा पावस रितु अनुकूल अनुरूप चित्र रंग का वन हैं। शरद अनुकूल और अनुरूप वन सफेद रङ्ग के हैं ॥५॥

हेमन्ताःस्यामवर्णाः स्युः शैशिराः पाटलास्तथा।

एवञ्चातु प्रतिरूपा गृहाः विद्धि नृपात्मजे ॥६॥

हेमन्त अनुकूल और अनुरूप वन श्यामवर्ण के है। शैशिर अनुकूल और अनुरूप बन पाटल (कुछ लाल मिला हुआ पीला) रङ्ग के हैं। हे राजकन्यके इस प्रकार यह ऋतु अनुकूल अनुरूप महल और वनों को तुम जानो ॥६॥

अथातदनुकूलाग्रे गृहात्युच्च विशालकाः ।

पूर्वोक्ताभिन्न रङ्गैश्च राजन्ते सत्समाङ्गकाः ॥७॥

इस वारह वन वाले आवरण के भीतर बड़े २, ऊँचे, विशाल महल भिन्न २ रङ्ग के, सुन्दर, समान अङ्ग वाले, प्रकाशमान हैं॥७॥

यथाभ्वसन्ते दृश्यन्ते पुष्पाणि बहु वर्णकैः ।

तथैव च तत्प्रसादा बहुवर्ण मणि प्रभाः ॥८॥

जैसे वसन्त ऋतु में फूलों के वहुत रङ्ग होते हैं उसी प्रकार उन वनों के महलों का भी रङ्ग बहुत रङ्ग की मणियों की कृपा से हैं ॥८॥

चन्द्रकान्तमणिश्निधैः रचिताः ग्रैष्मकाः गृहाः।

कुसुम्भ रजनाकारा राजन्ते प्राविषाः शुभाः ।९॥

ग्रीष्म ऋतु के वनों में चन्द्रकान्त मणि के अमृत की वर्षा करने वाले महल हैं और कुसुम जाति के फूल के रङ्ग के वहुत सुन्दर प्रकाशमान वर्षाऋतु के वन में हैं ॥९॥

शारदा पाटला विद्धि हेमन्ता रक्तवर्णकाः ।

कपिलाः शैशिराज्ञेयाः पूरिताः शुभगागणैः ॥१०॥

शरद ऋतु के वन में पाटल रङ्ग के महल, हिम ऋतु के वन में लाल रङ्ग के महल, शिशिर ऋतु के वन में कपिल रङ्ग के महल सुन्दर चाल चलने वाली अनुकूल सखि गणों से सब महल भरे हुए हैं ॥१०॥

सारूपास्तु गृहास्तत्र चाद्य वासन्तिके गृहे ।

तत्रचन्द्रकलामुख्या निवसन्ति यथा सुखम् ॥११॥

इन बन्सतादि ऋतुओं के अनुकूल और अनुरूप बनों में रहने वाली सखियों के नाम बताते हैं जैसे-वसन्तानुरूप वनमें श्रीचन्द्रकलाजी हैं मुख्य जिनमें वे सखियाँ सुखपूर्वक निवास करती हैं ॥११॥

आज्ञया चारुशीलायाः सर्वेश्वर्याः समन्ततः ।

सखीनां लक्ष्य व्यूहैश्च दिव्यांशक विभूषणैः॥१२॥

Scanned by CamScanner

जो सर्वेश्वरी श्री चारुशीला जू की आज्ञा से इस बन में निवास करती हुई श्री जुगल सरकार की सेवा के लिये सावधान रहती है। इनकी अनुयायी सखियाँ भी लाखों की संख्या में व्यूहाकार हैं। सब दिव्य वस्त्र भूषणों से सजी हैं ॥१२॥

तथा चन्द्रावली मुख्या ग्रीष्म सारूप्य मंदिरे।
सखीनाञ्चैकलक्षं हि निवहै निंबसन्ति ताः ॥१३॥

ग्रीष्म अनुरूप बन में श्रीचन्द्रावली जो एक लाख सखियों के व्यूह की स्वामिनी निवास करती हैं ॥१३॥

भवने प्राविषे चन्द्रमुखी मुख्या मनोहराः।
सखीनां लक्ष सन्दोहै निंबसन्ति यथासुखं॥१४।

वर्षा अनुरूप वन के महल में श्रीचन्द्रमुखी जी एक लाख सखि समूहों की मनोहरा स्वामिनी सुख पूर्वक निवास करती हैं ॥१४॥

सरत्सारूप्यके गेहे सख्यश्चन्द्र प्रभा मुखाः।
वसन्ति लक्ष सन्दोहैः सखीनां सर्वदा शुभाः॥१५॥

शरद अनुरूप वन के महल में एक लाख सखियों की स्वामिनी श्रीचन्द्र प्रभा जू सुख पूर्वक सुन्दर तरह से निवास करती हैं ॥१५॥

हेमन्त रूपकागारे सखी हिमकरानना।
सखीनां लक्षविशरैः साम्याष्टाभिर्वसत्यसौ॥१६॥

हेमन्त अनुरूप वन के महल में एक लाख सखियों की स्वामिनी, अपने समान आठ सखियों के ऊपर मालिक श्री हिमकराजी निवास करती हैं ॥१६॥

अथैवं शिशिराकार सख्य श्चन्द्रकरामुखाः।
सखीनां लक्ष विशरै निंवशन्ति शुभाननाः ॥१७॥

इसी प्रकार शिशिर अनुरूप वन में एक लाख सखियों की स्वामिनी सुन्दर मुख वाली श्री चन्द्रकरा जी निवास करती हैं॥१७॥

अथार्तवानुकूलेषु मन्दिरेषु यथायथं।
आज्ञया चारुशीलाया वयस्यानिवसन्तियाः॥१८॥

इसी प्रकार ऋतु अनुकूल बनों में भी सर्वेश्वरी श्री चारुशीला जी की आज्ञा से बहुत सी सखियां निवास करती हैं ॥१८॥

शृणु तासां राजकन्ये मच्छकाशात्समन्ततः।
पृथक् पृथक् च नामानि वक्ष्ये गुह्यतमान्यपि ॥१९॥

हे राजकन्यके! आप उनके नाम मेरे से सुनो, मैं अलग २ करके उन सबके नाम कहती हूँ। यद्यपि यह प्रसंग गुप्त है तो भी आपकी श्रद्धा पर कहूंगी ॥१९॥

Scanned by CamScanner

आनुकूल्यं तु तद्विद्धि यद्यस्मिन्यत्ररोचते ।
शोभते वातु समये द्विविधं कथ्यते बुधैः ॥२०॥

अनुकूलता तुम उसको जानो कि जिसमें विलासियों को जो २ रुचिकर हो और जिस समय में जैसी शोभा अनुकूल हो उसी तरह का जिसमें मिले । ये दो प्रकार की अनुकूलता को विद्वान जन अनुकूल कहते हैं ॥२०॥

वासन्तिकेतुभवने सख्यः श्यामा मुखा वसु ।
लक्ष्यैक निवहैः सार्द्धं सखीनां निवसन्तिताः ॥२१॥

बसन्त अनुकूल बन के महल में एक लाख सखियों की स्वामिनी अपने समान मुख्य आठ सखियों वाली श्री श्यामा जी निवास करती हैं ॥२१॥

रामाद्यास्तु तथाग्रैष्मे पूर्वोक्तैस्तु गणै समम् ।
निवसन्ति सखीनाञ्च महावैभव संयुताः ॥२२॥
प्राविषे वेश्म पंक्तौतु विमलानामनी वरा ।
साम्याष्टाभिनिवसति किङ्करीणां समूहकैः ॥२३॥
तथाहि शारदे खण्डे वसन्ति कमला मुखाः ।
किङ्करीणां गणैः सेव्या किशोर वयसां शुभैः ॥२४॥
हेमाङ्गा विशदाचीच हेमन्ते शैशिरे क्रमात् ।
गणैः सेव्या किङ्करीणां वसन्त स्ते यथा सुखम् ॥२५॥

ग्रीष्म अनुकूल बन के महल में पूर्व की तरह एक लाख संखियों की स्वामिनी अपने समान आठ मन्त्रियों के साथ श्रीरामा जी महान् वैभव संयुक्त निवास करती हैं । वर्षा अनुकूल बन के महल में एक लाख सखियों की स्वामिनी अपने समान आठ मन्त्रियों वाली श्रीविमला नाम की श्रेष्ठ सखी निवास करती हैं । उसी तरह शरद अनुकूल वन के महल में अपने किंकिरी गणों की स्वामिनी, अपने समान आठ मन्त्रियों वाली, किशोरावस्था सम्पन्ना, अत्यन्त सुन्दरी श्रीकमला जी निवास करती हैं । इसी प्रकार हेमन्त अनुकूल बन में श्री हेमाङ्गा जी तथा शिशिर अनुकूल बन में श्री विशदाची जी अपने २ गणों की स्वामिनी होकर सुख पूर्वक निवास करती हैं ॥२२-२३-२४-२५॥

अथाब्जस्य बीज कोशे भागे सोचसुवर्तुले ।
महावकाश सदीप्त पद्मरागावनीवराः ॥२६॥

इस तरह यह ऋतु अनुरूप ऋतु अनुकूल बारह दल वाले कमल के गोलाकार कर्णिका भाग में महा विस्तार पद्मराग मणि के रङ्ग की प्रकाशमान श्रेष्ठ भूमि पर ॥२६॥

सेवाभिधानि गेहानि विशालोचतराणिच ।
प्रासाद पक्ति संवानि सर्वर्तु शोभनानिच ॥२७॥

श्रीसीताराम जी के नित्य अष्टयाम सेवा विधि के महान् उच्चतर विशाल महलों की पंक्तियां सब ऋतुओं में शोभा सुख देने वाली हैं ॥२७॥

अष्टौ संख्यानि तत्रास्ति प्रथमं मंगलायनम् ।
राजते राजकन्येद्वे मांगल्याच महोत्सवी ।२८।

आठ जिनकी संख्या है हे राजकन्यके ! उन आठों में प्रथम श्री मङ्गलभवन वहां पर है जिस मंगल भवन में श्रीमहोत्सवी नाम की दो यूथेश्वरी निवास करती हैं ॥२८॥

बह्वश्चैवानुगामिन्य स्तयो स्सन्ति शुभाननाः ।
तासां तत्रैव गेहानि विशालान्युच्चकानिच ॥२६॥

ये दोनों अपनी बहुत अनुगामिनियों की स्वामिनी हैं, सुन्दर मुखचन्द्र वाली हैं, इन सबके महल भी उसी मंगल भवन के आवरणों में हैं ॥२६॥

ताश्च सर्वा राजपुत्र्यः सर्ववैभवसंयुताः ।
सीतायाः रामचन्द्रस्य प्रेम्णा सेवन तत्पराः ॥३०॥

इन सब सेवाकुञ्जों में रहने वाली राजकन्यायें महान् ऐश्वर्य सम्पन्ना श्रीसीतारामजीकी प्रेम से सेवा में सावधान रहती हैं ॥३०॥

तदग्रे चापरं गेहं दन्तधावन संज्ञकम् ।
पूर्वोक्त विधिना सर्वं शान्ति शीलाधिकारिणी।३१।

इस मङ्गल भवन (हिंडोल कुन्ज) के आगे एक और दन्तधावन (वल्लभ कुञ्ज) नामक महल है उस महल में भी पूर्वोक्त विधि से श्री शम्भी जो व शीला जी अनन्त अनुचारियों की स्वामिनी होकर निवास करती हैं ॥३१॥

तृतीयं मज्जनागारं प्रदेशैः प्ररिशोभितम् ।
मज्जनार्थानि कुंण्डानि मणिघट्टानि तत्र च ॥३२।

उसके और आगे तीसरा मज्जनागार (स्नान कुञ्ज) है जिसमें अत्यन्त शोभित विस्तार भूमि पर स्नान करने के बहुत से कुण्ड हैं जिनके मणिमय घाट बँधे हुए हैं ॥३२॥

घट्टा परि गृहै श्चैव वाय्वन्तर गृहैस्तथा ।
शोभनानि चतुर्दिक्षु कलशध्वजमण्डितैः ॥३३॥

घाटों के ऊपर बहुतसे महल हैं। जल के अन्दर भी बहुत से महल हैं जो अपने ध्वजा पताका कलशादिक सम्पत्ति से भूषित चारों दिशाओं में प्रकाश कर रहे हैं; सुन्दर शोभित हैं ॥३३॥

तत्र मोदा नुमोदाच सख्योद्वे त्वग्रगे शुभे ।
स्नान कार्य्ये च सीतायाः रामस्यरसिकात्मनः।३४।

इस मज्जनागार में श्री मोदा जी और श्रीअनुमोदाजी अपनी अनन्त अनुचरियों की स्वामिनी निवास करती हैं। रसिकात्मा श्रीसीतारामजी इन दोनों के स्नान कार्यों को सुन्दर तरहसे करती हैं॥३४॥

सायामं परिणाहोच्चं रम्यं द्वार प्रदेशकम् ।
गेहं चोप भोजनाख्यं स्नान गेहस्य पक्तितः ।३५।

इस स्नान कुञ्ज के आगे अत्यन्त रमणीय, विशाल चौड़ा, बहुत, रमणीय सुन्दर फाटकों वाला उपभोजन (कलेऊ) कुञ्ज है ॥३५॥

Scanned by CamScanner

तत्र मान्ये वयस्ये द्वे रुचिरा रोचना वरा।
तयो र्वस्या बहुशोऽया गण मुख्या गणैः समम् ॥३६॥

इस उपभोजन कुञ्ज में सामानावस्था वाली श्री रुचिरा व श्रीरोचना नाम की दो श्रेष्ठ सखियां निवास करती हैं जो देवलोक की उर्वशी से अधिक सुन्दरता वाली अनन्त गणों की स्वामिनी हैं॥३६॥

भूषागारं तु तस्याग्रे प्रासाद पंक्तिका वृतम्।
तत्र मान्ये वयस्ये द्वे रम्भा गौरी मनोहरे ॥३७॥

इस उप भोजन कुञ्ज के आगे महान विशाल महलों की पंक्तियों से आवृत्त हुआ भूषागार (शृङ्गार कुञ्ज) महल है जहां पर अनन्त गणों से मान्या मनोहर रूप गुण स्वभाव वाली समानावस्था की दो सखियां श्री रम्भा जी और श्री गौरी जी नाम की निवास करती हैं॥३७॥

तेप्रवीणे सुभूषायां सीतां रामं सुभूषणैः।
रुच्या भूषयतः स्वस्या गणैर्ग्रहीत भूषणे ॥३८॥

ये दोनों श्रीसीताराम जी के अपनी रुचि के अनुसार शृङ्गार-भूषण सजाने में अति प्रवीणा हैं और अपने अनन्त गणों की स्वामिनी होकर रुचिकर भूषणों से भूषिता हैं॥३८॥

अस्याग्रे च सभागारं मध्य मण्डप भाषितम्।
नाना कौतुक सन्धानैः साक्षा द्विस्मय कारकम् ॥३९॥

इस शृङ्गार कुञ्ज के आगे सभागार (सभा कुञ्ज) है जिसके मध्य में महान् प्रकाशमान मण्डप जिसमें नाना प्रकार के कौतुकों का महान् विस्मय (आश्चर्य) कारक साक्षात करने वाले खण्ड खण्डान्तर हैं॥३९॥

भावली च प्रभाली तिमुख्ये द्वे तत्र संद्विदे।
बहुशो प्याश्रिताश्चान्या स्तयो मुख्या गणान्विता ॥४०॥

इस सभा मण्डप में दो महान् पण्डिता श्री भावली और श्री प्रभावली नाम की मुख्या हैं जो अपने आश्रित अनन्त गणों की स्वामिनी हैं॥४०॥

अथातोभोजनागारं किञ्चिद्दूर समाश्रितम्।
पाकाधानंञ्च पचनं यत्रवै भोजना वृतिः ॥४१॥

इस सभागार के आगे कुछ दूर पर भोजनागार है जहां पर रसोई घर पकवान बनाना और भोजन विधि दोनों होती हैं॥४१॥

ताम्बूलं संभोजनान्ते स्थित्वा कुर्वन्ति यत्र च।
परंरम्यं तदागार मित्थंभाग चतुष्टयम् ॥४२॥

और जहां पर भोजन के बाद बैठकर पान पाते हैं वह रमणीय महल भी इसी भोजन कुञ्ज के अन्दर है। इस प्रकार ये चार भागों वाला यह भोजन कुञ्ज है॥४२॥

सुधाहस्ता पुष्कला च द्वे मुख्ये स्तः शुभानने।
पाक कार्य्ये प्रवीणे ते नाम्ना तत्तत्प्रवीण के ॥४३॥

Scanned by CamScanner

इस भोजन कुञ्ज की अधिष्ठात्रिणी पाक कार्यों में अत्यन्त प्रवीणा उन अनन्त प्रवीणाओं के ऊपर सुन्दर मुख चन्द वाली दो मुख्य श्री सुधाहस्ता और श्री पुष्कला नाम की हैं ॥४३॥

मध्याह्न शयनागारं तदग्रेचाति शोभनम् ।
कक्ष कक्षान्तरै रम्यं बहु द्वारै विभाषितम् ॥४४॥

इस भोजन कुञ्ज के आगे मध्याह्न शयन कुञ्ज अति शोभायमान है जो रमणीय बहुत द्वार वाला आवरण २ प्रकाशमान है ॥४४॥

चित्रलेखाचित्रकान्ती सख्यौ द्वे तु महत्तरे ।
तत्र गेहे निवसन्तो गुणरूप मनोहरे ॥४५॥

इस कुञ्ज की अधिष्ठात्रिणी, अनन्त समाज की स्वामिनी श्रीचित्रलेखा और चित्रकान्ती नाम की गुण व रूप से मन को हरने वाली उसी शयनागार में निवास करती हैं ॥४५॥

सेवाख्यान्युक्त गेहानि दिक्ष्वष्टासु यथाक्रमम् ।
पूर्वस्मा न्मङ्गलद् गेहा द्विज्ञेयानि समन्ततः ॥४६॥

इस प्रकार एक आवरण आठों दिशाओं में सेवा के इन अष्ट कुञ्जों का क्रमशः वर्णन किया पूर्व में मङ्गल घर (हिंडोल कुञ्ज) से दक्षिणावर्त क्रमशः चारों तरफ इन कुञ्जों को जानना चाहिये ॥४६॥

द्वयो र्द्वयो रन्तराले गोपुरे सदृशानिच ।
सन्ति द्वाराणि चत्वारि भाषितानि सुतोरणैः ॥४७॥

इन आठों कुञ्जों में प्रत्येक दो २ कुञ्ज के बीच अन्तराल में बहुत ऊँचे गोपुर वाले भारी २ फाटकों के महल हैं। इसी प्रकार सम्पूर्ण श्री कनकभवन के चारों दिशाओं चार द्वार सुन्दर तोरण, ध्वजा, कलशादिकों से युक्त प्रकाशमान हैं ॥४४॥

गवाक्ष्य जाल पंक्त्या चा पिधानांशुक सम्वृतैः ।
द्वाराणां त्रिक सद्भागैः कलशै दूर दर्शकैः ॥४८॥

प्रत्येक फाटक के गोपुर महलों में खण्ड २ प्रति छज्जे झरोखे मणियों की जालियां, वितान, परदे बिछावन शोभित हैं। हर एक फाटक तीन मुख वाला अलग २ विभागों से कलश ध्वजादि द्वारा दूर से दीख पड़ते हैं ॥४८॥

स्वर्णसूत्राञ्चितानाञ्च वस्त्राणां रचितैः शुभैः ।
पताका ध्वज लक्षै श्च जनानाश्चित्तकर्षकैः ॥४९॥

उन फाटकों के ध्वजा पताकादिकों में स्वर्ण सूत्रों से रचित सुन्दर जरी के वस्त्र लगे हैं। इस प्रकार के ध्वजा पताका एक २ द्वारों में चौदहों आवरण तक के लाखों हैं। उसी तरह से लाखों द्वारपाल फाटकों की रक्षा कर रहे हैं ॥४९॥

तत्पन्थानं लंघयित्वा प्राकारैको महाद्युतिः ।
स्फुरन्माणिक्य मुक्ताभि र्निर्मितः कनकेन च ॥५०॥

श्रीकनकभवन चौदह आवरण का वर्णन इस प्रकार है—सात आवरण बाहरी भाग जिसमें श्रीकनकभवनका इन्तजाम तथा देव, नाग, राजकन्याओंका निवास है। छः आवरण भीतरी भाग जिनके

Scanned by CamScanner

प्रमथ चार आवरण में ६४ यूथेश्वरी, ३२ यूथेश्वरी, १६ यूथेश्वरी तथा श्रीसर्वेश्वरी जी के सहित अष्ट प्रधान सखियों के महल हैं उसके भीतर ऋतु अनुरूप ऋतु अनुकूल बारह बनों का एक आवरण तथा अष्ट सेवा कुञ्जों का एक आवरण-इन दोनों को लेकर ये ६ आवरण श्रीकनकभवनके भीतरी भाग में हैं। इन भीतरी और बाहरी दोनों भागों के बीच एक आवरण सरजू जल का नहर है इस प्रकार ये चौदह आवरण चार द्वार अनन्त फाटकों वाले हैं। अब इन चौदहों आवरण के भीतरी भाग में जुगल सरकार के रात्रि शयन कुञ्ज (रङ्ग महल) का वर्णन करते हैं।) इन चौदहों आवरण के चार दिशा वाले चारों द्वारों का उल्लंघन करके भीतर जाने पर एक महान् प्रकाशमान महल है जो स्वर्ण, मणि, माणिक्य मुक्ताओं से निर्मित चमक रहा है ॥५०॥

तस्योच्चे रष्ट द्वाराणि तोरणै स्त्रिकसन्मितैः।
शोभतानि चतुर्दिक्षु रक्षितानि सखीगणैः ॥५१॥

उसके बहुत ऊंचे गोपुरों सहित आठ द्वार हैं वे तीन मुख वाले तथा तोरणादिकों से शोभित और चारों दिशाओं में अनन्त सखि गणों से सुरक्षित हैं॥५१॥

तदन्तरं महादिव्यं सर्वर्त्तु भोग्य नामकम्।
महादीर्घं विशालञ्च कलशाकाश लम्बितम् ॥५२॥

उस महल के अन्दर महान दिव्य, सर्व ऋतु भोग्य नामक महान् विशाल शयन कुञ्ज है जो लम्बे ध्वजा, कलशादिकों से शोभित हैं ॥५२॥

रचिताष्टापदव्यूहं चतुर्वेदात्मकं तु तत्।
तत्सिद्धान्तात्मकं मध्यं पदादि श्रुतय स्तथा ॥५३॥

यह रङ्ग महल कमलाकार स्वर्ण निर्मित अष्टकोण की तरह व्यूह बना हुआ चारों वेदों की आत्मा स्वरूप. तत्पद वाच्य, निस्चित सिद्धान्त स्वरूप है। इस रङ्ग महल की प्रत्येक सीढ़ियाँ वेदों की ऋचायें हैं ॥५३॥

मण्डल त्रय संयुक्त मिन्द्वर्काग्निभिरेवहि।
भूर्भुवः स्व स्त्रयाणाञ्च बीज ज्योतिः स्वरूपधृक् ॥५४॥

शयन कुञ्ज के बाहर में तीन आवरण महल उसके बाहर में तीन आवरण खम्भावली ये तीन तीन करके दोनों तीन २ रङ्ग के हैं क्योंकि इन तीनों आवरणों की रचना सूर्यकान्तिमणि अग्निकान्तिमणि चन्द्रकान्तिमणि से बनी है। इन तीनों आवरणों में भूलोक का बीज भुवर्लोक का बीज, स्वर्लोक का बीज ये तीनों बीजों का ज्योतिर्मय साक्षात् स्वरूप ये ही तीन आवरण हैं॥५४॥

ये च ब्रह्म मुखेवेदा एषा मन्शा त्प्रवर्तिताः।
तेषां गुह्य तम ञ्चैतद् दूतः प्रस्तुवन्ति ते ॥५५॥

श्रीब्रह्मा जी के मुख से जो वेद उत्पन्न हुए हैं वे इसी रङ्ग महल के तीन आवरणों के अंश से उत्पन्न हुए हैं। इन तीनों वेदों का गूढ़तम जो तत्व-ये रङ्ग महल के तीन आवरण हैं—वेद इन तीनों आवरणों की दूर से स्तुति करते हैं॥५५॥

सहस्राक्षो गवाक्षैश्च स्तम्भै रेवं सहस्रपात्।
सर्वतः श्रुतिमज्जालै द्वारैः स्यात् सर्वतोमुखम् ॥५६॥

Scanned by CamScanner

वेदों की स्तुतियों में जो उन परमात्मा के लिये सहस्राक्षः सहस्रपात् शब्द आते हैं वे यही तीन आवरणों के महलों के छज्जा झरोखा सहस्र अक्ष रूप में और खम्भावलियाँ सहस्रपाद रूप में हैं। सर्वतः श्रुति शब्द इन महलों की मणियों की जालियाँ है। सर्वतो मुखं इन महलों के फाटक है ॥५६॥

अट्टोपर्य्यट्ट गेहैश्च मणि चित्रित भित्तिकैः।
सहस्र शिरसागोयं सहस्रमौलिमान्यथा ॥५७॥

इन महलों के खण्ड २ प्रति दीवालों पर मणियों की चित्र कारियां हैं। अट्टालिकाओं के ऊपर भी सुन्दर अट्टालिका वाले महल हैं। ये ही वेद मन्त्रों के सहस्र शिरसा; सहस्र मौलि शब्दों का अर्थ है ॥५७॥

अन्यान्यावर्त्त्ये गेहानि तेषां चित्र गवाक्षकाः।
तेतु वैमानिका देवाः पुरुषं तं स्तुवन्ति वै ॥५८॥

आवरण भर में जो अन्य २ महल हैं उनके छज्जा, झरोखा, जहाँ तहाँ चित्रकारियाँ ये सब विमानों में बैठे हुए देवताओं के रूप हैं और उन परात्पर पुरुष की स्तुति कर रहे हैं ॥५८॥

जानक्या सह श्रीरामो मणिपर्य्यंक संस्थितः।
हृदये पुरुषस्यास्ति ध्यान मूर्तियथास्य च ॥५९॥

भीतर शयन कुंज के पर्यङ्क पर सोये हुए श्री राम जी के साथ श्री जानकी जी सोयी हुई हैं ये ही उस परात्पर पुरुष के हृदय के अन्दर ध्यान दृष्टि की साक्षात् मूर्ति (श्रीवत्स) हैं ॥५९॥

अट्टोपरि विराजन्ते वाटिका ह्रस्वकद्रुमाः।
सफलाश्च सपर्णाश्च सपुष्पाः सर्वदै वहि ॥६०॥

महलों की अटारियों पर छोटी २ वाटिकाएँ, उनमें छोटे २ बृक्ष हैं जो फल पत्ते व पुष्पों से हमेशा ही शोभित हैं ॥६०॥

सरांसि ससरोजानि कूपा वाप्योपि शोभनैः।
चित्रितैर्मणिवद्धेश्च घट्टै रागार संयुतैः ॥६१॥

उन वाटिकाओं में सरोवर वापी कूप भी मणिमय चित्र विचित्र घाटों से तथा किनारे के महलों से शोभित हैं। सरोवर आदिकों में रङ्ग २ के कमल भी खिले हैं ॥६१॥

सर्वदिक्ष्वपि राजन्ते हंसैः सारसकैरपि।
मृगैश्चापि मयूरैश्च पिक यूथ मनोहरैः ॥६२॥

उन सरोवरों में हंस आदि भी तथा मृग सारस मयूर कोकिल भ्रमरों के झुण्ड भी मन को हर रहे हैं ॥६२॥

पताकाभिः सुकलशैर्मुक्तागुम्फ सुलम्बितैः।
द्वार छत्रै विराजन्ते हर्म्या गाराणि सर्वतः ॥६३॥

उन अट्टालिकाओं के ऊपर भागों में जो स्वर्णमणि महल हैं उनमें पताका, कलश, मुक्ताओं के गुच्छे, जाली, शोभित हैं। उनके फाटकों पर छत्र लगे हैं ॥६३॥

Scanned by CamScanner

गृहास्तु त्रिविधाः प्रोक्ता उर्ध्वामध्यान्तरालकाः।
पार्थिव्या अपि ग्रैष्मास्ते काञ्चनमणि चित्रिताः।६४।

श्री रङ्ग महल में तीन प्रकार के महल कहे गये हैं। एक अट्टालिकाओं के ऊपर, एक मध्य तथा अन्तरालों में, एक पृथ्वी के अन्दर-ये तीनों प्रकार के महल स्वर्ण निर्मित मणियों से चित्रित हैं जो ग्रीष्म आदि ऋतुओं में सुखदायी हैं ॥६४॥

उर्ध्वा तु वायु मेघानां मण्डलं संस्मरन्ति च।
अधस्ता द्वारि, पर्य्यन्ता विशाला शंकुलास्त्रिभिः।६५ ॥

ऊपर अट्टालिकाओं वाले महल वायु और मेघ के मण्डल का स्मरण दिलाते हैं और पृथ्वी के अन्दर के महल वरुण लोक पर्यन्त विशाल अनन्त स्त्रियों से भरे हैं ॥६५॥

वाय्यांतपाशु गायत्ना जानक्या भवने शुभे ।
खण्ड खण्डान्तरे नन्ते वर्त्तन्ते चानुकूलतः।।६६।

वायु, जल, पवन-इसके संचरणार्थ [विलासार्थ] यत्न जिन महलों में हैं ऐसे महल श्रीजानकीजी के सुन्दर महल के अन्दर खण्ड खण्डान्तरों में सब प्रकार की अनुकूलता का वर्ताव करने वाले अनन्त हैं ॥६६॥

सलिलं सालिलैः सूत्रै वायु सूत्रैस्तु वायवः ।
आतपादर्श यत्नेन ह्यगतौ गतिकारकाः ॥६७॥

जिन महलों में जंत्रों के द्वारा जल के सूत्र से जल निकलता है वायु के सूत्र से वायु निकलता है, शीशाओं के द्वारा धूप निकलता है । जहां किसी की गति नहीं वहां पर गति पैदा करने वाले ऐसे यत्न बने हैं ॥६७॥

बहिस्तु सप्तमे द्वारे ह्यागतस्य च सूचनम् ।
अत्येवाभ्यन्तर स्थस्य तदप्यादर्श यत्नतः ॥६८॥

श्री कनक भवन के बाहरी भाग वाले सातों आवरणों के समाचार यंत्र द्वारा इन महलों में प्रत्यक्ष दर्शन की तरह से प्राप्त होते हैं ॥६८॥

श्रोत्रे वार्ता च कर्तव्या दूरात्तस्यापि श्रावणम् ।
तदर्था श्रोत्र नाल्योपि वर्तन्ते प्रति मन्दिरम् । ६९।।

बात चीत करने वाले यद्यपि बहुत दूर हैं पर उन यंत्रों के द्वारा बात चीत करते समय प्रत्यक्ष कानों कान बात की तरह से प्रतीत होता है। रत्ती भर भी अर्थ का भ्रम किसी भी महल के अन्दर बिल्कुल नहीं होता ॥६९॥

निर्मितं स्वर्ण सूत्रैश्च चित्रितं रौप्य सूत्रकैः ।
निर्मितं रौप्य सूत्रैस्त च्चित्रितं स्वर्ण सूत्रकैः । ७०॥

उन महलों के वितान परदा बिछावनादि जो स्वर्ण सूत्र से निर्मित हैं वे रौप्य सूत्र से चित्रित हैं और जो रौप्य सूत्र से निर्मित हैं वे स्वर्ण सूत्र से चित्रित हैं ॥७०॥

Scanned by CamScanner

ग्रथितामणय स्तस्मिन्नानावर्णाकृति कृताः।
एवम्भूतानि वस्त्राणि महार्हाणि ज्वलन्ति च ॥७१॥

नाना रङ्ग की मणियाँ उन चित्रों में गुथी हुई हैं। इस प्रकार के जो महान् बेसकीमतीय वस्त्र हैं वे उन महलों में प्रकाशमान हो रहे हैं ॥७१॥

गृहचन्द्रपिधानानि तैरेव रचितानि च।
गृहास्तरणानि तैरेव राजन्ते मन्दिराणि तैः ॥७२॥

इसी प्रकार के वस्त्र हरेक महलों में शोभित हैं। जहाँ चन्द्रकान्त मणि के महल हैं वहां चन्द्रकान्त मणि के ही वस्त्र भी हैं वे वस्त्र वितान, बिछावन, पर्दे आदिकों में शोभित हैं उसी रङ्ग के दीवालों पर चित्र भी बने हैं ॥७२॥

द्वार तोरण मालाभिः स्तम्भतोरण माल्यकैः।
चित्र तोरण द्वारैश्च दिप्यन्ते सर्वतो गृहाः ॥७३॥

द्वारों पर भी तोरणों की माला, खम्भों पर भी तोरणों की माला, चित्रों पर भी तोरणों की माला इस प्रकार की तोरण मालाओं से प्रत्येक घर चारों तरफ से शोभित हैं ॥७३॥

पंक्तिभिर्भित्तिकोशानां द्वार वत्तोरणांकिनाम्।
भित्ति सर्वा विराजन्ते नानावर्णैः सुचित्रिताः॥७४॥

पंक्तियों की पंक्ति भित्तियों पर भी द्वारों की तरह से तोरण बँधे हुए। इस प्रकार की नाना रङ्ग की भित्तियां नाना रङ्ग के चित्रों से शोभित हैं ॥७४॥

मुक्ताभिग्रथिता गुम्फाश्चन्द्रांशुक विलम्बिताः।
हस्तावलम्बनार्थास्ते दिप्यन्ते च प्रतिगृहम् ॥७५॥

प्रत्येक महलों के खण्डों में कमरों के अन्दर वितानों पर से लटके हुए मुक्ताओं से गुँथी हुई चन्द्रकान्त मणि की डोरियां नीचे को लटकी हुई हैं। उन्हीं मुक्ताओं की गुच्छिओं को पकड़ कर उठने बैठने के लिए हाथ के अवलम्बन रूप में हैं। इस प्रकार के अवलम्बन प्रत्येक घर में प्रकाशमान हो रहे हैं ।७५॥

पंक्ति दीपायनानाञ्च रचितानां सुरत्नकैः।
मणिभिर्निर्मितानांञ्च पक्षीणां सर्व मन्दिरे ॥७६॥

प्रत्येक महलों में खण्ड २ प्रति कमरों में मणियों की दीपावली तथा पक्षियों के लिये मणि निर्मित पिंजड़े शोभित हैं ॥७६॥

प्रतिमानां पंक्तयश्च भूषितां शुक भूषणैः।
स्तम्भेषु भित्तिकोषेषु राजन्ते यत्र तत्र च ॥७७॥

और स्वर्ण की रत्न रचित प्रतिमाएं सुन्दर वस्त्र भूषणों से सजी दीवालों पर, खम्भावलियों पर जहाँ तहाँ शोभित हैं ॥७७॥

गृहात्केचिन्मारकताः केचित्पीतास्तथा विधाः।
हरिताश्चारुणाः केचिद्रक्ताः केचित्तु मिश्रकाः॥७८॥

Scanned by CamScanner

जिस रङ्ग के महल हैं उसी के अनुकूल चित्र और प्रतिमाऐ हैं कोई मर्कत मणि की हैं; कोई पीत रङ्ग की हैं; कोई हरित, अरुण, कोई लाल; कोई २ मिश्रित रङ्गों की भी हैं॥७८॥

काञ्चनाः स्फाटिकाः केचित्केचिद्वस्त्रविनिर्मिताः।
सर्वेच सर्वदिक् द्वारा वाद्य गानैः सुनादिताः ॥७६॥

कोई स्वर्ण की; कोई स्फटिक मणि की और कोई २ मूर्तियाँ वस्त्रों की भी बनी हुई हैं। ये सब मूर्तियाँ सब दिशाओं से यंत्रों द्वारा गान बजान कल्लोल मचाती हैं॥७६॥

सोमागार निवेशायनि श्रेणीनां च श्रेणयः।
वैद्रुमाश्च मारकताः काञ्चना गज दन्तकाः ॥८०॥

महल से पिछवाड़े और नीचे गलियों में उतरने की सीढ़ियाँ कोई विद्रुम की हैं; कोई मर्कत मणि की हैं; कोई स्वर्ण की तथा कोई गजदन्त की सीढ़ियाँ हैं॥८०॥

कश्चिच्चन्दन काष्टेन निर्मिताश्च विचित्रकाः।
पूरिताः सुचिगन्धेन कोमलांशुक वेष्टिताः ॥८१॥

कोई चन्दन काष्ठ से बनी सीढ़ियाँ हैं जो रत्नों से जड़ित विचित्र हैं जिनमें कोमल वस्त्र लिपटे सुगन्धि से सीचे हैं ॥८१॥

आन्दोलकाश्च निश्रेण्यः कलसूत्रैश्चमत्कृताः।
नामारुह्य जनोधस्ता दुच्चचोम गृहं व्रजेत ॥८२॥

बहुत सी सीढ़ियाँ झूला की तरह से हैं जो यन्त्रों के सूत्र से चमत्कार करती हैं, जिनके द्वारा पहुंचने वाले स्थान का नाम लेते ही नीचे से बहुत ऊँचे महलों की छत तक भी पहुँचा देती है॥८२॥

मुखद्वाराणि मुख्यानि पृष्टिद्वाराणि सर्वतः।
समन्तात्पत्त द्वाराणि शोभमानानि तोरणैः ॥८३॥

जहाँ तहाँ प्रधान द्वार तो मुख्य हैं ही पृष्ठ द्वार भी चारों तरफ से बहुत हैं। जहाँ तहाँ पक्ष द्वार भी तोरणादिकों के द्वारा शोभित हैं॥८३॥

अन्तर्द्वाराणि गोप्यानि तथा चोर्द्ध्वधो गृहे।
आसनानि च पीठानि मञ्च पर्य्यंक पंक्तयः। ८४॥

कहीं २ अंतर्द्वार, गुप्तद्वार, ऊद्धर्व द्वार, अधः द्वार (नीचे के द्वार) इस प्रकार प्रत्येक घरों में हैं। इसी प्रकार प्रत्येक घरों में पर्यङ्क, सिंहासन आसन मञ्चों की पंक्तियाँ हैं॥८४॥

प्रतिगृहं विराजन्ते स्वर्ण रत्न विनिर्मिताः।
काश्चिदान्दोलकाः कश्छिदास्तरो परिशोभनाः॥८५॥

प्रत्येक घरों में पर्यङ्कों की पंक्ति कोई स्वर्ण रचित हैं, कोई रत्न निर्मित है, कोई झूला के आकार में है, कोई नीचे बिछावन के आकार में है जो कि अति शोभित हैं॥८५॥

उपकार्य्याश्च क्रीडार्था पर्य्यङ्काग्रे समन्तः।
न्यस्ता अपि विराजन्ते काञ्चनैश्चित्रिता पराः॥८६॥

Scanned by CamScanner

कोई ओप कार्य्य (गुप्त कार्य) के लिए है, कोई खेलने के लिये है। इस प्रकार की सामग्री पर्यङ्कों के चारों तरफ रक्खी हैं। रखने के स्थान भी स्वर्ण विचित्र परम रमणीय शोभित हैं ॥८६॥

गृहान्तरेषु भित्तीनां पन्नमास्य ततिः शुभाः ।
स्यादग्रभागके मुक्तागुम्फयुक्ता विराजते ॥८७॥

महलों के अन्दर दिवालों पर सर्पों के मुखों की पंक्ति सदृश खूटियां अति सुन्दर हैं जिनके मुख में मुक्ताओं की गुच्छियां लगी हुई हैं ॥८७॥

तस्या अधो विमानानि मणिभिर्निमितानि च ।
तासु सर्वासु शोभन्ते शश्वयो नाना सुगन्धिनाम् ॥८८॥

उन खूटियों के अगल बगल कुछ नीचे के भाग में विमानों के आकार पर ताख बने हैं जिनमें नाना प्रकार की सुगन्धियों से भरी शीशियां सुन्दर तरह रक्खी हुई शोभित हैं ॥८८॥

मणिभिर्निर्मिता गुल्मा पुष्पाणां बहुवर्णकाः ।
पक्षिणो बहुवर्णाश्च तेषु तेषु शुकादयः ॥८९॥

उन ताखों के अगल बगल दीवालों पर बहुत रङ्ग के पुष्पों के वृक्ष मणियों से बने हैं। उन वृक्षों पर बहुत रङ्ग के सुकादिक पक्षियां बने हैं ॥८९॥

हंशाश्च सारसा श्चान्ये समस्त मृग जातयः ।
स्त्री पुमांशो मूर्त्तयश्च स्तम्भेभित्तौ च निर्मिताः ॥९०॥

कही २ दीवालों पर हंस सारस तथा और भी बहुत जाति के मृग और स्त्री पुरुषों की विलास मूर्तियां दीवालों पर खम्भों में सुन्दर रचना युक्त बनी हैं ॥९०॥

मध्यभागे प्राङ्गणस्य वेदिकाः मणिचित्रिताः ।
स द्रुमा सापि शोभाढ्या सभामण्डप संयुताः ॥९१॥

जहां तहां दीवालों पर महलों के चित्र बने हैं। उन महलों के आंगन के मध्य भाग में मणियों से विचित्र चित्रित वेदिका बनी हैं उस वेदिका पर सुन्दर वृक्ष बना है उस वृक्ष के नीचे सुन्दर शोभा की खानि सभा मण्डप बना है ॥९१॥

इत्थं वास गृहाः सर्वे सर्वर्तु भोग्य मन्दिरे ।
नार्य्यो क्रीडन्ति गायन्ति वाद्यानि वादयन्ति च ॥९२॥

इस प्रकार निवास करने के सर्व ऋतुओं में भोग्य मन्दिर हैं जिनमें अनन्त स्त्रियायें कोई गाती हैं। कोई वजाती हैं और कोई खेलती हैं ॥९२॥

तत्राजस्त्रंहि जानक्या रमते राघवः प्रभुः ।
अनङ्ग कोटि शोभाङ्गो महावीरोति तेजसा ॥९३॥

इस प्रकार के उन महलों में अखण्ड एक रस श्रीजानकी जी के साथ विहार करते हुये करोड़ों काम लज्जित अंग वाले महावीर अति तेजस्वी श्रीराघव प्रभु विराजते हैं ॥९३॥

गाथा श्रीमिथिलाधिनाथ तनया नाथस्य धाम्नः परा विस्तारेण समासतोपि नृपजे तोषाय ते वर्णिता।

अग्रे यद्वद तद्वदामि शुभगे श्रीराम भावोन्नते श्रद्धा मेत्वयि सर्वथाहि सततं मा शंकनीया क्वचित्॥६४॥

हे राजकन्यके! यह श्री मिथिलाधि नाथ तनया के नाथ श्रीरामजी की परात्पर धाम की कथा तुम्हारे सन्तोष के लिए मैंने विस्तार से भी और संक्षेप से भी वर्णन की है। हे शुभगे! अब आगे जो तुम कहोगी वही मैं तुमको वर्णन करके सुनाऊगी। हे श्रीराम जी में भाव बढ़ाने वाली। मेरी तुम्हारे में महान् एक रस सर्वथा श्रद्धा है तुम किसी प्रकार की शंका न करो॥६४॥

इति श्रीशङ्कर कृते श्रीअमर रामायणे श्रीसीताराम रत्न मञ्जूषायां श्रीअयोध्या ख्याने श्रीरामभवन वर्णनोनाम चतुर्विंशतिस्सर्गः॥२४॥

इति श्री मधुकर रूप रसास्वादिना कृता टीकायां श्रीअयोध्या ख्याने श्री रामभवन वर्णनो नाम चतुर्विंशतिः सर्गः समाप्तः॥२४॥

राजकुमार्य्युवाच—श्रीजानकी वदन चन्द्र चकोरवृत्तेः संस्मृद्धिमल्ललित केलि प्रवाह पूर्णम्।
नैश्यान्हिकं कुरु कृपां कथय प्रवीणे सञ्जीवनंभवति यद्भुवि भावुकानाम्॥१॥

श्री सुकान्ति बोली कि श्रीजानकी जी के मुखचन्द्र के चकोर वृत्ति वाले श्री प्रियतम की महान् सम्पत्तिरूप ललित केलिओं का प्रवाह पूर्ण जो रात्रि का चरित्र है उसको हे प्रवीणे? यदि मेरे ऊपर तुम्हारी कृपा है तो कहो। वे ही चरित्र मेरे लिए और भू लोक के लिए संजीवनी बूटी है॥१॥

निखिल गुण गणानामाश्रयःपूर्णकामो रवि कुल कुमुदानां पावकः शर्वरीशः।
कुरु कुरु कृपया त यौगिकं योगमुद्रे भवति भवति भाग्ये येन मे सोपि कान्तः॥२॥

हे योगमुद्रे! जो निखिल गुण गणों के आश्रय हैं, सब प्रकार से पूर्ण काम हैं, सूर्य वंश रूप कुमुद के वन को खिलाने के लिये शरद पूर्णमासी के चन्द्रमा हैं वे जिस तरह से मेरे भाग्य में पतिभाव के सम्बन्ध से प्राप्त हों ऐसी पति पत्नी सम्बन्ध को देने वाली कृपा की मेरे ऊपर करिये करिये॥२॥

श्रीशंकर उवाच—यथार्णवाकृष्ट मनोज्ञ मत्सी दधाति प्राणान्भुवि वारि शेकात्।
तथा गतिं राम पतीत्सुकाया विलोक्य चाश्वास्यसमब्रवी त्सा॥३॥

श्री शंकर जी बोले कि हे पार्वती योगमुद्रा ने जिस प्रकार समुद्र में से निकली हुई मन रमणीय मछली को पृथ्वी पर रख करके जल के सिचन से प्राणों की रक्षा की जाती है उसी तरह से श्रीराम जी को पति रूप में चाहने वाली सुकान्ति को देख करके बोली॥३॥

अपूर्व मिदमाश्चर्य्यं रहस्यं जानकी पतेः।
अनुक्तमपि चानीय स्वोक्तौ वक्ष्यामि त्वां किल॥४॥

हे सुकान्ति तुमने जो जानकी पति के रहस्य को पूछा यह अपूर्व और आश्चर्य की बात है यद्यपि मैंने कभी कहा नहीं था तो भी अपनी उक्तियों से निकाल कर तुमसे कहूंगी॥४॥

स्वकीर्ति सन्दर्भ कृतानि सद्भि र्वाद्य त्सुवाद्यै श्च सुबन्धतालैः।
सप्त स्वरै रुत्तमगायकानां गीतानि कण्ठोत्थितकानि शृण्वन्॥५॥

सज्जनों के द्वारा अपनी कीर्ति के समूह रूप रचना किया हुआ पद सुन्दर ताल, बंध के साथ बाजाओं से बजाकर सातों स्वरों से उत्तम तरह गुणियों द्वारा गाये हुए गीतों से सुनते हुए॥५॥

Scanned by CamScanner

प्रात दिनेशान्वय कंजभानु भूतानुकम्पो रिपु कम्पनोसौ ।
जागर्ति नित्यं जन मोदकारी तदा भवत्तूर्य्य महा सुघोषः ॥६॥

सूर्य वंश रूप कमल वन को खिलाने के लिये सूर्य के सदृश प्राणियों पर अनुकम्पा करने वाले शत्रुओं को कम्पित करने वाले, आश्रितों को आनन्द देने वाले नित्य प्रातःकाल जागते हैं उस समय तूरी आदिक बाजाओं का महान् सुन्दर घोष होता है ॥६॥

तदानकध्वान निवर्त निद्राः प्रवृत्त चित्ता निज नित्य कृत्ये ।
स्नानादि कार्य्ये जनकात्मजायाः प्रियस्य रामस्य च सर्वसख्यः ॥७॥

उस समय निद्रा से निवृत्त हुईं श्रीसीताराम जी की प्रिय सखियां अपने नित्य कृत्य से निवृत होकर श्रीजुगल सरकार के स्नानादिक सेवा के लिए आसक्त चित्त हो गयीं ॥७॥

स्वकिंकरीभिर्समुपास्यमाना उद्वर्तन स्नान शुभांग रागैः ।
श्रीचारुशीलाभवने समेताः गच्छन्ति पूर्वं स्वगणैः सखीनाम् ॥८॥

इस प्रकार अपनी दासियों के द्वारा अपने २ महलों में उबटन स्नान, सुन्दर अङ्गरागादिक सेवाओं से सेवित होकर, सुन्दर शृङ्गार करके अपनी सखि गणों के समूह सहित सर्वेश्वरी श्रीचारुशीला जू के भवन में सब यूथेश्वरियां इकट्ठी होगयीं ॥८॥

ताभिःसमेता शिविका स्थिताभिः स्वयं रथस्था कृतंभूषणाङ्गा ।
श्रीचारुशीलागुणशीलयुक्ता समस्त नेत्री नवकञ्जनेत्रा ॥९॥

उन समस्त कनकभवन की शिविकाओं में बैठीं अपने झुण्ड की यूथेश्वरियों के श्रीसर्वेश्वरी जी के महल में इकट्ठा हो जाने पर स्वयं भी अपनी सखियों से सेवित शृङ्गारित होकर सुन्दर वस्त्राभूषणों से सुसज्जिता, दिव्य शीलादि सद्‌गुणों की समुद्र श्रीजुगल सरकार के समस्त परिकरों की नियमन करने वाली, नवीन कमल के समान विशाल नेत्र वाली सर्वेश्वरी श्रीचारुशीला जी भी स्वयं बहुत सुन्दर एक रथ पर बैठ गयीं ॥९॥

एवं तदागत्यमणिप्रकाशं श्रीजानकी राघवयो निशान्तम् ।
धृत्वा सुचामीकर चित्र दण्डान्द्वारोपविष्टं बहु दासिकाभिः ॥१०।

इस प्रकार समस्त यूथेश्वरियों के सहित श्रीसर्वेश्वरी जी श्रीजुगल सरकार के रात्रि-शयनकुञ्ज मणिमय प्रकाशमान रङ्ग महल में आ पहुँची जहां पर फाटकों में स्वर्ण के मणि चित्रित दण्डों को हाथों में ली हुई अत्यन्त दासियां पहरा कर रही हैं ॥१०॥

अस्थाय तत्रावलिभिः सखीनां श्रीचारुशीला ललितातिशीला ।
गानेप्रवीणा धृत हस्त वीणास्त्वालापय द्भैरव मुख्य रागम् ॥११॥

श्री रङ्ग महल के शयन कुञ्ज में मुख्य २ सखियों को साथ लेकर तथा स्वयं अपने हाथ में वीणा लेकर अत्यन्त ललित शील वाली, गान में महान् प्रवीणा अपनी सखियों के साथ रागों में मुख्य भैरव राग में अलाप को लेकर गाने लगीं ॥११॥

नाना रत्न परिष्कृते विलसितौ सत्पञ्जरे पक्षिणौ नाम्नास्तः शुक शारिके जनकजा कान्तेन वाक्पाठितौ।
ता वालाप कलं निशम्य मधुरं हेजानकीवल्लभ सख्यस्ते हिं समागता इति बचो ब्रूतो भृशं शान्तिके १२

Scanned by CamScanner

श्री सर्वेश्वरी जी के इस मधुर गान को सुनकर नाना रङ्ग के रत्नों से सुन्दर रचित श्रेष्ठ पिंजड़ों में विलास करने वाली सुक स्तरिका आदिक नामों वाले श्र जानकी जी और श्रीकान्त जी के वाँणियों से पढ़ाए हुए पक्षी महान शान्ति पूर्वक हे श्री जानकी वल्लभ जी ! आप की सखियाँ आ गयी हैं—ऐसा शब्द बार २ सुन्दर तरह से बोलने लगीं ॥१२॥

विनिद्रोभूद्रामः श्रुतिपथ गते पक्षि गदिते
तदा पश्यत्कान्ता वदन कमलं मुद्रित दृशम् ।
शनैर्हस्तेनासौस्पृशतिमृदुलाङ्गं सुख करं
प्रियायाः प्राणेशः प्रणय वश वर्त्तीति विदितः ॥१३॥

इस प्रकार पक्षियों के कहने पर शब्द कान में जाने से श्रीरामजी निद्रा रहित होकर नेत्रों को बन्द की हुई कान्ता के कमल वदन को देखने लगे। धीरे से प्रियाजू के कोमल अंगों को हाथ से अत्यन्त सुख कर स्पर्श करने लगे। प्रिया जू भी प्राणेश्वर मेरे प्रणय के वश में हैं ऐसा जानकर आँख नहीं खोलती हैं ॥१३॥

पाणिस्पृशा त्प्राणपते स्तु सीता विनिद्रिताप्येव सुखानुभूत्या ।
तन्मुद्रया दर्शयतीव निद्रां क्षणस्मिताभूत् प्रिय कण्ठ लग्ना॥१४॥

यद्यपि श्रीसीता जी निद्रा से रहित हो गयीं तो भी प्राणपति पाणिस्पर्श का सुख अनुभव करतीं हुई एक क्षण केलिये उसी निद्रा की मुद्रा को दिखाया। थोड़ी देर के बाद कुछ हँसकर आँख खोलीं और प्रियतम के कण्ठ से लग गयीं ॥१४॥

विशीर्णहाराद्गज मौक्तिकानि कण्ठात् प्रियायाः प्रियकण्ठतोपि ।
चिन्वन्ति चेव्यस्खलितानि रात्रौशय्या गृहे यानि वसन्ति बालाः ॥१५॥

श्री प्रिया-प्रियतम जू के कण्ठ से गज मुक्ताओं के हार टूट कर पलँग पर बिखरे पड़े हैं। जो चेटियाँ श्री प्रिया प्रियतम जू के सेवा में रात्रि में वहाँ निवास करती हैं वे बालाएँ उन मुक्ताओं को बीनने लगीं ॥१५॥

इत्यन्तरे श्रेष्टतराश्च ताभ्यः पटान्तरे स्वाप गृहे वसन्ति ।
श्रुत्वा स्वनं तत्पद भूषणानां समुत्थितौ प्राण पर प्रियौ हि ॥१६॥

इसी बीच में बाहर से गान करती हुई भीतर आने वाली श्रेष्ठतर सखियों के पाद, कणकण आदि भूषणों की आवाजको सुनकर उन शयन घर में रहने वाली अङ्गजा सखियों द्वारा प्राणों से भी अधिक प्रिय सरकार उठ गए ॥१६॥

ज्ञात्वेति तासां निपुणैक मुख्या श्री चारुशीलायान्तिकमा ताऽऽ ।
तदात्र नाम्ना रसिकेति दक्षा श्रीचारुशीला भगिनी कनिष्ठा ॥१७॥

उन शयन कुञ्ज में रहने वाली सखियों में मुख्या श्री चारुशीला जी की छोटी बहिन बड़ी चतुरी रसिका नाम की सखी ने सखियाँ आ गयीं हैं-ऐसा जानकर तुरन्त बाहर श्री सर्वेश्वरी जी के निकट आ गयीं ॥१७॥

सा दर्पणं मङ्गल दर्शनञ्च नीराजनं साधितमेव पूर्वम् ।
तदा ज्ञया मोदयुता मनोज्ञा हस्ते समादाय मणि प्रकाशम् ॥१८॥

फिर श्री सर्वेश्वरी जी को आज्ञा पाकर वह रसिका नाम की सखी पहले से ही दर्पण मङ्गल दर्शन की सामग्री और आरती के साधनों को तैयार की हुई अति मनोज्ञा प्रसन्न मन होकर श्री सर्वेश्वरी जी की आज्ञा से मणियों से भरा हुआ प्रकाशमान थाल लेकर ॥१८॥

शय्या गृहं कोटि सुभक्ति भव्यं विवेश सौगन्धि सुपूरितान्तत् ।
आदर्श मादर्श्य नीराजनं साऽकरोत्तदाराघव सीतयो वै ॥१६॥

सुन्दर सुगन्धियों से परिपूर्ण, करोड़ों की संख्या में सुन्दर भक्तियों से भी श्रेष्ठ श्रीजुगल सरकार के शय्या घर में प्रवेश किया; दर्पण दिखाया और श्री जुगल सरकार की आरती की ॥१६॥

इति श्रीअमररामायणे श्रीशङ्करकृते श्रीसीतारामरत्न मञ्जूषायां रहस्याख्याने उत्थापन समय वर्णनं नाम पञ्च विंशतिः सर्गः ॥२५॥

इति श्री मधुकर रूप रसास्वादिना कृता टीकायां रहस्याख्याने उत्थापन समय वर्णनं नाम पञ्च विंशतिः सर्गः समाप्तः ॥२५॥

नीराजनानन्तर माद्रितास्ताःश्रीचारुशीलादि सखी सुमुख्याः ।
शय्यागृहे राघव सीतयोस्तु कुर्वन्ति गानं ललितं प्रभाते ॥ १ ॥

इस प्रकार आरती करने पर श्रीसर्वेश्वरी चारुशीला जी आदि मुख्य सखियों से आदर पाकर श्री जुगल सरकार के सामने शयन कुञ्ज के अन्दर ललित प्रभात काल में रसिकादिक सखियाँ गान करने लगीं ॥१॥

अन्याभिरम्याहि सुदम्पतीभ्यां श्रीमैथिलो राघव सुन्दराभ्याम् ।
सुकारयित्वा मुखमार्जनार्घं नवां सुभूषां रचयन्ति सस्ताम् ॥ २ ॥

और अन्य रमणीय सखियाँ सुन्दर दम्पति श्री मैथिलो राघव जी के मुख-मार्जन अर्घ्यादिक करके नवीन भूषणों की रचना करने लगीं ॥२॥

काचित्तु ताभ्यां नवरङ्ग शय्यां सुकल्पयत्येव सखी प्रवीणा ।
काचित्सुधूपं च सुदीपकञ्च सु पुष्प हारान्न चयन्ति चान्याः ॥ ३ ॥

कोई प्रवीण सखी उन जुगल सरकार के लिये नवीन रङ्ग की शय्या को रचने लगी। कोई धूप कोई दीप, कोई फूलों के हारों की रचना करने लगीं ॥३॥

काश्चित्करेकाञ्चनपात्रकेतु प्रातर्विधानं नरदेवतानाम् ।
सुलेह्य माद्यं मधुपर्कमेव सखी समादाय समास्थिताग्रे ॥ ४ ॥

कोई अपने कर कमल में स्वर्ण पात्र को लेकर नर देवता श्रीयुगल सरकार केलिए प्रातःकालीन विधि के अनुसार मधुपर्क आदिक सुन्दर लेह्य पदार्थों को ली हुई आगे में खड़ी है ॥४॥

काश्चित्पयः सिन्धु तरङ्ग भानि मयङ्क कीर्ण प्रकरैः समानि ।
आदाय हस्ते सित चामराणि समास्थितास्तत्र शुभाङ्गरागाः ॥ ५ ॥

कोई शुभ अङ्ग राग वाली सखी क्षीर समुद्र के तरङ्ग की तरह अथवा चन्द्रकी किरणों की तरह सुन्दर प्रकाशमान सफेद चँवरों को हाथ में लेकर दोनों सरकार के बगल में खड़ी है ॥५॥

Scanned by CamScanner

आदाय काश्चिद् व्यजनानि हस्तेसरोजशोभे रचितानिरत्नैः ।
सख्यः सुरत्नाञ्चित भूषणांगाः समास्थितास्तत्र पतिप्रियाग्रे ॥६॥

कोई सुन्दर कमल के समान करकमल वाली सखी रत्नों से रचित दण्ड वाले व्यजन को हाथ में लेकर खड़ी है। इस प्रकार सब सखियां सुन्दर रत्नमय वस्त्रों से सजी सेवा सौंजों को हाथ में लेकर श्री प्रिया प्रियतम जू के अगल बगल चारों तरफ खड़ी हैं ॥६॥

पर्वेन्दु पूर्णोज्वल सत्प्रभानि द्रवत्सु गन्धद्रव शीकराणि ।
सख्यः शुभांगाः करकजभापे छत्राणि चादाय समुल्लसन्ति ॥७॥

कोई सुन्दर अङ्ग वाली सखी अपने प्रकाशमान करकमलों में शरदपूर्ण चन्द्र सदृश प्रकाशमान अमृत के सीकरों की वर्षा करने वाले छत्र को लेकर बड़े उल्लास में खड़ी है ॥७॥

रूक्मारविन्दानि च कन्दुकांश्च सख्यः समादाय सरोजपाणौ ।
प्राणप्रियाया रघुनन्दस्य काश्चि द्विशन्त्यत्र विशाल नेत्राः ॥८॥

कोई सखी स्वर्ण कमल को, कोई गेंद को अपने करकमलों में लेकर श्रीप्राणप्रिया प्रियतम जू के नजदीक विशाल नेत्र वालीं प्रवेश कर रही हैं ॥८॥

काश्चि त्सुवर्णांश्च सुवर्ण पिञ्जरान् श्रीजानकी राघव वाक्सु पाठितान्—
सख्यः समादाय शुकांश्च सारिकाः करे विरेजुस्तु सरोज सुन्दरे ॥९॥

कोई सखी स्वर्ण पींजरा में सुन्दर रङ्ग के सुक सारिका को, जो जानकी राघव जी की पढ़ायी हुई हैं, अपने कर कमल में लिए हुए शोभित हैं ॥९॥

सौवर्ण सूत्रेणपदेषु जन्त्रितं सुभूषितं हंश युगं मनोहम् ।
काश्चिद्गृहीत्वा सुलसन्ति योषिता गत्या गता स्तेषु समानतां हिताः ॥१०॥

कोई जोषिता हंस की चाल से चलने वाली, सुन्दर भूषणों से भूषित दो मनोहर हंसों को चरणों में स्वर्ण सूत्र से नूपुर बाँधकर हाथ में ली हुई सुन्दर शोभित होती है ॥१०॥

सलक्ष्मणा सारसकाश्च काश्चि द्वशीकृता नित्य विनीय भव्याः ।
आदायतांस्तास्तु पतिप्रियाग्रे सख्यो विरेजुः शुचिभूषणाङ्गाः ॥११॥

कोई सखी लक्ष्मणा (सारसी) सारस को अपने वश में करके साथ में ली हुई नित्य भव्य रूपा आ रही है। इस प्रकार सब सखियां अपनी २ सेवा सौंजों को श्रीजुगल सरकार की प्रसन्नता के लिए ली हुई सुन्दर भूषिताङ्गा शोभित हैं ॥११॥

काश्चित्प्रियायाः प्रियपार्श्वके तदा काचि त्करे चालयती ह चामरम् ।
तथैव केचिद् व्यजनं मनोहरं सख्यः प्रियायाः प्रियपार्श्वके मुदा ॥१२॥

कोई सखी श्री प्रिया प्रियतम जू के बगल में खड़ी होकर चँवर कर रही हैं, कोई मनोहर व्यजन कर रहीं हैं इस प्रकार श्रीजुगल सरकार की प्रियता के लिए प्रसन्न हुई हैं ॥१२॥

विरेजतु श्चालयतश्च भूषिते करेसुपंके रूह रङ्गभाषिते ।
कांचित्तयोः सम्मुख मास्थिता सती सुदर्श मादर्शक माददर्शह ॥१३॥

Scanned by CamScanner

कोई भूषित करकमलों में सुन्दर दर्वाङ्गादर्श दर्पण को लेकर दोनों सरकारों के सामने खड़ी होकर दर्पण दिखा रही है ॥१३॥

ऐणीदृशाया रघुनन्दनस्य वेणिं प्रियाया बिचलायमानाम् ।
करे गृहीत्वा वर कङ्कतीकां सुवन्ध वद्धांहि सखी करोति ॥१४॥

कोई मृगनयनी सखी श्री रघुनन्दन जू की मृगनयनी अत्यन्त प्रिया श्रीकिशोरी जी की वेणी को पकड़ करके हाथमें कंघी लेकर बालोंमें सुगन्धि आदि लगाकर बाल झाड़ रही है और वेणी गूथरहीहैं॥१४॥

काचित्प्रियाया रघुनन्दनस्य सिन्दूर विन्दु तिलकं सुभाले ।
सुधारयित्वा वसनं नवं च विभूषणै रश्चति स्वञ्चितांगे ॥१५॥

कोई सखी श्रीरामप्रिया जू के सुन्दर भाल में तिलक सिन्दूर, विन्दु लगा रही है और नवीन वस्त्रों को धारण करा रही है तथा प्रत्येक अंग भूषणों को सजा रही है ॥१५॥

तयोः समाघ्राय सुगन्धिधूपं सुमङ्गलं दर्शयते च दीपम् ।
सुकारयित्वामधुपर्कक लेह्यं सुकारय त्याचमनं पुनश्च ॥१६॥

कोई श्रीजुगल सरकार को सुगन्धित धूप सुँगा रही है, कोई सुन्दर माङ्गलिक दीप दर्शन करा रही है, कोई मधुपर्क पवा रही है और पुनः कोई आचकन करा रही है ॥१६॥

सुकारयित्वाचमनं तयोस्तु ददौ सखी जायक मेलैकाश्च ।
आदर्शकं दर्शयती प्रियायाः प्रियस्य रामस्य मुखं सुभास्या ॥१७॥

कोई उन दोनों सरकारों को आचमन कराने के बाद इलाइची, जायफल पवा रही हैं, कोई जुगल सरकार के मुखचन्द्र को दर्पण दिखा रही है ॥१७॥

मन्दं सुमन्दं गज हंस गत्या ततः समुत्थाय नवांसु शय्याम् ।
श्रीसीतयामुख्यसखीसमेतो विवेश रामोऽन्य गृहान्तर ञ्च ॥१८॥

इस तरह शयन कुञ्ज में सेवित होकर अब जुगल सरकार हाथी और हंस की चाल से नवीन पर्यंक पर से उठे मुख्य सखियों के सहित श्रीसीता जी के साथ दूसरे घर में प्रवेश किया ॥१८॥

नवायां शय्यायां कुसुम रचितायां मणि गृहे समासीनौ सीता रघुपति विशालाम्वुज दृशौ ।
तयो रग्रे काचि द्रचयति सुमाङ्गल्य रचनां जवाङ्कान्दूर्वाङ्का न्कनक कलशं स्वास्तिक शुभम् ॥१९॥

उस मणिमय महल में पुष्पों की रचना की हुई नवीन शय्या में कमल सदृश विशाल नेत्र वाले श्रीसीता रघुपति जी विराजमान हुए। दोनों सरकार के आगे कोई सखी जौ के अंकुर, दूर्वांकुर, स्वस्तिक चिन्ह से चिन्हित स्वर्ण कलश आदि माङ्गलिक वस्तुओं की रचना कर रही हैं ॥१९॥

पीतादि चूर्णैः कलधौत पात्रे बिधाय चित्राणि सुमङ्गलानि–
प्रज्वाल्य दीपाष्ट सुवर्तिकानि नीराजयन्तीह सखी शुभास्तौ ॥२०॥

स्वर्ण के पात्रों में नील पीतादिक रङ्ग के चूर्ण रखकर माङ्गलिक चौक पूर रही है। कोई सखी अष्टवर्तिका वाली आरती को जलाकर दोनों सरकार को आरती कर रही है ॥२०॥

Scanned by CamScanner

काचिद्मुदा वादयतीह वीणां काचिन्मृदङ्गं स्वरमण्डलञ्च।
काचिद्विपञ्ची सुषिरञ्च काचि त्काचि द्वनं नाद वरं सुनव्या ।२१।।

कोई वीणा, कोई मृदंग बजा रही हैं। कोई विपञ्ची, कोई झाल आदि बाजाओं के स्वर का मण्डल बाँधकर आनन्द भरी हुई नवीन अङ्ग वाली ऊँचे स्वर से गा रही हैं ॥२१॥

उच्च स्वरैं गायति कापि बाला सुपुष्प मालाः प्रकिरन्ति काश्चित्।
विशाल सौन्दर्य्य विलास मानं निरीक्ष सीता रघुनन्दनास्यम्॥२२।

कोई बाला सुन्दर पुष्पों की मालाओं की रचना कर बरषा रही है इस प्रकार सौन्दर्य विलास की विशालता को श्रीसीता रघुनन्दन जी देख रहे हैं ॥२२॥

नृत्यन्ति काश्चि त्कलयन्ति तालान्काश्चि त्प्रबन्धान्स्वरयन्ति सख्यः।
गतेः प्रशंसाम्प्रकरोति वाग्भिः काचित्तु सीता रघुनन्दनाग्रे ॥२३॥

कोई नृत्य कर रही हैं, कोई गान कर रही हैं, कोई ताल प्रबन्धों से स्वर मिला रही हैं। कोई सखी श्रीसीता रघुनन्दन जू के आगे संगीत की गतियों की प्रशंसा कर रही है ॥२३॥

एवंहि सख्यो जनकात्मजाया रामस्य सौन्दर्य्य सुखावहस्य।
नीराजनं मङ्गल नाम प्रातः कृत्वा निरीक्षन्ति प्रियाः प्रियास्यम् ॥२४॥

इस प्रकार श्रीजुगल सरकार के सौन्दर्य सुख में मग्न हुई प्रातःकालीन मङ्गल आरती को करके श्रीप्रिया प्रियतम जू के मुखचन्द्र को देख रही हैं ।२४॥

इति श्रीशङ्कर कृते श्रीअमररामायणे श्रीसीताराम रत्नमञ्जूषायां रहस्याख्याने
अष्टयामसेवा वर्णनो नाम षड्विंशतितमः सर्गः ॥२६॥

इति श्री मधुकर रूप रसास्वादिना कृता टीकायां रहस्याख्याने मंगलभवने मङ्गल आरती वर्णनं नाम षड्विंशतितमः सर्गः समाप्तः ॥२६॥

हेप्राणनाथ प्रणयि प्रसन्न प्रिया समेतौ हि सुमौक्तिकाभाम्।
दन्ताँश्च सुद्धयस्व मुखं प्रधाव्येत्येवं सखी काप्यवदद्विपञ्च्याम् ॥१॥

कोई सखी वीणा से—हे प्रणय से प्रसन्न होने वाले प्राणनाथ! प्रिया जू के सहित मुक्ताओं के समान प्रकाशमान दांतों को मञ्जनादि से शुद्ध कीजिये, मैं आपका मुख धुलाऊँगी-ऐसा कहती है ॥१॥

आदाय चामीकर वारि पात्रकं सख्यौ द्वयोर्द्वे समभाग मागते।
तथा मुख प्रोञ्छन चीर सुभ्रकं धृत्वाच सख्यौ समपार्श्वके तयोः ॥२॥

दो सखियां स्वर्ण झारियों को लेकर दोनों सरकार के अगल बगल में खड़ी होकर कुल्ला करा रही है। दो सखियां सफेद रङ्ग की मुख पोछने की साफी लेकर दोनों सरकार के अगल बगलमें खड़ीहैं॥२॥

आनीय सौगन्धि च दन्तधावनम् ददौ करे राघव सीतयो स्तदा।
सख्या शुभे सन्मुख मन्तिकं तयो रादर्श मादाय तदोपतिष्ठतः ॥३॥

कोई सुगन्धित दतौन लाकर सीता राघव जी के हाथ में दिए. कोई सखी दोनों सरकार के सन्मुख दर्पण लेकर खड़ी होगयी ॥३॥

Scanned by CamScanner

गणे सखीनां सुविलास हास्यकैः श्रीजानकीराघव मोद वर्द्धनौ ।
कृत्वामुदा दन्त सुपंक्ति मार्ज्जनं गृहान्तरं जग्मतु रन्वितन्तदा ॥४॥

इस प्रकार सखि समूह के मध्य श्रीजुगल सरकार के मोद वर्धक हास्य बिलास हो रहे हैं। इस प्रकार दोनों सरकार सुन्दर दन्त पंक्तियों का मञ्जन करके फिर समाज सहित दूसरे महल में गये ॥४॥

बिशाल खण्डान्तर सद्विधानं सुचित्र भित्ति प्रतिमा गणाढ्यम् ।
सौवर्ण सूत्राश्चित सद्वितानं पिधान जालैः सुकपाट युक्तम् ॥५॥

दूसरे एक विशाल सुन्दर प्रतिमाओं से चित्रित भित्ति वाले खण्ड में गये जिस खण्ड में स्वर्ण सूत्रों से रचित वितान, परदे, बिछावन बिछे हैं, सुन्दर किवाड़ लगे हैं ॥५॥

तत्रापि वाशोभि रशेष सख्यो विभूषणैः प्राणपतिं प्रियांश्च ।
समर्च्चयित्वा मलयादिरागै र्धूपञ्च दीपञ्च तदाहि चक्रुः ॥६॥

वहां पर सखियां दोनों श्रीप्रिया प्रियतम जू को नवीन वस्त्र और समस्त भूषणों को सजाया, सुन्दर मलयाचल चन्दन, अङ्गराग, धूपदीपादि विधि से सम्यक् प्रकार पूजा की ॥६॥

प्रासाद मुख्या तु सखी तदेका स्व किंकरीभिः सुचि भूषणाङ्गा ।
फलानि सर्वर्तु रसाधिकानि सौवर्णपात्रेषु करेनिधाय ॥७॥

उस महल की एक मुख्य सखी अपनी किंकरियों द्वारा सुन्दर भूषणों से सजी हुई, रस से सुन्दर बढ़े हुए सब ऋतुओं के फलों को स्वर्ण पात्र में रखकर हाथ में ली हुई हैं ॥७॥

समागता सा च विनीय पूर्वं निवेदितान्यश्चित योषिताय ।
रामाय पर्य्यङ्क समास्थिताय फलानि दिव्यानि सुवर्ण पात्रे ॥८॥

अन्य स्त्रियों से पूजित पर्यंक पर बैठे हुए श्रीजुगल सरकार के सामने अपनी सखियों से पूजिता दिव्य सुवर्ण पात्रों में फलों को लिए हुए आ पहूँची ॥८॥

फलानि कानीह त्वगा मृतानि वीजेषु मिष्ठानि फलानि कानी ।
त्रिमिष्टकान्येव फलानिकानि स्वऽत्तस्तदा प्राण परप्रियौ तौ ॥९॥

कोई फल छिलके में मीठे, कोई फल बीज में मीठे, कोई फल गुठलो में मीठे, कोई फल तीनों से मीठे, प्राणों से अधिक प्रिय दोनों सरकार को फल पवाये ॥९॥

स्वादञ्च नामानिगुणान्फलानां सखी समास्थाय पति प्रियाग्रे ।
व्याख्याय व्याख्याय सुकारयित्वा फलाशन ञ्चाचमनं तयो.र्वै ॥१०॥

वह सखी दोनों सरकार के आगे बैठकर फलों के नाम गुण, स्वादों को व्याख्या कर करके फलाहार कराया फिर दोनों को आचमन कराया ॥१०॥

एला लवंगै श्शुचि गन्धमिश्रांकास्राय चूर्णेन सुकाग्ताश्च ।
ददौप्रियाया श्च मुखे प्रियस्य वीटि तदा नाग सुवल्लिकाय ॥११॥

और सुगन्धित इलाइची लौंग आदि बहुत वस्तुओंसे मिश्रत चूर्ण डाला हुआ सुन्दर नागवल्लो नाम के पान के वीरा को श्रीप्रियाप्रियतम जू के मुख में दिया ॥११॥

Scanned by CamScanner

घटादि संस्थाप्य पतिप्रियाग्रे सुमङ्गलं पूर्व यथैव चोक्तम् ।
गानैश्च वाद्यैश्च सखीभिराभि र्नीराजितौ प्राणपति प्रियौ तौ ॥१२॥
श्रीराजराजेन्द्रकुमार रामः श्रीजानकीमैथिल राजपुत्री ।
नीराजितौ प्राण परप्रियौ तौ सखीगणै स्तत्र गृहे विशाले ॥१३॥

फिर श्रीजुगल सरकार के आगे पहले की तरह चौक पूर के माङ्गलिक घड़ाओं को पूर कर जैसे माङ्गलिक कृत्य कहे गये हैं उसी विधि के अनुसार सखियों की भीड़ में गान वाद्य संयुक्त दोनों श्रीप्रिया प्रियतम जू की उस विशाल महल में सखियों ने आरती की ॥१२-१३॥

मयूरका न्सारस हंशकांश्च मृगांश्च सर्वान्गिजसावकांश्च ।
सखीभिराहूय विभाग कैस्तै र्यथोचितं खादमत स्तदद्यम् ॥१४॥

उसके बाद उसी मङ्गल घर में मोर, हंस, सारस, मृग, हाथियों के बच्चे-सबको विभाग पूर्वक बुला करके जो जिस वस्तु को खाता है उसको उसी उचित रूप में सखियों ने खवाया ॥१४॥

विज्ञाय वेलाम्भवनाधिकारिणी श्नानस्य सीतारघुनन्दयो स्तदा ।
प्रेष्या स्वकीया स्तु तयोः समीप म्विज्ञापनाय प्रतिबुध्य प्रेषिता॥१५॥

स्नान कुञ्ज की अधिकारिणी ने समय जान करके अपनी दूतियों को श्रीजुगल सरकार को अपने घर में बुलाने के लिए समझाकर भेजा ॥१५॥

आगत्यसा तत्र प्रणम्य दम्पती वध्वाञ्जली मुक्ति रिति प्रयुक्ता ।
व्यतीत वेलं निज नित्य दैहिकं तद्दोषकारं न सुखाय कल्पते ॥१६॥

वह दूती श्रीजुगल सरकार के समीप में जाकर हाथ जोड़ कर नम्रता पूर्वक प्रणाम किया और कहा कि नित्यके शारीरिक कृत्यको करनेका समय बीत रहा है अतः यह दोष सुखके लिए नही होता है॥१६॥

प्रीत्या सुनीत्या पिच संस्कृतं वचः श्रुत्वा प्रसन्नौ भवत स्तु दम्पती ।
तस्यै ददौ काञ्चन भूषणं प्रिया परार्द्ध रत्नैः खचितं कराम्बुजात् ॥१७॥

उस सखी की सुन्दर नीति से भरी हुई सत संस्कार युक्त प्रेम मयी वाणी को सुनकर श्रीजुगल सरकार प्रसन्न हुए। श्रीप्रिया जू ने बिस कीमतीय परार्द्ध रत्नों से खचित अपने हाथ के स्वर्ण भूषण को निकाल कर उस सखी (दूती) को दे दिया ॥१७॥

वाह्यं सहस्त्रैक सुदासिकाभिः महान्शुका भूषण भूषिताभिः ।
विमान मारुह्य गणैः सखीनां सीतापतिः श्नानगृहं प्रतस्थौ ॥१८॥

इसके बाद नवीन वस्त्र भूषणों से सजी हुई हजारों दासियां जिस विमान को ढोती हैं उस विमान में सब सखियों के सहित श्रीसीतापति बैठकर स्नान घर को गये ॥१८॥

दास्यः सहस्त्रं तु विमान काग्रे चलन्ति चामीकर दण्ड हस्ताः ।
पृष्टे सहस्त्रं च सहस्त्र मेवपार्श्वद्वयोः सर्वविभूषिताङ्गाः ॥१९॥

श्रीजुगल सरकार को लेकर चलते हुए विमान के आगे पीछे अगल बगल हजारों दासियां स्वर्ण दण्डों को हाथों में लेकर सर्वाङ्ग भूषिता चल रही हैं ॥१९॥

Scanned by CamScanner

अन्याश्च वध्वो बहुभूषणाङ्गा बहुनि वस्तूनि करै गृहीत्वा ।
अग्रे च पृष्टे च तथाहि वामे दक्षे विमानस्य लसन्ति सख्यः ॥२०॥

और बहुत सी सुन्दर वस्त्र भूषणों से भूषित अङ्ग वाली वधुयें बहुत प्रकार की वस्तुओं को हाथ में लिए हुए श्रीजुगल सरकार के विमान के आगे, पीछे, दाहिने, बांयें शोभित हैं ॥२०॥

दक्षे च वामे च खचि न्मणीनां प्रासाद राजौ निज पालिकाभिः ।
नीराजनं चानुभवं स्तु मार्गे सीतापतिः श्नानगृहं प्रपेदे ॥२१॥

रास्ते में दाहिने बाए मणि खचित लहलों के छज्जाओं पर, भीड़की भीड़ श्रीरामजी की पत्नियां सीतापति की आरती करके अपने पतिपत्नी पनेका अनुभव करती हैं । इस प्रकार श्रीजुगल सरकार स्नान घर में पहुँचे ॥२१॥

इति श्रीशङ्करकृते श्रीअमररामायणे श्रीसीतारामरत्न मञ्जूषायां रहस्याख्याने
दन्त धावनमन्दिरागमन वर्णनं सप्तविंशतितमः सर्गः ॥२७॥

इति श्री मधुकर रूप रसास्वादिना कृता टीकायां रहस्याख्याने दन्तधावन मन्दिरागमन वर्णनं नाम सप्तविंशतितमः सर्गः समाप्तः ॥२७॥

समागते मैथिलराजपुत्री प्राणप्रिये श्नान गृहस्य. चाद्यां ।
कक्षां त्रिकद्वार चतुष्क चित्रां तत्रा भव त्तूर्य्य महासुघोषः ॥१॥

श्री मैथिल राजपुत्री व श्रीप्राणप्रियतम जू के स्नान घर के प्रथम आवरण में आ पहूँचने पर तीन मुख वाले चारों तरफ चित्र विचित्र विचित्रत विशाल फाटकों में तूरी आदि बाजाओं का महान् घोष हुआ ॥१॥

तदानकस्त्रान संचेत चित्ता करे समादाय सुवर्णपात्रम् ।
दूर्वा हरिद्रा दधिरोचनाढ्यं समागता सन्मुख मेवमुख्या ॥२॥

इस दुन्दुभी के चित्त को सचेत करने वाले आवाज को सुनकर स्नान घर की मुख्या स्वर्णपात्र में दूर्वा हरिद्रा (हल्दी) दधि, रोचन सजकर हाथ में लेकर स्वागत के लिए अपने समाज सहित आगे आईं ॥२॥

दृष्ट्वा विमाने च गणेसखीनां परस्परा लम्बित कण्ठ बाहू ।
सौदामिनी स्यामघना वभापौ परस्परावेपित दृष्टि चित्तौ ॥३॥

विमान में सखिगणों की भीड़ मध्य परस्पर गलबाहीं दिये हुये सुन्दर बिजली और मेघ के समान श्याम गौर छवि वाले परस्पर आवेषित चित्त से बात करते हुए दोनों सरकारों को देखा ॥३॥

मन्दस्मितौस्वल्पविभूषणौ श्च शोभाधिका न्नेत्र सुखौ सखीनाम् ।
नीराजितौ प्राण पर प्रियौ तौ तदा मुदा श्नान गृहस्य सख्या ॥४॥

दोनों सरकार मन्द मुसका रहे हैं, थोड़े भूषण धारण किये हुए हैं, अपने नेत्रों को शोभा की अधिकता से सखियों को सुखी कर रहे हैं । इस प्रकार प्राणों से अधिक प्रिय दोनों सरकारों की उस स्नान घर की मुख्य सखि ने आरती की ॥४॥

Scanned by CamScanner

प्रस्थाप्य भूमौ मणि चित्रितायां तदा विमानं मणि चित्रिताङ्गम् ।
यूथेश्वरी सा तु कृतप्रणामा प्रिया प्रियाभ्यां प्रिय कारिणी च ॥५॥

फिर मणि चित्रित भूमि पर उतार कर श्रीजुगल सरकार का अत्यन्त प्रिय करने वाली उस यूथेश्वरी ने दोनों सरकार को प्रणाम किया ॥५॥

प्रस्थापिता सादरतो विमाने ततः सुयानं भवनान्तरेऽग्रे ।
स्नानस्य कक्षान्तर दूरमार्गे क्षणेन नीतं तु सुवाहकाभिः ॥६॥

उसके बाद उस यूथेश्वरी ने विमान में बैठाया तब वह विमान उस आवरण से आगे स्नान कुञ्ज के मार्ग में वाहकों द्वारा एक क्षण में प्रविष्ट हुआ ॥६॥

ततो विमाना दवतीर्य सार्कं सखी गणैः प्राण पर प्रियौ तौ ।
श्रीजानकी राघव सुन्दराङ्गौ स्नातुं तदा स्नान गृहं प्रविष्टौ ॥७॥

स्नान कुञ्ज के भीतरी आवरण में समाज सहित कुञ्जेश्वरीने समाज सहित सुन्दर अङ्ग वाले दोनों प्रिया प्रियतम जू को विमान से उतार कर स्नान के लिये स्नान घर में प्रवेश कराया ॥७॥

तया मुदा स्नानगृहे सुपीठे प्रस्थाप्य सीता रघुनन्दनाङ्गे ।
सौगन्ध लावण्य विकाश माने सौगन्ध्य तैलं प्रथमंविमर्द्य ॥८॥

स्नान घर के भीतर महल में सुन्दर सिंहासन पर बैठाल कर आनन्द पूर्वक दोनों सरकारों के अङ्गों में प्रथम सुगन्धित लावण्यता को प्रकाशित करने वाले सुन्दर तेल का मर्दन किया ॥८॥

उद्वर्तनं कोमलकै र्मनोज्ञैः सुगन्धि संस्कार कृतैः सुचूर्णैः ।
करेण पंकेरुह कोमलेन कृतं मुदा मज्जनगेह सख्या ॥९॥

फिर स्नान कुञ्जकी यूथेश्वरी ने कोमल मन रमणीय सुगन्धित सत् संस्कारों से बने हुए सुन्दर चूर्ण से कोमल करकमलों से आनन्द पूर्वक उबटन किया ॥९॥

कृत्वां शुकेनान्तरकं तत स्मया जायापतीक्षीण मनः क्षणान्तरौ ।
सुस्नापितौ स्वच्छक बोष्णवारिणा मुदा स्वहस्तेन सुमर्द्य स्वाङ्गके ॥१०॥

स्नान करते समय सखियों ने संकोच को वजह से वस्त्र का परदा कर दिया एक क्षण के दृष्टि में परदा पड़ने पर दोनों सरकार विरह बेदना से क्षीण मन होगये परन्तु सखियों ने स्नान तो गर्म जल से अपने सुन्दर करकमलों से मर्दित करके करा ही दिया पर दोनों सरकार फिर इकट्ठे स्नान करने लगे ॥१०॥

जनकात्मजाया रघुनन्दनस्य शुभानिदिव्यानि सुकोमलानि च ।
अङ्गानि सा स्नान गृहाधिकारिणी प्रोञ्छत्यतीवांशुक चीर कोमलैः ॥११॥

सखियों ने सुन्दर, दिव्य, कोमल अंगों में दोनों सरकारों को खूब मल २ कर स्नान कराया और अँगोछा से अगों को पोछ दिया ॥११॥

वा सांसि सा सान्तरके नवानि सुधार्य्य दिव्यानि सखी सुविज्ञा ।
संस्थापितौ ह्येक सुपीठकै तौ रत्नाश्रिते रत्नगृहे सुदिव्ये ॥१२॥

Scanned by CamScanner

फिर पर्दा देकर अलग २ दोनों सरकारों को नवीन बस्त्र पहनाए। इस स्नान कुञ्ज की अधिकारिणी बड़ी पण्डिता सखी ने दोनों को एक रत्न-रचित घर में दिव्य सिंहासन पर बैठाया ॥१२॥

सर्वाङ्गरागस्य विचित्र सम्पुटं जनकात्मजाया रघुनन्दनाग्रे ॥
आधारके काञ्चन कञ्जके धृतं सदर्पणं श्नान गृहस्य मुख्यया। १३॥

इसके बाद स्नान घर की मुख्या ने सब अङ्गोंमें लगाने योग्य अङ्गराग का बिचित्र डिब्बा दोनों सरकार के आगे एक स्वर्ण चौकी पर दर्पण के सहित रख दिया ॥१३॥

वेणी प्रियाया रघुनन्दनेन वै एणी दृशायाः स्वकरेण गुम्फिता ॥
प्रियस्य भाले पि सुभाग्य भाजने तमाल पत्रं रचितं च सीतया ॥१४॥

श्रीरघुनन्दन जी ने मृगनयनी श्रीकिशोरी जू की बेणी को अपने हाथ से गूथा और श्रीसीताजी ने भी सुन्दर भाग्य के भाजन प्रियतम जू के मस्तक में तमाल पत्रों की रचना की ॥१४॥

जनकात्मजाया रघुनन्दनेन भालेविशाले रचितं विशेषकम् ॥
तथाञ्जनं कञ्ज विशाल चक्षुषोः परस्परं वै ददतुः प्रियाप्रियौ ॥१५॥

इसी प्रकार श्रीरघुनन्दनजी ने भी श्रीजनकात्मजा जी के विशाल भाल में और अधिक विशेषता पूर्वक रचना की तथा दोनों प्रियाप्रियतम जू ने परस्पर विशाल कमल नेत्रों में अञ्जन लगाया ॥१५॥

आदर्शकं दर्शयतः परस्परं प्रिया प्रियौ प्रेम महऽब्धि मग्नतः ।
तदा मुदा प्येक विशाल दर्पणे चिराय रूपं सदृशं हि पश्यतः ॥१६॥

दोनों प्रिया प्रियतम प्रेम समुद्र में मग्न हुए परस्पर दर्पण दिखा रहे हैं उसी समय एक बहुत बड़े दर्पण में परस्पर दोनों मिलकर अपने रूप को देर तक देखने लगे ॥१६॥

आदर्शैक गते मुख प्रति फले श्रीजानकीरामयो रुत्प्रेक्षां कुरुते सखीजन इति प्राथम्यकाऽत्र श्रुतिः।
आकाशे विमले निशाकरयुगे किम्वा युगे द्वन्तरे तद्भूतं नभविष्यके भवतिकिं भावोद्भुतः प्राभवत्। १७।

शीशा में दोनों के मुखचन्द्र का प्रतिविम्ब दोनों जने देखकर सखियों से पूछते हैं कि हम दोनो में से कौन सुन्दर है सखियां कहती हैं कि हमारी तरफ से तो तुम दोनों ही बराबर हैं हम किसको उत्प्रेक्ष (न्यूनाधिक्य) कर पर यह प्राचीन प्रसिद्धि है कि आकाश में दो पक्ष के चन्द्रमा हैं, एक चन्द्रमा पूर्णमासी को पैदा करता है, एक चन्द्रमा अमावस्या को पैदा करता है अथवा सतयुग और कलियुग नाम के दो युग हैं परन्तु इस प्रकार के दो चन्द्रमाओं का मेल तो न कभी हुआ था और न कभी होगा। यह तो आप दोनों के मुखचन्द्र का मेल हुआ है यह अद्भुत हुआ है ॥१७॥

एवं श्नानगृहे मुदा सुखनिधी श्रीजानकी राघवौ ।
श्नात्वाङ्गे च परस्परम्विलशितैर्धृत्वाङ्ग रागंशुभम् ॥
आशीनौ मणि पीठके छविधरौ दासी सखीभिस्तदा ।
कृत्वा मङ्गल धूपदीप सुविधिं मिष्टाशनं कारितम् ॥१८॥

इस प्रकार स्नान घर में सुख के समुद्र दोनों सरकार बहुत बिलम्ब पूर्वक बहुत सुन्दर अङ्गराग को स्नान के बाद धारण किये। उसके बाद और एक मणिमय सिंहासन में दासी व सखियां लिवा लाई, बैठाया मङ्गल धूप, दीप, नैवेद्य सुन्दर विधि से कराया ॥१८॥

Scanned by CamScanner

दृष्टे दोंष निवारणाय वनिता स्तौदम्पती सुन्दरौ गायन्त्यः स्वर सञ्चनै र्बहुविधम्सम्पादयन्त्य स्तदा।
वाद्याना मपि मेलनं च निपुणा नीराजयन्त्यग्रगाः नृत्यं तत्र करोति कापिमुदिता हर्षाश्रु पूर्णेक्षणा।१९

और सुन्दर स्वर समूहों को सम्हाल कर गान करते हुए अति सुन्दर दोनों दम्पतियों को दृष्टि दोष निवारण के लिए राई लोन उतारा, तृण तोड़ा, आरती की, मणि भूषणादि न्योछावर किए इस प्रकार बड़ी निपुणता पूर्वक बाजाओं के मेल से नृत्य किये। इस तरह हर्ष के आसुओं से पूर्ण नेत्र वाली सखियां दोनों सरकारों को प्रसन्न करती हुई प्रसन्न हो रही हैं ॥१९॥

वेलां वीक्ष तदोप भोजन गृहाधिष्ठातृका प्राग्विदा।
प्यानेतुं जनकात्मजा रघुवरौ प्रेष्या तया प्रेषिता ।।
सात्वागत्य सुनम्य सौम्य नयना मन्दस्मिता।
सत्वरं चातुर्य्याञ्चित संख्य वर्ण वचनै रर्थं वभाषेततः ॥२०॥

इसी बीच में कलेऊ कुञ्ज की अधिष्ठात्रिणी सखी श्रीजुगल सरकार के सब समाचारों को जानने वाली कलेऊ का समय देख करके दोनों सरकारों को लिवा लाने के लिए दूतियों को भेजा। वह दूती शीघ्र आकर बड़ी नम्रता पूर्वक मन्द मुसकराती हुई सौम्य दृष्टि से दोनों सरकार की तरफ ताक करके बड़ी चतुरता पूर्वक सुन्दर अर्थ भरे हुए असंख्य वरण वाले बचन को बोली ॥२०॥

श्रुत्वा ·लंकृतिकम्मनोहर तया प्रेष्या सुवेष्या वच।
उन्मेषाब्ज दृशा वुपाशन गृहं श्रीजानकी राघवौ ॥
रत्न द्योतितकं रथं परि वृतं दाशी सखी नाङ्गणै।
श्चक्राष्टाश्व विभूषितं क्वणितकं स्थित्वा मुदा जग्मतुः ॥२१॥

सुन्दर भूषणों से अलंकृत उस दूती की मनोहर तर अलङ्कारों से भरी हुई वाणी को सुनकर, अधखिले कमल के सदृश नेत्र वाले दोनों सरकार कलेऊ कुञ्ज में जाने के लिए आठ चक्र वाले आठ घोड़े जोते हुए सुन्दर भूषित रत्नों से प्रकाशमान रथ में दासी व सखीगणों से घिरे हुये बैठ करके किंकिणी आदिक बाजाओं का शब्द करते हुए आनन्द पूर्वक गये ॥२१॥

गच्छन् ता वुपभोजनस्य भवनं श्री जानकी राघवौ।
स्वल्पाभूषण नीलपीत वसनौ विद्यु द्घना वित्युभौ ।।
वर्षन्तौ निज रूप मोद सलिलं नेत्रै सखीनांद्रवं।
मार्गोवास गवाक्षकेषु वनिता नीराजय न्तीक्षणैः ॥२२॥

कलेऊ कुञ्ज में जाते हुए स्वल्प भूषण, नीलपीत वस्त्रों को धारण किये हुए बिजली और मेघ के समान श्याम गौर श्री जानकी राघव जी सखियों के नेत्रों से अपने रूप आसक्ति की अश्रुधारा को बह-वाते हुए जारहे हैं। मार्ग में दोनों तरफ के नौखन्डे महलों के छज्जाओं में खड़ी हुई स्त्रियोंकी भीड़ अपने हृदय को द्रवित करके जुगल सरकार की आरती उतार रही हैं॥२२॥

इति श्रीशङ्कर कृते श्रीअमररामायणे श्रीसीताराम रत्नमञ्जूषायां रहस्याख्याने ॥
स्नान लीलोपभोजन मन्दिरागमन वर्णनं नामाष्ट विंशतितम स्सर्गः ॥२८॥

Scanned by CamScanner

इति श्री मधुकर रूप रसास्वादिना कृता टींकायां रहस्य ख्याने स्नान लीला वर्णनं नाम अष्ट विंशतितमः सर्गः समाप्तः ॥२८॥

प्राप्ते तयोः स्यन्दनकेतु तस्या गारस्य कक्ष्यां प्रथमांसुदिव्यां ।
तदागमाऽत्यन्त मुदा सखीभि र्भैर्य्यानकाः वादयिता श्च शीघ्रम् ॥१॥

कलेऊ कुञ्ज के प्रथम आवरण में श्रीजुगल सरकार के दिव्य रथ के प्राप्त होने पर फाटक की रक्षिका सखियों ने अत्यन्त प्रसन्न होकर आगमन सूचक दुन्दुभी को शीघ्र बजाया ॥१॥

तदा मुदा तद्गृह मुख्यमान्या कराम्बुजे मङ्गल दर्शपात्रम् ।
आदाय चान्याभि रसंख्यकाभिः सीतापते रसन्मुख मायया सा ॥२॥

यह दुन्दुभी का शब्द सुनकर कलेऊ कुञ्ज की मुख्य सखी अपने करकमल में मङ्गलादर्श थाल को लेकर आनन्द पूर्वक असंख्य सखियों को साथ लेकर वह जुगल सरकार के सन्मुख आयी ॥२॥

सौदामिनीं स्याम घनेन साक मुद्वीक्ष नृत्यन्ति यथा मयूराः ।
रामेण स्यामेन तथाहि सीतां निरीक्ष नृत्यन्ति सखीगणा श्च ॥३॥

जिस प्रकार बिजली की चमक सहित मेघ की गर्जना को सुनकर मोर नृत्य करने लगते हैं उसी प्रकार श्याम घन श्रीराम जी के साथ श्रीसीता जी को देखकर सखियां नृत्य करने लगीं ॥३॥

नीराजयित्वा तु तदा तया तौ श्रीमैथिली कोशलराजपुत्रौ ।
नितम्बिनी गुम्फन वाहने ना नीतौगृहं मध्यमणि प्रकाशम् ॥४॥

प्रथम कुञ्जेश्वरी ने दोनों सरकारों की आरती की उसके बाद सुन्दर नितम्बिनी सखि समूहों की भीड़ द्वारा विमान से दोनों सरकारों को मणिमय प्रकाशमान कलेऊ कुञ्ज के बीच लिवा लायी ॥४॥

अथाञ्चिताया स्फटिकेन्द्र नीलभूमौ तुविस्तार्य्यसुवर्ण सूत्रैः ।
कौशेयकं चित्र सुभव्य वस्त्रं निवेश्य संस्थाप्य सखीगणांश्च ॥५॥

इन्द्र नीलमणि से रचित, स्वर्ण सूत्र से चित्रित स्फटिक मणि की भूमि पर सुन्दर रमणीय रेशमी वस्त्र को बिछा करके उसमें सखीगणों को बैठाया ॥५॥

मध्ये तदा मैथिल राजपुत्री मार्तण्ड वन्शेन कुमार रामः ।
संस्थापितौप्राण पर प्रियौ तौ तयाग्र सख्या हि सुरत्न पीठे ॥६॥

और उन सखिगणों की भीड़ के बीच में सुन्दर रत्न सिंहासन पर श्री मैथिल राजपुत्री व सूर्य-वंशीय राजकुमार श्रीरामजी दोनों प्रिया प्रियतम जू को कुञ्जेश्वरी ने बैठाया ॥६॥

आघ्रायि धूपश्च प्रदर्शयदीपं सुगन्धिना काम दुधाघृतेन ।
पक्वानि नानाविधि संस्कृतानि पक्वान्नकानीह सुवर्ण पात्रे ॥७॥

धूप सुघाया, दीप दिखाया, सुगन्धित कामधेनु के घी के नाना विधि से बने हुए पकवान स्वर्ण पात्रों में परस करके लायो ॥७॥

सुतेमनः षड्भि रशेष स्वादै स्तद्भोग पात्रन्तु तदग्रभागे ।
रुक्मा ब्जके विस्तृतके च धृत्वा विज्ञापनं तत्र तयोस्तयोक्तम् ॥८॥

Scanned by CamScanner

षट रस चार प्रकार के सब स्वादों से भरे हुए पक्वान्न पदार्थों को भोग-पात्र (भोजन की थाली) में रखकर श्री जुगल सरकार के आगे स्वर्ण कमल के रूप में विस्तृत चौकी पर रख दिया। दोनो सरकारों को भोजन (कलेऊ) पाने की प्रार्थना की ।।८।।

एवं सखीनामपि चक्रवाले प्रत्येक पात्रेषु सुवर्णकेषु ।
तयोपभोगं परिवेषितं तदा सुतेमनं हस्त निवारणान्तम् ।।९।।

और सब सखियों के आगे भी प्रत्येक के आगे स्वर्ण थाल सब प्रकार के भोग पदार्थों से युक्त रक्खे गये हैं और भी पदार्थ उनके हाथों से रोकने तक परसे गये ।। ९।।

सुवासितं वारि पुनः पुनः सा नानामणीनां चषके ददाति ।
श्रीजानकीराघवयोः समीपे सख्योऽष्ट मुख्या परिशीलयन्ति ।।१०।।

सुन्दर सुगन्धित जल भी परसा गया। नाना रङ्ग की मणियों के कटोराओं में और भी बहुत स्वादिष्ट वस्तुओं को बार २ परसती हैं। श्री जुगल सरकार के समीप में मुख्य आठ सखियाँ सेवा कर रही हैं ।।१०।।

एवं श्रीमिथिलाधिनाथ तनया श्रीकौशलेशात्जौ पक्वान्नै-
र्वहु तेमनै श्चिपिटकै र्दध्नाद्र कै स्तर्प्यच ।
साचम्येवं तदैलकादि सचितां ताम्बूल वीटीं ददौ-
पीठे काञ्चन के निवेश्य खचिते नीराजिता वात्मना ।।११।।

इस प्रकार श्रीमिथिलाधि नाथ तनया श्रीकोशलेशात्मज दोनों सरकारोंको विविध प्रकार की मिठाइयाँ पक्वान्न, दही, च्यूड़ा आदि पदार्थों से पवाकर तृप्त किया उसके बाद आचमन कराया, इलाइची आदिक मसालाओं पान का वीरा पवाये उस भोजन के स्थान से उठकर एक रत्न जटित स्वर्ण सिंहासन पर बैठाया और आरती की ।।११।।

अस्या भाव कृतोपचार मुदितौ श्रीजानकी राघवौ-
सर्वांगेषु विभूषणैः सुरचितु ङ्गे हे न्यके जग्मतुः ।
आस्थायेभरथं प्रकाश निवहं सार्द्ध सखीनाङ्गणै-
र्नानावस्तु करान्तकैः क्वण रसान्मञ्जीर शब्दायतैः ।।१२।।

इन कुञ्जेश्वरी की सद्भावना से पूजित अति प्रसन्न होकर दोनों सरकार फिर सर्वाङ्ग वस्त्र भूषणों से सुसज्जित होने के लिए साथ में सखियों के समूह को लेकर हाथी वाले प्रकाशमान रथ में बैठे हैं, सखियां विविध प्रकार की वस्तुओं को हाथ में लिए हुए हैं, चलते हुवे मञ्जीर (किंकिनी, नूपुर) आदि भूषणों का क्वणकार रसीला शब्द गुञ्जायमान हो रहा है। इस प्रकार एक अन्य घर (श्रृङ्गार कुञ्ज) में गये ।।१२।।

इति श्रीशङ्कर कृते श्रीअमररामायणे श्रीसीताराम रत्न मञ्जूषायां रहस्याख्याने
उपभोजन लीला वर्णनो नामैकोनत्रिंशत्तमः सर्गः ।।२९।।

इति श्री मधुकर रूप रसास्वादिना कृता टीकायां रहस्याख्याने उप भोजन लीला वर्णनो नामैकोन त्रिंशत्तमः सर्गः समाप्तः ।।२९।।

Scanned by CamScanner

तद्गेहा धिकृतापिमार्ग मनयो रुत्कण्ठया न्वीक्षते ।
नानाभूषण काङ्गराग सुविधंसम्पाद्य भूषागृहे ॥
ताव त्तावपि दम्पती छविनिधी श्रीजानकी राघवौ ।
दाशीभिः परिसेवितौ निकटकङ्क हस्य चा जग्म तुः ॥१॥

उस शृङ्गार घरकी यूथेश्वरी भी शृङ्गार घर में नाना प्रकारके भूषण अङ्गराग आदि सामग्रियों को सुन्दर विधि से सजा करके दोनों सरकारों के आने की उत्कण्ठा में रास्ता देख रही थी तब एक छवि समुद्र श्रीजानकी राघव दोनों दम्पति भी अनन्त दासियों से परि सेवित होकर शृङ्गार कुञ्ज के प्रथम आवरण में आ पहूँचे ॥१॥

तदागमानन्द निमग्न चेता गणैः समेता निजदाशिकानाम् ।
हस्तेसमादाय निराजि तुन्तौ माङ्गल्य वस्त्वऽन्वित रुक्म पात्रम् २॥

दासियों द्वारा आने का समाचार सुनते ही आनन्द मग्न हुई कुब्जेश्वरी अपनी अनन्त दासियों को साथ में लेकर अपने हाथ में मङ्गल बस्तुओंसे भरे हुए स्वर्ण पात्र को लेकर दोनों सरकारोंकी आरती के लिये बाहरी फाटक में आ पहुँचो ॥२॥

समागता तद्भवनस्य चाद्या ङ्कत्यांत्रिकद्वार चतुष्क चित्राम् ।
नीराजयित्वाहि तया तुशीघ्रं नीतौ गृहे भूषणकेऽन्तरे तौ ॥३॥

शृंगार कुञ्ज के बाहरी आवरण चित्र विचित्र चमत्कारों से चारों तरफ से चमकीले तीन मुख वाले फाटक पर आकर आरती करके शीघ्रता से दोनों सरकारों को शृङ्गार कुञ्ज के अन्तः गृह में ले आई ॥३॥

नानासुरत्नाञ्चित भूषणानाङ्करण्ड पंक्तिः प्रभयातिभाषे ।
हस्तेसमादाय गणैः सखीनां विभूषणानीह समास्थिताग्रे ॥४॥

शृङ्गार कुञ्ज में सखीगण विविध प्रकार के सुन्दर रत्न जटित भूषणों की प्रकाशमान करण्डियो को लेकर पंक्ति की पंक्ति खड़ी हैं ॥४॥

नेपथ्यका मैथिलराजपुत्री श्री कौशलाधीशकुमाररामौ ।
सिंहाशनाशीन कृताङ्ग रागौ सा लङ्करो त्यङ्ग विभूषणैश्च ॥५॥

कुब्जेश्वरी सामने होकर श्रीजुगल सरकार का शृङ्गार कर रही हैं। श्रीमैथिलराज पुत्री और कोशलाधीस कुमार श्रीरामजी सिंहासन पर बैठे हुये हैं। अंग में अंगराग और सुन्दर भूषणों के अलङ्कारों से शृङ्गार की शोभा प्रकाश कर रही है ॥५॥

तस्या अनन्ता निपुणा हि सख्यः परार्द्ध रत्नैः खचितानि हस्ते ।
सुकाञ्चने सम्पुटके च धृत्वा स्वादाय सर्वाश्च समास्थिताग्रे ॥६॥

कुब्जेश्वरी जी की अत्यन्त चतुरी अनन्त सखियां बिसकीमतीय रत्नों से खचित भूषणों के स्वर्ण संपुटें हाथों में लेकर दोनों सरकार के अगल बगल में खड़ी हैं ॥६॥

Scanned by CamScanner

आदाय चादाय सुमण्ठिता सा ताभ्योयदङ्गस्य यदीप्सितम्वे ।
विभूषणं भूषयति प्रवीणा श्रीजानकीराघवयोः शुभाङ्गे ।७॥

सुन्दर भूषणों से भूषित, अत्यन्त प्रवीणा कुञ्जेश्वरी अपनी सखियों के हाथों से भूषणों को ले ले करके जो भूषण जिस अङ्ग में अभिलाषित है उसी तरह से श्रीजुगल सरकार के अङ्गों में शृङ्गार कर रही हैं ॥७॥

चूड़ामणी चन्द्रला किरीटं सुकर्णिका कुण्डलके सु दिव्ये ।
मुक्तान्य रत्नैः खचिताप्रदीप्ता सुवाल पाश्यापि ललाटिकाच ॥८॥

श्रीकिशोरी जू के सिर की चूड़ामणि (चोटी की मणि) श्री सरकार के सिर के मुकुट का क्रीट ये दोनों चन्द्रमा सदृश किरणों को फैला रहे हैं। श्रीकिशोरी जी के कानों की तरकी (तरवन) और सरकार के कानों में कुण्डल-दोनों दिव्य हैं। श्रीकिशोरीजी का सीमन्त भूषण (सीमन्तमें बांधी हुई स्वर्ण पाठी) (मांगलर) और वैना (वेंदा) (मांगटीका) ये दो भूषण मुक्तादि मणियों से खचित प्रकाशमान हो रहे हैं ॥८॥

ग्रैवयेकञ्चैव ललन्तिका च प्रालम्बिका चैव तयो रसूत्रिका ।
एकावली मौक्तिक सञ्चिता सा नक्षत्रमालातु तदुन्मिता स्यात् ॥९॥

कण्ठभूषा अर्थात् (चम्पाकली), (कण्ठा) कण्ठी (नीलमणि वाली दुलरी गलपोती), सौने की नाभि तक लम्बी माला, मोतियों की कण्ठी, एक लर वाली मोतियों की माला, एक नक्षत्र माला, (२७ मोतियों की छोटी इकलरी माला) शोभित हो रही हैं ॥९॥

गुत्सश्च गुत्सार्द्धक गोस्तनाद्याः कार्त्तस्वरा वर्द्धित सूत्रकैस्तु ।
सुग्रन्थिता मिश्रितकाश्च नीलै र्हाराइभानाम्मणिभिः प्रसस्ताः ॥१०॥

एक बत्तीस लर वाला हार, एक चौबीस लर वाला हार एक चौसठ लर वाला हार, आदि शब्द से एक बारह लर वाला हार, एक तीस लर वाला हार-ऐसे और भी अनेक स्वर्ण सूत्रों से गुथे हुए बहुत सी ग्रन्थि वाले बहुत सी बे ग्रन्थि वाले, बहुत से नील मणियों से मिश्रित गज मुक्ताओं के हार जो कि बड़े प्रशंसनीय हैं ॥१०॥

नानासुरत्नैः खचितानिदिव्य स्केयूरकानीह सुवर्ण कानि ।
परार्द्धसौवर्णक पारिहार्य्य स्तथोर्म्मिका चांगुलि मुद्रिका च ॥११॥

और रङ्ग र के सुन्दर नाना रत्नों से खचित विजायट (अङ्गद, बाजूबन्द) स्वर्ण के बने हैं और बिसकीमती स्वर्ण की कण्कण पहुँची, अँगूठी (छल्ला) तथा नामाङ्कित मुद्रिकायें भी अति शोभित हैं ॥११॥

पादांगुदं सारसनञ्च नार्य्यः पुंसस्तथाशृङ्खलकं च कथ्याः ।
इत्याद्यनन्तैस्तु परार्द्ध रत्नैः परिस्कृतानीह विभूषणानि ॥१२॥

पायजेब, करधनी, तागड़ी, शृंखला (पुरुष की तागड़ी) इत्यादिक असंख्य दाम वाले रत्नों से बने हुए अनन्त भूषण श्रीजुगल सरकार के अंगों में शोभित हैं ॥१२॥

Scanned by CamScanner

अलंकृतौ तैर्जनकात्मजा श्रीरामौ तया काञ्चन नीलकान्तौ ।
सौवर्ण सूत्राञ्चित दिव्य साटी चण्डान्तकं चित्र विचित्र रागम् ॥१३॥

इस प्रकार श्रृङ्गार कुञ्ज की कुञ्जेश्वरी ने तप्त-स्वर्ण और नीलमणि के सदृश श्याम गौर दोनों सरकारों को स्वर्ण सूत्र से निर्मित दिव्य पीताम्बरी तथा साड़ी व चित्र विचित्र रङ्ग का लहँगा पहनाया ॥१३॥

सु पीतचोलो रघुनन्दनांगे एवं हि वस्त्रैरपि संस्कृतौ तौ ।
आघ्रायि धूपञ्च प्रदर्श्य दीपं तदा तया काञ्चनके सुपात्रे ॥१४॥

श्रीरघुनन्दन जू के अंग में पीत रङ्ग का चोल (आङ्गी) पहिनाया। इस प्रकार सुन्दर वस्त्र भूषणों से दोनों सरकार का श्रृङ्गार करके धूप सुघाया, दीप दिखाया फिर स्वर्ण के दिव्य पात्र में ॥१४॥

दिव्याशन म्मोदक पूपकाद्यं सुकारयित्वा चमनं पुनश्च ।
एला लवंगै करपूरमिश्रा दत्ता सुवीटी वरनागवल्याः ॥१५॥

लड्डू, पूआ आदि दिव्य पदार्थों को पवाकर जल पिला के आचमन कराया। इलाइची लौंग कपूर आदि मसालाओं से बना हुआ नागवल्ली नाम का बीरा दिया ॥१५॥

सहस्र दण्डान्वित रत्नपीठे निवेश्य सीता रघुनन्दनौ सा ।
गानैश्च वाद्यैश्च चतुष्प्रकारैः सुनर्तनैः पुष्प सुवर्षणैश्च ॥१६॥

उसके बाद एक हज़ार दण्डा वाले एक और रत्नजटित सिंहासन पर बैठाकर श्रीजुगल सरकार को गान वाद्य, नृत्य, पुष्प वर्षा-इन चार प्रकारों से प्रसन्न किया ॥१६॥

दीपाष्टकं मंगल बस्तु युक्तं निधाय चामीकर पात्रेकच ।
नीराजयत्येव मुदा सु मुख्या श्रृंगार गेहस्य सखी प्रवीणा ॥१७॥

और एक स्वर्ण के थाल में आठ बत्ती तथा और भी माङ्गलिक वस्तुओं को रखकर अति प्रसन्नता से बड़ी चतुरी श्रृंगार कुञ्ज की यूथेश्वरी ने आरती की ॥१७॥

प्रीते स्तदास्या बिबिधो पचारा नाऽलंकरिष्णो र्विमला न्समृद्धान् ।
प्रीत्या नुभूत्वा जनकात्मजा श्रीरामौसुभूषा परिशोभमानौ ॥१८॥

विविध निर्मल सम्पत्ति वाले अलङ्कारों से श्रृङ्गार करने की अत्यन्त अनुराग मयी इच्छा वाली इस कुञ्जेश्वरी के प्रेमका अनुभव करके दिव्य वस्त्र भूषणों से भूषित परम शोभायमान श्रीजनकात्मजा व श्रीरामजी ॥१८॥

स्थित्वा बिमाने रवि कोटिभासे चाक्षु विलासे च गणैः सखीनाम् ।
आजग्मतु दिव्य मणि प्रकाशे शभा गृहे मध्य विशाल कक्ष्ये ॥१९॥

करोड़ों सूर्यों के समान प्रकाशमान अनन्त सखिगणों नेत्र-विलास वाले विमान में बैठकर दिव्य मणियों से प्रकाशमान कई आवरण वाले तथा कई खण्ड वाले विशाल दिव्य सभा मण्डप के मध्य आ पहुँचे ॥१९॥

इति श्रीशङ्कर कृते श्रीअमररामायणे श्रीसीताराम रत्नमञ्जूषायां रहस्याख्याने
शृंगार समय वर्णनो नाम त्रिंशत्तमः सर्गः ॥३०॥

इति श्री मधुकर रूप रसास्वादिना कृता टीकायां रहस्याख्याने शृङ्गार समय वर्णनो नाम नाम त्रिंशत्तमः सर्गः समाप्तः ॥३०॥

पराः परार्द्धा नरराजपुत्र्यो रामस्यभार्य्या विधिना बभूवुः ॥
गन्धर्व राजाप्सरसाश्च पुत्र्य स्तथैव नागाष्ट कुलोत्तमानाम् ॥१॥

असंख्य प्रधान राजकन्यायें विधान पूर्वक प्राप्त हुईं श्रीराम जी की भार्य्या हैं। इसी प्रकार विधान पूर्वक प्राप्त हुईं गंधर्व राजों की तथा अप्सराओं की भी कन्यायें और उसी प्रकार नागकुल के उत्तम अष्ट नाग राजों की कन्यायें श्रीराम जी की भार्य्या हैं ॥१॥

नित्यं समाजोभवतीहतासां शुभागृहे नित्यमहोत्सवासे ॥
स्वस्याश्च स्वस्याश्च समाज कैस्ता यथाधिकाराशन माश्रयन्ते ॥२॥

इन सबका तथा और भी बहुत सी स्त्रियों का सभा महल में नित्य महोत्सव समाज होता है। ये सब जाति वाली कन्यायें अलग २ समाज बनाकर अपने २ अधिकार के अनुसार विलास वास करती हैं ॥२॥

तद्गेहकक्ष्यां प्रथमा ङ्गतौ तौ श्रीजानकीराघव सुन्दराङ्गौ ॥
नीराजितौ तद्गृह मुख्ययेत्य प्रबन्धगानै स्थनृत्य वाद्यैः ॥३॥

जुगल सरकार जिस समय उस सभा महल के प्रथम आवरण के फाटक पर पहूँचे उसी समय उस महल की मुख्य यूथेश्वरी अनेक प्रकार प्रबन्धों से गान वाद्य नृत्य करके सुन्दर अङ्ग वाले श्रीजानकी राघव जी की आरती की ॥३॥

समागते तत्र च सीतया श्रीरामे मयङ्काननयाम्बुजाक्षे ॥
उत्थाय चोत्थाय विशुद्धभावा ज्येष्ठा युतं प्राणपतिं ववन्दुः ॥४॥

सभा मण्डप में लिवा कर बैठाया, चन्द्रमुख कमलनयन श्रीसीता राघव जी को उन विशुद्ध भाव वाली मुख्या से लेकर क्रमशः छोटी बड़ी सबने अपने प्राणपति को बार बार उठ उठ करके प्रणाम किया ॥४॥

कुलेन रूपेण गुणैः समानयोः पीठे लस द्दिव्य तडिद्घनाभयोः ॥
तासां निपेतु नयनानिषट् पदः श्रीजानकीराघवयो मुखाम्बुजे ॥५॥

और अपने कुल रूप व गुण की यथा योग्यता से उचित स्थानों पर समान रूपसे बहुत विशाल रूप में बने हुए उस सिंहासन पर बिजली और मेघ के समान श्याम गौर छवि वाले श्रीराघव जी के मुख कमल में अपने नेत्रों को भ्रमर बना करके सबकी सब बैठ गयीं ॥५॥

किमत्र चैकत्र त्रिलोकयन्त्यो प्यहो निशं नित्य निषेवयन्त्यः ॥
नयान्ति तृप्तिं जनकात्मजाया रामस्य रूपार्णव वारि पानात् ॥६॥

नित्य रात दिन सेवा करती हुई रूप-समुद्र श्रीजनकात्मजा राम जी के शौन्दर्य रूप जल का एक रस रात दिन पान करती हुई भी क्या यहां पर तृप्त नहीं होती हैं ? (अर्थात् अवश्य होती हैं) ॥६॥

Scanned by CamScanner

ऐकान्तकीयं सुदृशां शभाया शौन्दर्य माधुर्य्य विलाश पूर्णा ॥
भोक्ता रसज्ञो रघुनन्द एको विराजते तत्र विनोद कारी ॥७॥

यह सुन्दर नेत्र वाली स्त्रियों के शौन्दर्य माधुर्य विलास पूर्ण एकान्तकीय सभा में बिनोद करने वाले रसज्ञ एक रघुनन्दन ही भोक्ता विराजमान हैं ॥७॥

पत्यु विनोदाय मुदा स्वयन्ता नृत्येन गानेन च कौतुकेन ॥
विलक्षणन्तत्र विकाशयन्ते चातुर्य्यभावं प्रमदाः प्रवीणाः ॥८॥

उस सभा मण्डप में प्रवीण (चतुर) स्त्रियायें अपने प्रियतम के विनोद के लिए अत्यन्त प्रसन्न होकर स्वयं नृत्य गान कौतुक के द्वारा अपने विलक्षण चातुर्य मय भावों का विस्तार करने लगी ॥८॥

स्या त्कापि कस्या मपि कापि कस्यां प्रिया कलायां रघुनन्दनस्य ॥
विचक्षणा तत्रमिथप्रवादा जिज्ञासुकानामपि बोध लाभः ॥९॥

कोई प्रिया रघुनन्दन जी की कला की, कोई प्रिया श्रीप्रिया जू की कला की आप प्रशंसा करती हुई आपस में बड़ी सूक्ष्म बुद्धि पूर्वक अपने विजय की चेष्टा से दूसरे को जीतने के लिए एक दूसरे से विवाद करने लगीं। यह पारस्परिक विवाद जिज्ञासु पुरुषों के लिए भी जुगल सरकार के दिव्य गुणों का बोध कराने वाला है ॥९॥

काचित्तु शब्द प्रक्रिया प्रवीणा स्वर्थांश्च सम्पादयति त्वनेकान् ।
विचक्षणा कापि च चित्र काव्ये काठिन्यभावं प्रकटी करोति ॥१०॥

कोई सखी शब्द प्रक्रिया में अनन्त प्रवीणा अनेक प्रकार के स्वार्थों का सम्पादन करती है। कोई सूक्ष्म बुद्धि वाली सखी चित्र विचित्र काव्यों में बड़े कठिन २ भावों को प्रकट करती है ॥१०॥

चित्रप्रवीणापि विचित्र भावान्निदर्शं यत्येव सुकल्प्य मूर्तिम् ॥
ज्योति विंदा कापि बिशंख्यकानां विद्यावलेनैव करोति शंख्याम् ॥११॥

कोई चित्र बनाने में प्रवीणा सुन्दर एक मूर्ति की कल्पना करके विचित्र भावों में दिखाती है। कोई ज्योतिष विद्या में पण्डिता सखी अपने विद्या बल से असंख्य बस्तुओं की संख्या बताती है ॥११॥

विजित्य वाक्यानि समन्ततश्च चातुर्य्यभावादपि पण्डिता सा ॥
प्रस्ताव वार्त्तासुपरम्पराभि निंजं यदुक्त म्प्रवली करोति ॥१२॥

कोई पण्डिता सखी परम्परागत प्रस्ताव रक्खे हुये वार्ताओं में बड़े चातुर्य भाव से उसने जो कुछ कहा है उन सबकी बातों को चारों तरफ से जीत कर अपनी बात को प्रबल करती है ॥१२॥

उद्घाट्य पाडित्य मतिप्रभावा नाविष्करोत्येव पुनर्यथार्थान् ॥
प्रतिज्ञया कापि सुविज्ञबाला प्रश्नस्य मालां प्रकरोतिपूर्णाम् ॥१३॥

कोई बुद्धि की विलक्षण प्रभा वाली अपने पान्डित्य का उद्घाटन करती अनेक प्रकार के प्रश्नों की मालाओं को प्रगट कर देती है और कोई सुन्दर तत्व वेत्ता बाला प्रतिज्ञा करके उसके सब प्रश्नों की माला का यथार्थ अर्थ करके माला को अर्पण कर देती है ॥१३॥

Scanned by CamScanner

बलेन तन्त्रस्य हि तन्त्र वेत्री काप्यन्यतस्त्वन्यतरं दधाना ॥
प्रादर्शय त्कौतुहलं शभायाम्बुद्धिभ्रमं यात्यपि पण्डितानाम् । १४॥

कोई तन्त्र विद्या की पण्डिता बाला तन्त्र के बल से कुछ का कुछ धारण करके दिखा देती हैं। इस प्रकार सभा अनेक कौतुकों को दिखा कर बड़े २ पन्डितों की बुद्धि को भी भ्रम में डाल देती है ॥१४॥

तत्रैकया गुह्यक कन्यायातु प्रदर्शितं गुह्य चरित्र चित्रम् ॥
अन्योन्यमात्मान मेवेक्षयन्ति रामाङ्कलग्ना अपि वस्त्रहोनाः ॥१५॥

उस सभा में कोई गुह्यक जाति की देवकन्या ने एक गूढ़ चरित्र का चित्र दिखाया। वह गुह्यक कन्या ने यद्यपि वस्त्रहीना है, श्रीरामजीके अङ्कमें चिपकी है. सब कोई अपनी आत्माको ही देखने लगे॥१५॥

मायेव जानन्त्यपि लज्जिता स्ता साक्षात्समालोक्य वभूवु रेव ॥
स्वस्यप्रभावेन निवर्त्त्य तस्याः साभ्रामिता मन्त्र बलात्कया च ॥१६॥

देखने वाली सब सखियां यह माया है ऐसा जानती भी हैं साक्षात् प्रत्यक्ष इस विचित्र चरित्रको देख करके लज्जित हो गयीं, कोई सखी मन्त्र के बल पर अपने प्रभाव से उस गुह्यक कन्या को भ्रमित करके उसकी इस लीला को निवृत्ता कर दिया ॥१६॥

काश्चित्तु रागाङ्ग समस्त वेत्र्य आरोप्य संख्याहि परस्परं ताः ॥
प्रादर्शयन्त्यः प्रगुणी कृतान्तां विद्या विनोदाय नवीन नार्य्यः ॥१७॥

कोई रागों के समस्त अङ्गों को जानने वाली नवीनावस्था वाली स्त्रियायें विनोद के लिये कई गुना बढ़ायी हुई अपनी विद्या को परस्पर में संख्याओं का आरोप लगा करके अपनी विद्या को दिखाती हुई विनोद कर रहे है ॥१७॥

कुर्वन्तिगानं स्वर सञ्चनेन हस्तेनताला नपि वादयन्त्यः ॥
काश्चित्प्रवीणाः सुषिरं घनञ्च नद्धं ततंश्चापि सुवादयन्ते ॥१८॥

हाथों से तालों को वजाती हुई, सातों स्वरों को सन्चित करके गान करती है। कोई प्रवीणा वंशी हारमोनिय आदि हवा के बाजाओं को, कोई झांझ, मजीरादि काँसाओं के बाजाओं को, कोई वीणा सितारादिक तार के बाजाओं को सुन्दर तरह से बजा रही हैं ॥१८॥

नृत्यन्ति काश्चि त्सुगति प्रवीणा मयूर हंशादिक षोडशैश्च ॥
विमोहयन्त्यस्तु पतिं रसज्ञं रामं स्वयङ्काम कलाप कान्तम् ।१९॥

कोई मयूर हंसादिक सोलह प्रकार की गतियों को जानने वालीं नृत्य कर रहीं हैं, स्वयं काम के कलापों को भी विजय करने वाली कान्त, रसज्ञ, पति श्रीराम जी को मोहित कर रही हैं ॥१९॥

रमो मा सावित्री मदन रमणीशक्र रमणी घृताची रम्भाद्याः कनकभवने चात्रसदसि ॥
निषेवन्ते नित्यं जनकतनया पाद युगलं स्वलोका दागत्य प्रतिदिनमथो यान्ति सकलाः ॥२०॥

इस प्रकार नित्यप्रति कनकभवन में श्रीसीताराम जुगल सरकारके इस सभा में लक्ष्मी, पार्वती, सावित्री, रति सची, घृताची, रम्भा आदि सम्पूर्ण विश्व की उत्तम स्त्रियायें आकर श्रीजनकजाया जू के जुगल चरण कमलों की नित्य सेवा करती हुई दर्शन करके अपने २ लोकों में जाती हैं ॥२०॥

Scanned by CamScanner

वार्तां कौतुक राग शास्त्रविषयां शौन्दर्य सद्वैभवां ।
न्नारीणामनुभाव्य स्वस्य सुदृशामानन्द मग्न स्थितौ ॥
तावद्भोजन मन्दिरस्य सुदृशा प्रेष्या स्वयम्प्रेपिता ।
श्रुत्वा तद्विनयं समाजसहितौ तौ दम्पती जग्मतुः ॥२१॥

सुन्दर नेत्रवती अपनी नारियों के रागशास्त्र विषयक कौतुक शौन्दर्य आदि सद्वैभव वाली वार्तायें अनुभव करके, कराके आनन्द समुद्र में मग्न दोनों सरकार सभा कुञ्ज में बैठे हैं तब तक भोजन कुञ्ज की सुन्दर नेत्र वाली प्रिया की भेजी हुई दूतियां समाज सहित श्रीजुगल सरकार के समीप आकर विनय की, दोनों सरकार उस विनय को सुनकर भोजन कुञ्ज के लिए चल दिये ॥२१॥

इति श्रीअमररामायणे श्रीशङ्कर कृते श्रीसीताराम रत्न मञ्जूषायां रहस्याख्याने शभाप्रसंग वर्णन न्नामैक त्रिशत्तमः सर्गः ॥३१॥

इति श्री मधुकर रूप रसास्वादिना कृता टीकायां रहस्याख्याने सभा प्रसङ्ग वर्णनं नामैक त्रिशत्तमः सर्गः समाप्तः ॥३१॥

गच्छन्तौ गजवाहनेन मिथिलानाथात्मजा राघवौ–
मार्गे भोजन मन्दिरस्य वनिता कोट्यर्व खर्वान्वितौ ।
मार्गावास गवाक्षकेपि सुदृशो नीराजयन्त्य द्भुतां–
शोभांवीक्ष्य मुदं प्रयान्ति सततं कान्तस्य रामस्यवै ॥१॥

श्रीमिथिलानाथात्मजा व श्रीराघव जी करोड़ों अर्व खर्व वनिताओं के साथ हाथी के रथ में बैठकर भोजन कुञ्ज के मार्ग में जारहे हैं। रास्ते में दोनों तरफ के नौखण्डा महलों के छज्जा दरवाजाओं में सुन्दर नेत्र वाली स्त्रियायें कान्त श्रीरामजी की क्षण २ नवीन आनन्द को देने वाली अद्भुत शोभा को देखकर आनन्द में मग्न हुई आरती कर रही हैं ॥१॥

श्रीरामंघनसुन्दरं जनकजा सौदामिनी सत्प्रभां–
वाद्यानां ध्वनि गर्जितं च शिखिनो दृष्ट्वा समाकर्ण्यच ।
नृत्यन्तो मणिमन्दिरोच्च शिखरे शोभां विदध्युः परां–
तच्चालोक्य सुदम्पती शुशुभतुः प्रोद्दर्शका प्रेक्षणौ ॥२॥

सुन्दर मेघ की तरह सुन्दर श्याम श्रीराम जी सुन्दर बिजली की तरह श्रीजनकजा जी इन दोनों की सुन्दर शोभा को देखकर तथा मार्ग में गर्जित बाजाओं की ध्वनि को सुनकर मणि मन्दिरों के ऊँचे शिखरों पर मोर नृत्य कर रहे हैं। इस शोभा को देखकर दोनों दम्पत्ति श्रीसीताराम जी अति प्रसन्न हो रहे हैं, ऐसा दृश्य दर्शकों ने देखा ॥२॥

इत्थं त्रिलोक तरुणी मणि कण्ठ रत्नो–
मार्तण्डवन्श मणिपंक्ति रथात्मजो सौ ।
श्रीसीतया सहमुदा प्युदिताम्बुजाक्ष्यो–
मध्यान्हकाशन गृहान्ति कमाजगाम ॥३॥

Scanned by CamScanner

इस प्रकार तीनों लोकों की उत्तम तरुणियों के कण्ठ रत्न सूर्य वंशज श्रीमहाराज दशरथ जी के आत्मज ये श्रीरामजी श्रीसीताजी के साथ कमल सदृश नेत्रोंसे सबको देखते हुये प्रसन्नताके साथ मध्याह्न भोजन कुञ्ज के समीप आ पहुँचे ॥३॥

श्रुताम्बुजायत दृशां पदभूषणानां वाद्यौघकध्वनिमपीह समाजकस्य ।
साप्यागताशन गृहाधिकृता सखीनां स्वस्यागणै रभिमुख प्रिययाप्रियस्य ॥४ ।

कमल सदृश विशाल नेत्र वाली सखियों के चरण भूषणों की तथा बाजाओं की महान् ध्वनि को सुनकर भोजन कुञ्जकी अधिष्ठात्रिणी अपनी सखिगणों को साथ लेकर श्रीप्रिया प्रियतम जू के स्वागत के लिए सन्मुख आयीं ॥४॥

नीराजितौ नवसरोज विशाल नेत्रौ श्रीजानकी रघुवरौ गजस्यन्दनस्थौ ॥
दिव्याङ्गनाङ्ग परिगुम्फन वाहनेना नीतौ तयाशन गृहान्तर रत्नभूमौ ॥५ ।

भोजन कुञ्ज की यूथेश्वरी ने नवीन कमल के समान विशाल नेत्र वाले दिव्याङ्गनाओं से परि-गुम्फित, हाथी के रथ में बैठे हुए श्रीजानकी राघव जी की आरती की उसके बाद हाथीके रथसे रत्नमयी भूमि पर उतार कर भोजन कुञ्ज के अन्दर लिवा लायी ॥५॥

कृत्वार्घ्यं मङ्गल विधि परिवर्त्य मुक्तामाल्यानि शैन्धवमथैव च कृष्णिकाश्च ॥
वासो विभूषण मुपार्ज्य तया तयोर्वै प्रक्षालितं पदयुगं नलिनी दलाभम् ॥६॥

रत्नमयी बेदी पर बैठा करके पहले अर्घ्य पाद्य आदि भूमि पर मङ्गल विधि को करके उसके बाद मुक्ता मणिमालाओं को न्यौछावर करके तथा राई लोन उतार करके फिर दोनों सरकारों का स्वल्प वस्त्र भूषणों का निर्माण करके फिर नलनी (कमलिनी) दल के समान सुकुमार अरुण दोनों सरकारों के चरणों को कुब्जेश्वरी ने धोया ॥६॥

संस्थाप्य रत्न खचितां सुक विस्तराढ्ये वस्त्रैकशोभित मनोहर दम्पतीतौ ॥
सिंहाशने व्यजन काञ्चन वारिपात्रा न्यादाय सेवन विधौ प्रमदा परिस्थे ॥७॥

रत्नों से खचित वस्त्रो के बिस्तर वाले सिंहासन में एक २ वस्त्र को पहने हुए मनोहर दम्पतियो को बैठाकर व्यजन, स्वर्ण की झारी जलपात्र आदि सेवा की सामग्रियों को लेकर स्त्रियायें (प्रमदायें) अगल बगल खड़ी होगयीं ॥७॥

पात्रे निधाय बहुश श्चषकान्सुवर्णे नाना सुरत्न रचितान्धृत तेमनांश्च ॥
उष्णान्तु भोजन मथो विधिना चतुष्क षड्भिरसै रशनगेहकयाहि नीतम् ॥८॥

स्वर्ण पात्र में नाना प्रकार की रत्न रचित कटोरियों कौ रखकर विविध प्रकार के ताजे पदार्थों को रखकर (परस कर) तथा थालों में षटरस चार प्रकार के भोजनों को परस कर कुब्ज की यूथेश्वरी लेकर आयी ॥८॥

अग्रे तदा जनकजा रघुनन्दयोः सा स्थित्वा सुकारयति भोज्यविधान दृष्टिम् ॥
यद्रोचते धिकतया जनकात्मजायैः रामायवा किमपि तद्विपुलं ददाति ॥९॥

वह कुब्जेश्वरी उस समय श्री जनकजा रघुनन्दन जी के आगे बैठकर सुन्दर भोजन के विधानो में दृष्टि करा रही है । श्री जनकात्मजा जी और श्रीराम जी को जो भी वस्तु अधिक रुचिकर होती है उसे कोई भी वस्तु को बहुत परसती है ॥९॥

Scanned by CamScanner

अन्याभगिन्यो जनकात्मजाया रामस्यभार्य्या मिथिलेन्द्र पुत्र्यः ॥
देशान्तरीयावनि पालपुत्र्यः सम्बन्धतस्ता अपि तत्समानाः । १०॥

श्रीजनकात्मजा जी की बहिन जो मिथिलापति महाराज की पुत्रियां हैं श्रीरामजी की भार्य्या हैं तथा और अन्य देशके राजाओंकी कन्या वे भी सम्बन्ध से उन किशोरी जी के समान हैं॥१०॥

रत्नाशने ताः परितो विरेजुः सुधाशन ङ्काञ्चनके सुपात्रे ॥
अश्नन्ति तासां परिवेषयन्ति तद्गेहका याः परिचारिकावै ॥११॥

रत्न सिंहासन पर बैठे हुए दोनों सरकारों को अगल बगल चारों तरफ बैठी हुई उन सबको भी भोजन कुञ्ज की जो भी परि चारिका हैं वे सुन्दर स्वर्ण पात्रों में अमृत के समान भोजन सामग्रियों को उन सबके लिए भी परस रही हैं, वे सब साथ ही पा रही हैं ॥११॥

वीणा स्वरी कापि करे सुवीणा मादाय गानम्मधुरस्वरेण ॥
सारङ्गरागेण समूर्छनञ्च करोति सीता प्रियरोचनाय ॥१२॥

कोई वीणा में स्वर भरी हुई सुन्दर वीणा को सुन्दर तरह से हाथ में लेकर गान कर रही है। श्रीसीताप्रिय के रुचि बढ़ाने के लिए सारङ्ग राग से मूर्छना पूर्वक मधुर स्वर से गा रही है॥१२॥

बिलम्बकारं कुरुतां सुभोजनं सर्वप्रिय प्राणपरप्रियौ तौ ॥
इत्या शयेनाम्बुज सुन्दराची बिलक्षणा ङ्कापि करोति वार्त्ताम् । १३।

कमल सदृश विशाल नेत्र वाली कोई विलक्षण सबको प्रिय लगने वाले दोनों श्री प्रियाप्रिय जू भोजन को बड़ी देरी तक करते रहे इस आशय से वार्ता करती है ॥१३॥

इत्थं तया भोजन मम्बुजाच्या सुकारितं राघवसीतयोर्वै ॥
आदाय चामीकर बारिपात्र ङ्करे पुनश्चाचमनं स्वयंहि॥१४॥

कमल के सदृश नेत्र बाली उस कुञ्जेश्वरी ने श्रीराघव सीताजी को भोजन कराया, उसके बाद स्वर्ण के जलपात्र को हाथ में लेकर स्वयं ही आचमन कराया ॥१४॥

गृहान्तरं प्राण परप्रियौ तवानीय नव्यांसुक भूषणैश्च ॥
संस्कृत्य सौगन्धि सुपुष्पमाल्यैः पर्य्यांनिवेश्याथ ददौ सुबोटिम् ॥१५॥

और प्राणों से अति प्रिय दोनों सरकारों को दूसरे घर में लाकर के नवीन बस्त्र भूषणों से शृङ्गार किया, सुगन्ध आदि सुन्दर पुष्पों की मालाओं से पर्यंक की रचना करके उस पर बैठाया और सुन्दर पान का बीरा हाथ में दिया ॥१५॥

यथाम्बुजाचो बहुशश्चतस्य वस्त्रैः सुगन्धैश्च सुबीटिकाभिः ॥
सम्मानिताः सर्वसुकिंकरीभि स्तत्रागता यत्र सुम्पतीस्तः ॥१६॥

कुञ्जेश्वरी के अनुचरियों ने श्रीजुगल सरकारके साथ की कमलनयनी सब सखियों (वनिताओं को वस्त्र सुगन्धि, पान-बीरा आदिक बस्तुओं से सम्मान किया और वे सब जहां जुगल सरकार बिराजे हैं वहाँ पर आ पहुँची ॥१६॥

Scanned by CamScanner

शय्यां समाशीन सुकारिताशनौ ताम्बूल रागाधर शोभनारुणौ ॥
तौ दम्पती तत्र तया नीराजितौ गानैश्च वाद्यैश्च सुपुष्प वर्षणैः ॥१७॥

भोजन करके पर्यङ्क पर बैठे हुए; पान के चर्वण से अरुण अधर वाले दोनों सरकारों की कुञ्जेश्वरी ने उस स्थान पर गान वाद्य पुष्प वर्षा पूर्वक आरती की ॥१७॥

स्वापं विधातुम्मिथिलेन्द्र पुत्र्या मध्याह्नकं वेश्मनि तत्र सख्यः ॥
प्रज्ञापिता सर्वसमान शीला दत्वा स्वहस्तेन च वीटिकां च ॥१८॥

श्री प्रियतम जू श्री मिथिलेस पुत्री जी के साथ मध्याह्न शयन कुञ्ज में शयन करेंगे इस प्रकार के विधान को; समान शीलवाली अपनी सब सखियों के लिये अपने हाथ से पान देकर, जनाया ॥१८॥

वेला व्यतीता कुरू भोजनं त्वं नाश्नासि सार्द्धं हठतः सदात्वम् ॥
सखीति शब्देन तदाहि सीता ताम्प्रत्युवाचेति वचः सुखाप्तम् ॥१९॥

हे सखी ? भोजन का समय बीत रहा है जाओ भोजन करो। मैं हमेशा तुमको अपने साथ पवाना चाहती हूँ परन्तु तुम हठ से मेरे साथ भोजन नहीं करती हो। इस प्रकार के सुख से भरे हुए शब्दों में श्री सीता जू ने कुञ्जेश्वरी को कहा ॥१९॥

यास्यामि चेत्कुरू मदीप्सितमत्रगेहे मध्याह्निकं प्रबलधर्म्मं हरोपचारे ॥
ताम्बूलवारि कुसुमाञ्जित गन्धसश्री एलालवङ्ग घन सारक चन्दनैश्च ॥२०॥
पुष्पैःसुगुम्फित नवैर्व्यंजनैर्विचाल्ये र्बालाभिराभिरभितः परिसेव्यमाना ।
स्वापं सरोज नयने रघुनन्दनेन शय्या त्वदर्थं रचिता हि मया श्रमेण ॥२१॥

मैं तब जाऊँगी जब आप इस मध्याह्निक शयन कुञ्ज में पान; गुलाब जल, चन्दन, अतरादिक सुगन्ध, इचायची, लौंग कपूर, चन्दन, फूलों से गुम्फित नवीन व्यजन इन सेवा सामग्रियों से इन सब सखियों द्वारा चारों तरफ से सम्यक् प्रकार सेवित होकर के कमल सदृश नेत्र वाले इन श्री रघुनाथ जी के साथ, बड़े परिश्रम के साथ आप के लिए मेरी बनायी हुई इस पर्यङ्क में आप शयन कर जाँय और मेरे प्रवल धर्म रूप एकान्तिकी सेवा में आप मेरी इच्छा को पूर्ण कर दें तो तब मैं भोजन करने जाऊँगी ॥२०॥ २१॥

त्वद्वाञ्छया शयनमत्र गृहे करोमि स्वापायनेप्यधिकृते हृदि मन्यते किम् ॥
भोक्तुं प्रयाहि तदपीप्सितकं हि कूर्वे श्रुत्वेति सुन्दर गिरं जनकात्मजायाः ॥२२॥

श्री किशोरी जी बोलीं कि तुम्हारी इच्छा से मैं इस शयन घर में शयन करूँगी। मैं सोने के लिए तैयार भी हूँ तो भी तुम्हारे हृदय में यह अन्य बात क्यों आ गयी। तुम भोजन करने केलिए जाओ; तुम्हारी जो कुछ भी इच्छा होगी उसे भी मैं पूरा करूँगी। इस प्रकार के श्री जनकात्मजा जी के शब्द को सुनकर ॥२२॥

सेवाविधौ सहचरीः सकलाष्टवर्षाः लावण्य सौरभ कलाञ्चित भूषिताङ्गाः ॥
शय्यान्तिके परिनियोज्य तथा वहिश्च भोक्तुं गताशन गृहाधिकृता मुदावै ।२३।

आठ वर्ष वाली लावण्यता, सुगन्धि, विलास कलाञ्चिता; सुन्दर भूषित अङ्ग वाली सहचरियों को पर्यङ्क के पास सेवा विधि में सम्यक् प्रकार नियोजित करके भोजन कुञ्ज की यूथेश्वरी आनन्द मग्न होकर भोजन के लिए शयन कुञ्ज से बाहर गयी ॥२३॥

Scanned by CamScanner

निदाघ काले महदुस्म जाले भूम्यन्तराले शिशिरे सुगेहे ॥
पुष्पै स्सुगन्धैः कृत कल्पचित्रैः शय्यां प्रियाभिः रचिता सखीभिः ॥२४॥

महान् गर्मी से तपे हुए ग्रीष्म काल में भूमि के अन्तराल में शिशिर ऋतु के सुन्दर घर में प्रिया सखियों के द्वारा चित्र विचित्र चित्रों से [कलाओं से] रचना किया हुआ सुन्दर सुगन्धित पुष्पों की शय्या में ॥२४॥

सीतासरवस्तत्र विचित्र कान्तिरनन्तरं राजकुमारीकाभिः ॥
संसेव्यमानो व्यजनैश्च चामरैः मध्याह्न स्वापं सुतराङ्करोति ॥२५॥

निरन्तर राज कुमारियों के द्वारा पंखा चवरादि सामग्रियों से सुसेवित विचित्र कान्ति वाले श्री सीता जी के सखा उस मध्याह्न शयन घर में सुन्दर तरह से शयन कर रहे हैं ॥२५॥

इति श्रीशङ्करकृते श्रीअमररामायणे श्रीसीतारामरत्न मञ्जूषायां रहस्याख्याने भोजन लीलावर्णनं नाम द्वित्रिंसत्तमः सर्गः ॥३२॥

इति श्री मधुकर रूप रसास्वादिना कृता टीकायां रहस्याख्याने भोजन लीला वर्णनं नाम द्वित्रिंशत्तमः सर्गः समाप्तः ॥३२॥

मध्याह्नोत्तर मम्बुजायतदृशः श्रीजानकीरामयोः
सख्यः स्वाप गृहाङ्गणे मधुरया कूर्वन्ति गानं गिरा
तच्छ्रुत्वाच विनिद्रितौ सुखनिधी श्रीजानकी राघवौ
सुस्थायान्सुक भूषणानि सुविधं चान्योन्य मेत्यस्थितौ ॥१॥

मध्याह्न काल के बाद [३ बजे के समय पर] कमल के सदृश नेत्र वाली श्री जानकी राम जी की सखियाँ शयनकुंज के आँगन में इकट्ठी होकर मधुर स्वर से गान करने लगी उस गान को सुन कर सुख के समुद्र श्री जानकी राघव जी निद्रा से रहित होकर सुन्दर तरह से उठे। वस्त्र भूषणों को सुन्दर विधि पूर्वक धारण करके परस्पर गलबाहीं देकर बैठे ॥१॥

तदा दर्पणम्वारि पात्रञ्च हस्ते गृहीत्वा समीपङ्गता चैकवाला ॥
प्रधाव्यानन न्दपर्ण दर्शयित्या कृता चित्रविन्दुश्चभाले विशाले ॥२॥

कोई एक बाला उस समय दर्पण, जल-पान को हाथ में लेकर समीप गयी; दोनों सरकार को कुल्ला कराया; मुख धोया; दर्पण दिखाया; सुन्दर चित्र के सहित बिन्दु को विशाल भाल में लगा दिया ॥२॥

तदैका सखी हस्त नीराजनैत्य प्रिया प्राणनाथौ सुनीराजयित्वा ॥
तया गान वाद्यैः सुनृत्यं मनोज्ञं कृतं भाव दृष्ट्या प्रफुल्लाम्बुजाक्ष्या ॥३॥

कोई एक सखी हाथ में आरती को लेकर श्रीजुगल सरकार प्रिया प्रियतम जू के समीप आकर सुन्दर तरह से आरती की और गान, बजान, नृत्य व मन रमणीय भाव दृष्टि से खिले हुए कमल सदृश नेत्र वाली ने कट न किया ॥३॥

तदेकामुदादाय हस्तेम्बुजाभे सखी भक्तपानस्यपात्रं नवद्या ॥
क्वणन्नूपुराभिः सखीभिः समेता समागत्यभक्ष्यं ददौ वारि पानम् ॥४॥

Scanned by CamScanner

उस समय कोई दोष रहित सखी प्रसन्न होकर कमल सदृश हाथ में भक्ष्य और पान के पदार्थों से भरे पात्र को लेकर अपनी सखियों के साथ नूपुरों को छमकाती हुई श्री प्रिया प्रियतम जू के पास आयीं; भोजन पवाया; जल पिलाया ॥४॥

तदाकारयित्वा तु सा वारि पानं लवङ्गैलकापुङ्ग कर्पूर युक्ताम् ।
मुदा मोदि ताम्बूल वीटीं ददौ जानकी रामयो रम्बुजाभे सुहस्ते ॥५॥

इस प्रकार जल पान कराके लौंग इलायची, सुपारी, कपूर युक्त और भी स्वादिष्ट पदार्थों से बना पान के बीराओं को श्री जानकी राम जी के कमल सदृश सुन्दर हाथों में दिया ॥५॥

प्रियाया मुखे प्राणनाथः सुवीटीं ददौ स्नेहभावात्प्रिया वै प्रियस्या ॥
मुदा दर्पणैके मुखस्य श्रियं द्वौ परास्पश्यतो जानकीरामचन्द्रौ ॥६॥

बड़े स्नेह भाव से भरे प्राण नाथ ने प्रिया जू के मुख में, प्रिया जू ने श्री प्रियतम जू के मुख में सुन्दर पान के बीरा को दिया कोई एक सखी ने प्रसन्नता पूर्वक दर्पण को लेकर दिखा दिया; दोनों सरकार परस्पर अपने मुख की श्री को देखने लगे ॥६॥

तदेतस्ततो दम्पतो गुम्फितान्शौ समुत्थाय पर्य्यङ्कतः शोभिताङ्गौ ॥
सखीभिस्त्वनन्ताभिरावेष्टितौ तौ क्रीडमानौ भ्रमेतेङ्गणे शोभमाने ॥७॥

उसके बाद सुन्दर शोभित अङ्ग वाले परस्पर अंश भुजा दिए हुये दोनों सरकार इस पलंग पर से उठकर अनन्त सखियों से घिरे हुए शयन कुञ्ज के आँगन में घूमते हुए खेलने में शोभित हो रहे हैं ॥७॥

तदेकया मनोज्ञया तडिद्घनाभ शोभनौ विनीय तौप्रियौ प्रियौ सुकारितश्च भोजनम् ।
मनोज्ञ पूपमोदकैरनेकधैव संस्कृतैः पुनश्च भूषणांशुकैः सुसंस्कृतौ च दम्पती ॥८॥

उस समय कोई एक मनोज्ञा सखी बिजली और मेघ के समान दोनों सरकारों को कुञ्ज में ले जाकर मन रमणीय पूआ लड्डू आदि अनेक प्रकार के सुन्दर तरह से बने हुये पदार्थों से भोजन कराया फिर भूषण वस्त्रों से दम्पत्ति का शृङ्गार किया ॥८॥

सीतारामौ गुण गण विमलौ पद्म पाण्यंघ्रिनेत्रौ
रोचिष्णुतौ मणिगण खचितै भूषणै भाविताङ्गौ
नाना रत्नै र्विरचित विशदे पीठके चानिवेश्य
भ्राजत्पात्रेमुकलित कुशुमै रानी राजन्ति सख्यः॥९॥

निर्मल गुण समूह वाले कमलवत् कर चरण नेत्र वाले, सुन्दर लावण्यता से प्रकाशित, दिव्य मणि गण खचित भूषणों से भावित अङ्ग वाले श्रीसीताराम जी को नाना रत्नों से रचित प्रकाशमान निर्मल सिंहासन पर लाकर बैठाया; प्रकाशमान पात्र में अधखिले फूलों से सखियाँ आरती करने लगीं ॥ ९ ॥

नीराजमानौ जनकात्मजा श्रीरामौ सखीभिः परिवारितौ च ॥
परस्पर ङ्किश्च मनोभिलाषं वाक्यानुभावैः कुरुतः प्रकाशम् ॥१०॥

Scanned by CamScanner

परस्पर किंचित् मनोभिलषित वाक्यों से अनुभवों को प्रकाशित करते हुए सखियों ने श्रीजनकात्मजा राम जी को घेर कर आरती की ॥१०॥

यामैक शेषे दिवशेर्क कीर्णा स्तीव्रत्व मुत्सृज्य दधन्त्यनुष्णम् ॥

मरुच्च मन्दःसरसि प्रविश्य सरोज गन्धी वहति प्रियाद्य ॥११॥

दिन के एक याम शेष रहने पर (४ बजे से ७ बजे तक) सूर्य किरणों की तीव्रता को त्यागते हुए शीतलता को धारण करने लगे हैं और वायु सरोवरों में प्रवेश करके कमलों की सुगन्ध को लेकर मन्द २ बह रही है। हे प्रिय ? इस समय ॥११॥

मध्याह्न सङ्कोच गतं तरूणां छायाञ्च विस्तारक मासमद्यः ॥

इत्थंप्रिया प्राणपति प्रणीतं ग्रैष्म्यं हि विज्ञाय सखीवभाषे ॥१२॥

दो पहर का सूर्य संकोच को प्राप्त हो गया; वृक्षों की छाया लम्बी हो गयी। इस प्रकार श्री प्रिया जू प्राणपति के कहे हुए ग्रीष्म ऋतु को समझीं। तब एक सखी बोली ॥१२॥

छायं तरूणां हि तरोरतलम्बै सीतानि गेहान्तर माश्रयन्ते ॥

मध्यह्नके चोत्तर के त्वदेताः स्वाराम रम्ये किलसञ्चरन्ति ॥१३॥

वृक्षों की छाया वृक्षों के नीचे और शीतलता महलों के अन्दर आश्रयण करती है सो इस समय मध्याह्न के बाद उत्तर समय होने पर यह छाया और शीतलता आपके विलास करने रमणीय बनों में क्या तो विचर रही है (देखों न) ॥१३॥

इत्थं भाष्य परस्परैक हृदया वन्योन्य तोषावहा

वन्योन्यं गुण रूप साम्य विभवौ श्रीजानकीराघवौ।

आस्थायेभरथं प्रकाश निवहं सार्द्धं सखीनां गणै

र्नानापुष्पलता तणाग शिशिरां वाटीं मुदा जग्मतुः ॥१४॥

परस्पर एक हृदय वाली, परस्पर संतोष को आवाहन करने वाली सखी परस्पर गुण रूप ऐश्वर्य में बराबर स्वरूप वाले श्री जानकी राघव जी को जब ऐसा कही तब प्रकाशपुञ्ज हाथी के रथ में सखियों के समूह को साथ लेकर बैठे और विविध प्रकार के पुष्पों की लता तथा कमल खिले हुए अनेक सरोवरों से शिशिर ऋतु के सदृश बनी हुई वाटिका में आनन्द पूर्वक गयी ॥१४॥

इति श्रीशङ्कर कृते श्रीअमररामायणे श्रीसीताराम रत्न मञ्जूषायां रहस्याख्याने मध्याह्नोत्तरोत्थापन समय वर्णनो नाम त्रयस्त्रित्तमः सर्गः ॥३३॥

इति श्री मधुकर रूप रसास्वादिना कृता टीकायाँ रहस्याख्याने मध्यानोत्तरोत्थापन समय वर्णनो नाम त्रयस्त्रिशत्तमः सर्गः समाप्तः ॥३३॥

सखीभिरावेष्टित नागयाने दिव्याम्बरा भूषणभूषिताभिः

बहूर्वसीभि र्परिसेव्यमानो रत्यायुतोमन्मथ एवरामः ॥१॥

दिव्य वस्त्र भूषणों से भूषिता, सखि गणोंसे घिरे हुए श्रीरामजी हाथियों के रथमें बैठे हुए ऐसे लगते हैं जैसे बहुत उर्वशी आदि अप्सराओं से परिसेवित रति के सहित मन्मथही [कामदेव] शोभित होता हो ॥१॥

Scanned by CamScanner

प्रासाद सूच्चोच परम्परासू स्वस्यैव पत्नी निवहस्यमार्गे ॥
पुष्पैः सुगन्धै रधिवासिते सौ गच्छन्वभौवाम सुभाग वामः ॥२॥

ऊचे २ महलों की परम्परा (लाइन) अपनी ही पत्नियों के निवास महलों के मार्ग से सुन्दर सुगन्धित पुष्प बिछे हुए सिंचित मार्गसे बाम भाग में अपनी पत्नी श्रीसीता जी को लिए हुए श्रीरामजी॥२॥

मार्गेतु तस्मिन्निज सुन्दरीणा सुभार्यया मैथिल राजपुत्र्या ॥
समेत मेनं वहुकाम कान्तं सख्यो गवाक्ष्येषु नीराजयन्ति ॥३॥

उन अपनी सुन्दरी पत्नियों के मार्ग से मैथिल राजपुत्री सुन्दर भार्य्या के साथ बहुत कामों के समान कान्ति वाले इन श्रीप्रियतम जू को सखियां छज्जा, झरोखादिकों से आरती करती हैं ॥३॥

कनकभवन खण्डे मण्डिते हर्म्य जाले निज-
नव रमणीनां नूपुरा गवरम्यैः ॥
ललित वहुलताभिः पुष्पिताभिः सुगुल्मै-
र्विविध कुसुम फुल्लैः संकुले चान्तरन्यैः ॥४॥

श्रीकनकभवन का ग्रीष्म अनुकूल खण्ड, जो मणिरत्नों से भूषित छज्जा झरोखा वाले नौखण्डा महलों से कई आवरण मण्डलाकार बना है, उस बन में निज नवीन रमणियों के समूह द्वारा नूपुरों के झनकार से रमणीय बना हुआ तथा बहुत पुष्पित ललित लताओं से तथा बिविध प्रकार के फूल खिले हुए नवीन वृक्षों से भरा हुआ है जिस बन के अन्दर ॥४॥

विपुल विहंग युग्मैः क्रीडमाने नदद्भि मधुकर ख रन्यै स्वर्ण वेदी विचित्रे ॥
कमल कुल वराढ्यै भ्राज माने तड़ागे रघुवर इभ यानं स्सुप्रवेशं चकार ॥५॥

बहुत पक्षी दो २ होकर विलास करते हैं, मधुर रमणीय शब्द से गरजते हैं जिस बन में चित्र विचित्र स्वर्णकी वेदिकायें हैं अनेक रङ्ग के कमलों से भरे तड़ाग प्रकाशमान हो रहे हैं-इस प्रकार के बन में हाथी के रथ में बैठे हुए श्रीजुगल सरकारों ने सुन्दर तरह प्रवेश किया ॥५॥

तौ तत्र शौन्दर्य्य चमत्कृतांगा बतारितौ रत्न भुविप्रियौ च ॥
स्कन्धावलम्बैश्च करावलम्बै स्सखीभिरत्यन्त मनोवलम्बै ॥६॥

शौन्दर्य के चमत्कार से चमत्कृत दोनों सरकारों को रत्नमयी भूमि पर उस बन की यूथेश्वरी के स्वागत सत्कार पूर्वक सखियों के मानसिक उत्साह के बल से तथा कन्धाओं के अवलन्ब से तथा हाथों के अभलम्ब से उतारे गये ॥६॥

तद्वाटिकाया अधिकारिकायाः सखी समागत्य नीराजितौतौ ॥
श्रीजानकीराघव रम्यरूपौ गानैः सुवाद्यै मंधुरान्नभोगैः ॥७॥

उस वाटिका की अधिकारिणी ने सखी समाज सहित आकर आरती की। सुन्दर गान, वाद्य, मधुर अन्नभोग द्वारा रमणीय रूप दोनों सरकारों को तृप्त किया ॥७॥

तया ततस्स्वर्ण वितर्दिकाया म्विस्तार वत्स्वास्तरणं सुवर्णम् ॥
विस्ताय्यं सीता रघुराज पुत्रौ संस्थापितौ सर्व सखी गणैश्च ॥८॥

Scanned by CamScanner

और एक स्वर्ण वेदिका में विस्तार पूर्वक सुन्दर रङ्ग के बिछावन बिछा करके सीता रघुराज पुत्र दोनों को सब सखीगणों के साथ बैठाया ॥८॥

तया पुनः श्रीमिथिलेन्द्रपुत्र्या रामस्य मुक्ताञ्चित भूषणानि ॥
व्याचीय पुष्पाञ्चित भूषणैस्तु प्रीत्या सुभक्त्या परिसंस्कृतौ तौ ॥९॥

फिर उस कुञ्जेश्वरी ने मुक्ताओं के भूषण तथा पुष्पों से बनाये हुये भूषणों से बड़े प्रेम पूर्वक श्रीमिथिलेश पुत्री श्रीराम जी का बड़ी भक्ति पूर्वक शृङ्गार किया ॥९॥

सरोज सन्दर्भ लता वितानके चानीय पुष्पाञ्चित भूषणाङ्गकौ ॥
सिंहासने तत्र तया निवेशितौ नाना सुपुष्पै रचिते मनोज्ञके ॥१०॥

इस प्रकार फूलों का शृङ्गार करके एक लता के कुञ्ज में कमलों का समूह वितान बिछावन पर दादिकों के रूप में सजा करके उस कुञ्ज के अन्दर मन रमणीय पुष्पों से रचित एक सिंहासन में दोनों सरकारों को बैठाया ॥१०॥

सख्यस्तु काश्चिद्व्यजनानि हस्ते धृत्वा सुपुष्पै ग्रंथितानि चात्र ॥
पुष्पातपत्राणि सरोजपर्णौ धृत्वा सुपुष्पाञ्चित चामराणि ॥११॥

कोई सखी पुष्पों से रचित व्यजनों को हाथ में लिए, कोई सखी पुष्पों से रचित छत्र को अपने करकमल में लिए, कोई सखी पुष्पों से रचित चवरों को हाथ में लिए हैं ॥११॥

दण्डांश्च पुष्पै रचिता न्मनोज्ञान्धृत्वा सु पुष्पाञ्चित भूषणाङ्गा ॥
भव्याः प्रियायाश्च तथा प्रियस्य सख्यः शुभांगाः परितो विरेजुः ॥१२॥

कोई सखी पुष्पों से रचित दण्डाओं को हाथमें लिए स्वयं भी सब सखियां पुष्पों के बस्त्र भूषणों की धारण की हुई भव्य रूपा सुन्दर अङ्ग वाले श्री प्रिया प्रियतम जू के चारों तरफ में सखियां शोभित हैं ॥१२॥

काश्चित्सुपुष्पाञ्चित भूषणांगास्समाजके तत्र मनोज्ञ रूपाः ॥
कुर्वन्तिगानं समयोक्त रागै रानद्धकं वादयति प्रवीणा ॥१३॥

कोई सुन्दर पुष्पों के भूषणों से भूषित अङ्ग वाली, मन रमणीय स्वरूपा इस समाज में समय के अनुसार रागों से वीणा मृदंगादि बाजाओं द्वारा सुन्दर ताल पूर्वक गान करती हैं ॥१३॥

वीणाञ्च काचित् त्रिवीणाञ्च काचि त्काचिद्द्विवीणां सुषिरस्यभेदे ॥
काचि न्मुखाञ्चीनिपुणाहि तत्र सुवादयत्येव सुलायकासा ॥१४॥

कोई वीणा को, कोई त्रिबींणा को हवा आदिक के भेद से वंशी आदिक द्विवीणा को, कोई बड़ी निपुणा सखी मुखाञ्ची नामक बाजा को उस समाज में सुन्दर तरह से बजा रही हैं वे सबकी सब सुन्दर गाने बजाने में लायक हैं ॥१४॥

काश्चित्सुगन्धाञ्चित वारि सिञ्च्या सिञ्चन्ति शीतंहि महासमाजे ॥
पुष्पांशुकांगा ललिता स्सहावा स्कर्पन्त्य एवात्मपतेः सुचित्तम् ॥१५॥

कोई गुलाब आदि सुगन्धित जल को सींच रही हैं, कोई उस महा समाज में अनेक शीतलोपा।

Scanned by CamScanner

चार कर रही हैं, कोई पुष्पों के वस्त्र भूषणों से सजी हुई अत्यन्त लज्जिता अपने आत्म पति श्रीप्रियतम जू के सुन्दर चित्त को अपने हाव भावों से आकर्षित कर रही है ॥ १५॥

लता प्रतानै र्मणिभिश्चमत्कृतै मृदंग नादै र्मधुराभ्रगर्ज्जनैः ॥
जलोर्द्ध जन्त्रैः परितः प्रवर्षुकै ग्रीष्मर्तु रेवात्र बभूव वार्षुकः ॥१६॥

लता प्रतानों से, मणियों के चमत्कार से, मधुर मेघ के समान गर्जन करने वाले मेघ के नाद से जल जन्त्रों के द्वारा चारों तरफ ऊँचे फुआराओं की वर्षा से इस समय ग्रीष्म ऋतु होने पर भी इन लता कुञ्ज में वर्षा ऋतु शोभित हैं ॥१६॥

शृङ्गार नीराजन मुत्सवञ्च कृत्वा सुधासारक नामकाश्च ।
देशान्तरीया स्सुरसाल वृक्षाः फलानि तेषाञ्च रसाधिकानि ॥१७॥

इस लता कुञ्ज में पुष्प-शृङ्गार, आरती उत्सव करके फिर सुधा सारक नाम के देशान्तरीय रसाल के वृक्षों को तथा उनके अत्यन्त रस से बढ़े हुए फलों को ॥१७॥

कूष्माण्डका कार फलानि वर्णै र्हरित्सुपीतान्य रूणानि कानि ॥
आनीय सीता रघुनन्दनाग्रे पुञ्जीकृता नीह महासमाजे ॥१८॥

कोई फल को जो पेठा के बराबर आकार वाले हैं कोई फल हरित रङ्ग के, कोई पीत रङ्ग के, कोई लाल रङ्ग के—इस प्रकार अलग २ रङ्ग के बड़े २ आमों के तथा छोटे आमों की भी अलग ढेर लाकर सखियों ने श्रीजुगल सरकार के आगे महासमाज के बीच में ढेरियों को लगाया ॥१८॥

रसञ्च निस्सार्य्यसुवर्ण पात्रे तुष्टि प्रद स्पुष्टि प्रदम्सुमिष्टम् ॥
पीत्वा प्रिया प्राणपति स्तु पूर्व मपूर्व मेवेति सशंश वाक्यैः ॥१९॥

और बहुत फलों का स्वर्ण पात्रों में रस निकाल कर तुष्टि पुष्टि देने वाले उस स्वादिष्ट रस को पहले दोनों प्राणप्रिया प्रियतम जू ने पिया—और अति मीठा है—ऐसी प्रशंसा अपने वाक्यों से की ॥१९॥

सख्य स्त्वनन्ताहि पुनः पपुश्चे त्येवंप्रशंस्याथ मुदं ययुश्च ॥
सुगन्धताम्बूल सुवीटिकाभिः श्रीरामरामाश्च तुतोष मुख्या ॥२०॥

उसके बाद अनन्त सखियों ने भी उस रस को पिया और प्रशंसा करके आनन्द को प्राप्त हुईं। सुगन्धित पान वीरा आदिकोंसे दोनों सरकारों को कुञ्जेश्वरीने समाज सहित सबको सन्तुष्ट किया ॥२०॥

अनन्त रामाभि रसौ रसज्ञः श्रीसीतया पुष्प सुवेष शोभी ॥
शोभां विचित्रां प्रमदा वनस्य पश्यंश्च पश्यन्वि चचार रामः ॥२१॥

अनन्त सखियों के साथ बड़े रसज्ञ ये प्रियतम जू श्रीसीता जी के साथ पुष्प शृङ्गार से शोभित हुए। इस प्रकार यह प्रमदा वन की विचित्र शोभा को देखते २ श्रीराम जी व जानकी जी दोनों सरकार बन में विचरने लगे ॥२१॥

इत स्ततो भ्राम्य वनेतु तस्मिन्दृष्ट्वा शुभाम्मारकतैक वेदीम् ॥
स्थातुम्मनः कुर्वन्ति राम कामे प्रस्तारितं स्वास्तरण क्कयाचित् ॥२२॥

इधर उधर घूमते हुए उस बन में एक सुन्दर मर्कत मणि की वेदी को देखा। किसी ने दोनों सरकार इस वेदी पर बैठने की इच्छा कर रहे हैं, ऐसा जानकर सुन्दर बिछावन को बिछा दिया ॥२२॥

Scanned by CamScanner

ततः समास्थाय सुवेदिकान्ता मनेन यूना युवती ब्रजेषु ॥
रन्तुं सुमध्वाशव पान गोष्टी कृता मुदा राघवसुन्दरेण ॥२३॥

उस वेदिका पर युवती समूहों के साथ ये युवा पुरुष श्रीरामजी बैठे। रमण करने की इच्छा से रमणीय सुन्दर श्रीराघव जी ने इस वेदी में मधु (आसव) पान करने की सभा की ॥२३॥

नासैक मौक्तिक धराधर भास मानः–
सीताधराशव निरन्तर लालशोऽसौ ।
मध्वाशव म्परिनिपीय मदारूणाक्षः–
क्रीडां श्चकार रमणीभिरशेषभावैः ॥२४॥

नासामणि के हलन से प्रकाशमान अधर ओष्ठ वाले, श्रीसीता अधर पान की निरन्तर लालची, ये प्रियतमजू मैरेयको सुन्दर तरह पान करके मदारुणा नेत्र वाले रमणियोंके अशेष हाव भावों से बिलास (क्रीड़ा) करने लगे ॥२४॥

श्यामालकश्चपल कुण्डल चाञ्चलाक्षः–
स्वेदाम्बु विन्दुक मुखाम्बुज मोहन श्रीः ॥
कान्ता गणे कुसुम कन्दुक ताड्यमानो–
धावन्नसौ विजयते रघुराजसूनुः ॥२५॥

श्याम, चमकीले, कुटिल, चपल अलक वाले, चञ्चल कुण्डल व नेत्र वाले, पसीना के विन्दुओं से शोभित मुख कमल वाले अति मन मोहन शोभायमान, कान्तागणों के बीच पुष्प-गेंदों से मार खाने वाले, स्वयं हाथ में पुष्प गेंद को लेकर कान्तागणों को जीतनेकी इच्छा से दौड़ने वाले इन रघुराजकुमार की जय हो ॥२५॥

नरेन्द्र नागेन्द्र देवेन्द्रजानाङ्गणे महीपेन्द्र कुमार रामः ।
कुर्वन्ति काचिल्ललितांहि लीलां प्रत्येक रूपः प्रवभूव तासु ॥२६॥

नरेन्द्र कन्या, नागेन्द्र कन्या, देवेन्द्र कन्याओं को भीड़में राजेन्द्रकुमार श्रीरामजी, कोई ललित लीलाओं को करने वाली उन रमणीयों के बीच प्रत्येक के साथ, एक २ रूप होगये ॥२६॥

रामस्य रूपं रमणी विमोहनं साधारणं तत्र कटाक्ष वीक्षणम् ॥
रते दिवा दोष इति श्रुते र्वचो नसज्जते तत्र विपश्चि ताम्मते । २७॥

श्रीराम जी का रूप सब रमणी समाज को अत्यन्त मोहित करने वाला है। आपस में कटाक्षों का प्रहार सबके साथ साधारण रूप से हो रहा है दिन की रति का वेद की वाणी दोष बताती हैं इसलिए उस स्थान पर विद्वानों के मत से श्रीरामजी सुसज्जित नहीं होते हैं ॥२७॥

पुंशो बलं किम्बलिनोऽपि भूयः प्रवर्त्तमाने त्वबला बलेवै ॥
घृतं यथा ग्रावति शीनशीनं शीघ्रं द्रवत्यत्र विचारणा का ॥२८॥

बलवान होने पर भी पुरुष का बल अबला के बल के प्रवर्तमान होने पर क्या काम कर सकता जैसे जलती हुई अग्नि में ठन्डी से बहुत कड़ा होने पर भी घी बहुत शीघ्र द्रवित हो जाता है, इस स्थान पर विचार ही क्या करना है ॥२८॥

Scanned by CamScanner

इति श्रीशङ्करकृते श्रीअमररामायणे श्रीसीतारामरत्न मञ्जूषायां बाटिकागमन वर्णनो नाम द्वित्रिंसत्तमः सर्गः ॥३४॥

इति श्री मधुकर रूप रसास्वादिना कृता टीकायां बाटिकागमन वर्णनं नाम चतुस्त्रिंशत्तमः सर्गः समाप्तः ॥३४॥

त्वम्मन्मथो माद्यसि मानसम्मे पुनर्न तोपं प्रकरोपि कस्मात् ॥
करं गृहीत्वा वदतीति वाक्य रामस्य रामेन्दु मुखस्य काचित॥१॥

आप मेरे मन में मन्मथ को उन्माद पैदा कर रहे हैं फिर संतोष को क्यों नहीं कर रहे हैं। इस प्रकार कहकर अत्यन्त रमणीय चन्द्रमा के सदृश मुख वाले श्रीरामजी के हाथ को पकड़लिया ॥१॥

मन्दार पुष्पाञ्चितया सुरेखौ वध्नाति पङ्केरूह रङ्गभासौ ॥
श्नेहा त्वमत्ताप्रमदाशुभाङ्गा वेण्यावला द्रामकरा वुभौच ॥२॥

कोई सुन्दर अङ्गवाली स्नेह से उन्मत्त प्रमदा ने मन्दार के पुष्पों से गुथी हुई अपने सिर की वेणी के बल से सुन्दर रेखा वाले कमल के सदृश लाल रङ्ग से प्रकाशमान श्रीरामजी के दोनों हाथों को बाँध रही है ॥२॥

धन्योयुवासौ तिरतौयुवाययाः करेण पङ्केरूह कोमलेन ॥
काञ्च्यास्रजा कङ्कणनूपुरेण वेणया सुवद्धोपि च ताड्यमानः॥३॥

अति विलास के प्रसंग में युवावस्था वाली के कोमल कर कमलों से, कमर की करधनी से, फूलों की मालाओं से, कङ्कण व नूपुरों से, सुन्दर वेणी से सुन्दर तरह बँधे होने पर भी पीटे जा रहे हैं, एवं भूत अहो ? ये युवक धन्य हैं ॥३॥

पासे तु काचित्करयोच्छलेन प्रियं प्रियार्हं सुदृढे सुनीत्वा ॥
लता गृहेषट्पद पुञ्ज गुञ्जे चानीय रामं सुरतञ्च चेष्ठे ॥४॥

कोई छल पूर्वक दोनों भुजाओं के बन्धन से मजबूत करके अत्यन्त प्रिय करने योग्य जो प्रियतम उनको बाँध कर किसी लताकुञ्ज में सुन्दर तरह से ले गयी जहाँ भ्रमरों के झुण्डों का गूँज मचा है वहां पर श्रीरामजी को लाकर सुरत की चेष्टा कर रही है ॥४॥

मध्या सुमध्या अपि पानमत्ता लज्जां तिरस्कृत्य भजन्तिशय्याम्॥
प्रौढ प्रवीणे च रतौ विनिन्यू रामं युवानं सुखमादधानम् ॥५॥

कोई पतली कमर वाली उम्र में यद्यपि मध्या है तो भी पान से मत्त हुई लज्जा को तिरस्कृत करके प्रौढ़, प्रवीण विलास में सुख का विधान करने वाले युवा श्री राम जी को शय्या पर जाकर सेवा कर रही है ॥५॥

रतौ भयं त्यज्य विलज्जयापि पत्युः समीपे रघुनन्दनस्य ॥
मध्वाशवा पान मुदा हि मुग्धाः कुर्वन्ति कश्चित् कमनीयकेहाम्॥६॥

कोई मुग्धा मध्वासव पान से प्रसन्न हुई लज्जा से भी भय को त्याग कर अपने पति श्रीरघुनाथ जी के समीप कोई विलास में कमनीय चेष्टा को कर रही है ॥६॥

Scanned by CamScanner

पुम्वेषा रमणा मशेष केलिभिज्ञा स्त्रीवेषं ललित लता निकुञ्जगेहे ॥
शय्यायां सरसिज खण्ड मण्डितायां श्रीरामं रमयति कापि प्रौढभावात् ॥७॥

कोई रमणी ललित लता निकुञ्ज के घर में स्वयं पुरुष भेष धारण की हुई सब प्रकार के केलि के भेदों को जानने वाली स्त्री के भेष में रमण को कमल के समूह से सुसज्जित पर्यङ्क पर श्रीरामजी को प्रौढ़ भाव से रमा रही हैं ॥७॥

शङ्के तं कृतमपि नागतोहि कस्मात्प्राणेशः प्रणय वशोऽनयाऽस्ति किम्मे ॥
सोत्कण्ठा दधति विचार्य्य चेति यावत्स्त्री वेषो रघुपति रागतश्च दृष्टः ॥८॥

मेरे प्राणेश मुझ से संकेत करने पर भी किस लिए नहीं आ पहुँचे क्या इसके प्रणय के वश में तो नहीं हो गये। जब तक इस प्रकार की उत्कण्ठा से विचार कर रही तब तक स्त्री वेष में रघुपति आ गए हैं ऐसा देखा ॥८॥

प्रौढानां सुरत मशेष कोक भेदैः कान्ताना मुरसिज कुङ्कमाश्रितानाम् ॥
उत्सृज्य प्रचुर कुचाङ्ग मुग्धकानाम्वामानां सुरत रतोहि राघवोसौ ॥९॥

कुंकुम से परिलिप्त वक्ष स्थल वाली प्रौढ़ा कान्ताओं के अनेक कोक कलाओं के भेदों से सुख देने वाली सुरत (विलास) को त्याग कर अविकशित वक्ष स्थल वाली मुग्धा अवस्था की स्त्रियों से राघव विलास आ सक्त हुए हैं ॥९॥

इत्येनं सरसिज सुन्दरायताक्ष्यो निन्दन्त्यो ललित प्रतान गेहे ॥
सीदन्त्यः सुमन शरेण विद्ध चित्तारत्यर्थं ह्युपमाशयानुचक्रुः ॥१०॥

इस प्रकार के कमल सदृश विशाल नेत्र वाले प्रियतम जू की कमल सदृश विशाल नेत्र वाली सुन्दर लता प्रतानों के घर में मनोजसर से व्याकुल चित्तवाली स्त्रियाएँ, निन्दा करती हुई विलास के आशय से तिरष्कार पूर्वक अनुशरण कर रही हैं ॥१०॥

तावत्सोम्वुज नयनो नवीन कान्तः सर्वासां सविधमुपेत्य कामिनीनाम्॥
मुग्धा नामुरसिज राग रक्तः वक्षा उक्तानां मुदमुदयन्नराम रामः ॥११॥

तब तक कमल सदृश नेत्र वाले नवीन कान्त सभी कामिनियों के पास सुन्दर विधान पूर्वक प्राप्त होकर काम के राग से अनुरक्त वक्ष स्थल वाली उन मुग्धाओं के आनन्द को उदय करते हुए श्री रामजी ने रमण नहीं किया ॥११॥

शय्यायां कमल दलोपचारितायां शैथिल्यं स्मर समरेसमागतास्ताः ॥
शौन्दर्य्यस्त्वथ वसना लकाँगरागा रामस्याद्भुत नयनोत्सवे वभूवुः॥१२॥

कमल दलों से बने हुये पर्यङ्क पर काम समर में वे सब शिथिलता को प्राप्त हो गयीं। इन सब के वस्त्र, अलक, अङ्गराग, शौन्दर्य श्रीरामजी के नेत्रों का अद्भुत उत्सव के रूप में हो गये ॥१२॥

अन्योन्यं मनसिज काहवे नरवानां दन्तानां व्रण चयमुपजात मङ्गे
तत्कान्तां रघुवर आनंताम्वुजाचीमंगुल्या दिशति विग्रहे स्य मन्द मन्दम् ॥१३॥

अन खिले कमल सदृश झुकी हुई नेत्र वाली उस अपनी कान्ता को रघुवर मन्द २ हँसते हुए परस्पर मनसिज समर में नखों के, दाँतों के चिह्न तथा अँगुली से उसके शरीर में घाव दिए इस प्रकार दोनों के अङ्गों में विलास के चिन्ह उत्पन्न हुए ॥१३॥

कामोसौ कुशुम शरै स्त्वया विहीनां शौन्दर्य्याधिक वर विग्रहेणाभित्तः ॥
दृष्ट्वामांक्षणमपि तीक्षणैः सहन्यात् तेन त्वा महमपि नाथ नो त्यजामि ॥१४॥

शौन्दर्यता में अत्यन्त चढ़े बढ़े अत्यन्त सुन्दर विग्रह वाले आपके बिना व्यथित हुई यह कामदेव मेरे को देखकर तीक्षण पुष्पों के बाणों से मारेगा इसलिए हे नाथ ? मैं आप को क्षण भर भी नहीं त्याग सकती हूँ ॥१४॥

काप्येवं वदति विलक्षणं हि युक्त्या चानीयो रसि कर बन्धनेन वामा ॥
श्रीरामं रघुकुल भूषणं रसज्ञं रत्यन्ते किल न च मुञ्चति इति मोहात् ॥१५॥

कोई वामा बड़े रसज्ञ रघुकुल भूषण श्रीरामजी को अपने दोनों भुजाओं के वन्धन से अपने हृदय में लगाकर विलास के अन्त में हास्य कारक कुछ विलक्षण शब्दों को कहेंगे इस युक्ति से क्या तो इसी मोह से नहीं त्यागती है ? ॥१५।

कान्ताना ङ्कलित कटाक्ष दोलकाभिः कृत्येत्थं मनसिज मुत्सवं विचित्रम् ॥
आन्दोलोत्सवमपि कर्त्तु मुद्यतः संस्वागारे तदनुतथाभिधेजगाम् ॥१६॥

कान्ताओं के कटाक्ष–कला रूप झूलाओं से इस प्रकार विचित्र मनसिज उत्सवों को करके उसके बाद प्रत्यक्ष हिंडोला उत्सव को भी करने के लिये तैयार होकर इसी इन्तजाम से उसी कुञ्ज नामक अपने महल में गयी ।१६।।

श्रीसीतया सह मुदारघुराज सूनूस्त्यायुतेन मदनेन सम प्रभोसौ ॥
अन्यास्वनेक बनिता गण सेव्यमानश्छत्रैश्च चामरचलै र्व्यजनैर्विचाल्यैः॥१७॥

आनन्द मग्न होकर श्री सीता जो के साथ रघुराज कुमार रति के सहित मदन की तरह से प्रकाशमान हो रहे हैं। साथ में अन्य अनेक वनिता गणों से छत्र चवर व्यजन के सुन्दर संचार से सेवित हो रहे हैं॥ १७॥

ततः समासाद्य सुदम्पती ता वान्दोलगेहं प्रमदा वनान्तम् ॥
कौसुम्भवासांसि मनोहराङ्गे विरेजतुर्धार्य्य सुकोमलानि ।१८॥

इस तरह से दोनों दम्पत्ति प्रमदा वन (प्रमोदवन) के अन्दर आन्दोल कुञ्ज में प्राप्त हो कर सुन्दर कोमल कुसुमी रङ्ग के वस्त्रों को मनोहर अङ्गों में धारण करके हिंडोले पर प्रकाशमान हुये विराजमान हैं॥१८॥

नीलारक्त सुपीत शुभ्रहरितै रत्नैस्समग्राश्चितम्।
स्वर्णस्तम्भ सुयुग्मके तदुभयोर्मध्येपितिर्य्यक्स्थितम्॥
दण्डाधारक धारिणौ तदपरौ मायूरकौ संज्ञया।
तन्मायूरक युग्मके विधरिते स्याच्चौरशी संज्ञया॥१९॥

नील, लाल, पीत, सफेद, हरित आदि रङ्ग के सुन्दर रत्नों से सर्वाङ्ग रचित सुन्दर दो स्वर्ण खम्भाओं के बीच एक तिरछा स्वर्ण का दण्डा बना है जिसका आधारक दण्ड नाम है उस दण्डे को धारण किए हुये दो दण्डे और हैं जिनमें मोरों का चित्र बना है वे मायूरक नाम से दोनों दण्डे प्रसिद्ध हैं उन दोनों मायूरक नाम के दण्डों के बीच में उरशी नामक चार कोने का दण्डा है ॥१९॥

Scanned by CamScanner

तस्याः कोण चतुष्टयेतु बिहितं नीलेन्द्ररत्नैः कृतम् ।
दण्डानांहि चतुष्टयं सुललितं तन्मुन्द्रितं त्वासनम् ॥
मुक्तारत्न सुवर्ण सूत्र कलितैर्वस्त्रे बिधानाश्चितम् ।
दण्डेप्यत्र चतुष्टये सुरचितं स्तम्भेपि युग्मेगणम् ॥२०॥

उस उरशी नामक दण्डा के चारों कोनाओं पर जुटे हुए इन्द्र नील मणि आदिक रत्नों से बने हुए चार दण्डे सन्दर ललित नीचे को लटके हैं उनमें पेचों से कसा हुआ आसन है उस आसन में स्वर्ण सूत्र से बने हुये मुक्तारत्न जड़े ऐसे वस्त्र बिछे हुये हैं उस आसन के चारों कोनाओं में ऊपर के चारों सुरचित दण्डे जुटे हुए हैं। इस प्रकार दोनों खम्भाओं के बीच में बना हुआ यह आसन है और दोनों खम्भाओं के ऊपर भी ॥२०॥

रत्नैः सत्कृत पक्षिणां बहुबिधा वृक्ष्याश्चरत्नै कृता ।
मुक्तातोरण जालमाल शिखरस्यादर्पणं दीर्घकम् ॥
एतैर्मण्डित मण्डपेन सहितं सीतापते रूक्मके ।
गेहे श्रावण कालिके बिजयते सद्दीप्तिमद्दोलकम् ॥ २१॥

रत्नों से सुन्दर सत्कृत बहुत जाति के पक्षी तथा रत्नों के बनाये हुवे वृक्ष तथा मुक्ताओं के बने तोरण, जाली, माला सजे हैं। ऊपर शिखर पर एक सुन्दर बड़ा दर्पण लगा है। इस प्रकार इन सब रचनाओं से भूषित प्रकाशमान हिंडोला में, रत्न रचित सीतापति के महल के अन्दर मण्डप में बैठे हुए दोनों सरकार श्रावण कालिक आन्दोलोत्सव विनोद में प्रकाशमान हो रहे हैं इस प्रकार आप की जय हो ॥ २१ ॥

सखी जनैर्प्रेषित दोलके तौ श्रीजानकी राघव शोभनाङ्गौ ॥
अन्योन्य संक्षेप भुजांशभव्यौ मन्दस्मितौ वीक्ष परस्परौ द्वौ ॥२२॥

अनन्त सखियाँ झुला रहीहैं इस प्रकार झूला में बैठे हुए अत्यन्त सुन्दर शोभायमान अङ्गवाले श्रीजानकी राघव परस्पर गलबाहीं दिये हुए एक दूसरे को देखकर मन्द २ मुसकराते हुए दोनों दिव्य कल्याण स्वरूप हैं ॥२२॥

मल्लहार राग स्वर मुच्चरन्तौ समान तालै युत मूर्च्छनाभिः ॥
प्रफुल्लितास्यौ मणि भूषणाढ्या वान्दोल गेहे जयतो रमन्तौ ॥२३॥

मणि भूषणों से भूषित होकर मूर्छनाओं के सहित समान तालों से मल्हार राग में स्वर उच्चारण करने वाले प्रसन्न बदन आन्दोल घर में रमण करते हुए दोनों सरकारों की जय हो ॥२३॥

कुसुमराग मनोहर खग्मिपः कुसुम राग सचैल सुवेषनी ॥
रघुवरस्स च सा जनकात्मजा शुशुभतु नंव दोल युतौ हि तौ ॥२४॥

बनों के फूलों के रङ्ग को देख कर हरण हुआ है मन जिनका, कुसुमी रङ्ग के सुन्दर वस्त्रों को धारण किए हुए वे रघुवर और वे जनकात्मजा जी नवीन आन्दोलन में बैठ कर झूलते हुए सुन्दर शोभित हो रहे हैं ॥२४॥

कनकमन्दिर दोल नवांगणे रघुबरः प्रियया सह दोलयन् ॥
स्वधर बिम्बित नाशिक मौक्तिको विजयते बिहसन्रमणीसखः ।२५॥

कभी कनकभवन के आन्दोल कुञ्ज के नवीन आँगन में श्री प्रिया जू के सहित झूलते हुए अधर विम्बों में नासामणि हिल रही है इस प्रकार के रमणियों के सखा श्रीरघुवर की जय हो ॥२५॥

बिबिधिरत्न सुचित्रित दोलके प्रियतमां क्षितिपेशतुरात्मजः ॥
स्वकर भूषितकां तु नृपा त्मजा रघुबरः शुशुभेपरिदोलयन् ॥२६॥

विविध प्रकार के रत्नों से सुन्दर चित्रित हिंडोला में अपने हाथ से शृङ्गार करायी हुई अपनी प्रियतमा राजकन्या को झूला झुलाते हुए चक्रवर्ति राजकुमार श्रीरघुवर जी अति शोभित हो रहे हैं ॥२६॥

हँसति गायति कौतुक मादध न्युवतिभिः कलयन्ततक स्वरान् ॥
ललित ताल कलाधर राघवः प्रियतमां रमयन्रमते स्वयम् ॥२७॥

युवतियों के द्वारा वीणा, मृदंग, मजीरा, वंशी आदिक बाजाओं का सुन्दर ताल मिला कर कौतुक कराते हुए ललित ताल गान आदि अनेकों कलाओं के पण्डित श्री राघव जी स्वयं हँसते हैं; गाते हैं और प्रियतमा को रमाते हुए स्वयं रमण कर रहे हैं ॥२७॥

अलक कुण्डल हार चलत्प्रभै र्नवयुवा युवतीव्रज सम्वृतः ॥
रघुवरः प्रियया सह दोलके लसति दोलकलाभिरवन्प्रियाम्॥२८॥

नवीन अवस्था वाली युवती समूहों से घिरे हुये हिंडोला की केलि की कलाओं को करके प्रिया को पालते हुए प्रिया के साथ रघुवर कुण्डल हार के हिलते हुए प्रकाश से झूला पर अति शोभित हो झूल रहे हैं ॥२८॥

युवतिभिः परिदोलित दोलके रघुवरः प्रियया सहदोलयन् ॥
जयति श्रावण केलि सुखावहे जनकजा मुखपद्म मधुव्रतः ॥२९॥

श्रावण की केलिओं के सुख में भरे हुए युवतियों के द्वारा सुन्दर तरह से झुलाए गये झूलापर श्री जनकजा जी के मुख कमल के भँवरा श्री रघुवर जी अपनी प्रिया के साथ झूलते हुए आप की जय हो । २९ ॥

श्रम कणा नवलोक्य शशि प्रभे जनकजा वदने रघुनन्दनः ॥
कमल कोमलभूषित पाणिना व्यजनकं सुमनाश्चित मादधत्॥३० ।

श्रीजनकजा जी के चन्द्रमा सदृश प्रकाशमान मुख चन्द्र में पसीना के विन्दुओं को देख कर श्री रघुनन्दन जी कमल के समान कोमल, सुन्दर भूषणों से भूषित अपने हाथ में पुष्पों से रचित व्यजन को लेकर श्री प्रिया जू को हवा करने लगे ॥३०॥

सुचि सुगन्धजलं मुख वासनं यदि यदीच्छति चात्मसुखायताम् ॥
सहिनिषेधितकिङ्कर राघवः प्रियतमा मुपतिष्ठति तद्धिते ।३१॥

Scanned by CamScanner

श्री प्रिया जू के मना करने पर भी किंकर की तरह श्रीराघव जी अपने आत्मा के सुख के लिये यदि प्रिया जू चाहेंगी तो मैं तुरन्त उनको दूँगा इस इच्छा से श्री प्रिया जू के हित के लिए पवित्र सुगन्धित मुख धोने के जल को झारी में लेकर के प्रियतमा के पास में खड़े हैं ॥३१॥

श्रम मवाप्य सुदोलक लीलया ललितभाव सुखञ्चित दम्पती ॥
युवति भिर्व्यजनैः परिसेवितौ जनकजा रघुनन्दन नन्दनौ ॥३२॥

सुन्दर झूला की ललित लीलाओं के भाव सुखों से रँगे हुए आनन्द समुद्र जनकजा रघुनन्दन दम्पत्ति परिश्रम को प्राप्त हुए। युवतियाँ व्यजनादि सेवा सामग्रियों से दोनों सरकारों की सुन्दर सेवा करने लगीं ॥३२॥

मणिनिवद्ध सरोवर के तटे मिथुन सारस हंश गणाश्रिते ॥
कमल कोष गतालिसु गुञ्जिते शिविकया मणि भूषितया गतौ॥३३॥

मणियों से बँधे हुए घाट जिनके, दो २ करके सारस हँसादिक पक्षियाँ अपनी जोड़ी जोड़ी जहाँ घूम रहे हैं, कमलों की कर्णिकाओं में भ्रमरों के झुण्ड जहाँ गूंज रहे हैं ऐसे सरोवरके किनारे मणियों से भूषित शिविका के द्वारा दोनों सरकार गये ॥३३॥

अनिल मम्वुज भावित दम्पती सुरभिमन्द सरोवर् सीतलम् ॥
श्रमहरं स्वनुभूय दिनान्तके शिविकया शयनालय मागतौ ॥३४॥

कमल के पराग से सुगन्धित सरोवर के किनारे शीतल, मंद, सुगन्ध, परिश्रम को हरने वाले ऐसे वायु का अनुभव करके दम्पत्ति श्री जुगल सरकार दिन के अन्त समय शिविका द्वारा शयनालय में आ गए ॥३४॥

इति श्रीशङ्कर कृते श्रीअमररामायणे श्रीसीताराम रत्न मञ्जूषायां रहस्याख्याने
वाटिकाविहारवर्णनं नाम पञ्चत्रिंत्तमः सर्गः ॥३५॥

इति श्री मधुकर रूप रसास्वादिना कृता टीकायाँ रहस्याख्याने वाटिका विहार
वर्णनं नाम पञ्चत्रिंशत्तमः सर्गः समाप्तः ॥३५॥

दीपायनानाम्मणि सत्कृतानां योगेन प्राप्तास्वहुदीप्तिमन्तम् ॥
तद्दीपकाना मवलिप्रकाशे सौवर्ण सूत्रास्तरणातिभाषे ॥१॥

मणियों से सुन्दर सत्कार किये हुए, सुन्दर योग से प्राप्त हुए बहुत प्रकाश करने वाले दीपों की पंक्ति से प्रकाशमान शयन कुञ्ज में स्वर्ण-सूत्र से बने हुए सुन्दर बिछावन अति प्रकाशित हो रहे हैं ॥१॥

गिरीभमत्स्यावनि सिन्धुजानां रत्नाञ्चिता लम्बित तोरणाङ्के ॥
सौवर्ण सूत्रांञ्चित सद्वितानें प्रक्वाण मञ्जीर रव प्रपूर्णे ॥२॥

मणि, माणिक मुक्ता, मोती आदि रत्नों से रचित लम्बे तोरण हैं सजे हुये जिसमें स्वर्ण-सूत्र से बना हुआ श्रेष्ठ वितान तना है जिसमें और मञ्जीर आदिक भूषणों का क्वणकार शब्द भरा है जिसमें ॥२॥

सौवर्णिकार्चाँगण भित्तिचित्रे स्तम्भावली रत्न प्रभावलीढ्ये ॥
विरेजतु रत्न गृहे सखीभिः श्रीजानकी कौशलराजपुत्रौ ॥३॥

Scanned by CamScanner

स्वर्ण आदि रङ्गों से चित्र विचित्र चित्रों की पंक्ति है भित्ति में जिसके, सुन्दर प्रभाव मान रत्नों से खचे हुए प्रकाशमान खम्भों की पंक्ति है शोभित जिसमें ऐसे रत्नों के घर में अनन्त सखियों के साथ सर्वेश्वरी श्रीचारुशीलाजीके सहित श्रीमिथिलेन्द्र राजकन्या श्रीकिशोरीजी और कौशल राजपुत्र श्रीरामजा सिंहासन पर सुशोभित हो रहे हैं ॥३॥

आथर्क कार्पास भरांशुकासने गद्ये पयः फेन समान कोमले ॥
संस्थाप्य सीता रघुनन्द नन्दनौ कुर्वन्ति सायन्तन मङ्गलोत्सवम् ॥४॥

अर्क (अकवा) और कपास की रूई भरे हुए, दूध के फेन के समान कोमल गद्दे बिछे हुए हैं जिसमें ऐसे आसन पर श्रीसीता रघुनन्दन जू को बैठाकर सखियां सायंकालिक मङ्गल उत्सवों को करने लगी ॥४॥

कृत्वार्घं पाद्यञ्च सुगन्धि धूपकम्प्रदर्श्यदीपं समयो चितंपुनः ।
सुकारयित्वाचमनम्प्रिया प्रियौ सुकारितंमिष्ठ मनन्तभोजनम् ॥५॥

समय के योग्य अर्घ्य, पाद्य, सुगन्धित धूप दीप आदि पूजा विधियों को करके फिर दोनों प्रिया प्रियतम जू को सुन्दर तरह से आचमन कराके अनन्त प्रकार के स्वादिष्ट पदार्थों का भोजन कराया ॥५॥

सुकारयित्वाचनम्पुनश्च ताम्बूल बीटीं प्रददौ वयस्या ॥
गानेन वाद्येन सखीभिरेनौ नीराजिता वात्मसुखाबद्धौ च ॥६॥

पुनः सुन्दर तरह से आचमन कराया, समान अवस्था वाली सखी ने पान का बीणा सुन्दर तरह से दिया। अपनी आत्मा को अत्यन्त सुख देने वाले, सुख के समुद्र दोनों सरकारों की सखियों ने गान वाद्य पूर्वक आरती की ॥६॥

नृत्येन गानेन तथैक यामक न्निशा गता तत्र तयो विलाशिनौ ॥
श्रीजानकी राघवयोर्गुणज्ञयोः सखी जना सेवित सर्वभावयोः ॥७॥

सखी जनों के सम्यक् प्रकार भाव पूर्वक से वित, सुन्दर गुणों के जानने वाले बड़े विलासी श्री जानकी राघव जी के नृत्य गान आदि के उत्सव को देखते हुए एक याम रात्रि बीत गयी ॥७॥

लक्षैक गावो बहुशः पयोदाः पयांसि तासा मयुतम्पिबन्ति ।
तासां सहस्रञ्च पिबन्ति गावः सतञ्च तासाञ्च शतस्य पंक्तिः ॥८॥

बहुत दूध देने वाली एक लाख गायों का दूध दस हजार गाय पी जात हैं, उन दस हजार गायों का दूध एक हजार गाय पी जाती हैं, उन एक हजार गायों का दूध एक सौ गाय पी जाती हैं, उन एक सौ गायों का दूध दस गाय पी जाती हैं ॥८॥

पंक्तेः पिबत्येक महोत्तमा गौरित्थंश्च गावो बहुश श्च तासाम् ।
पयांसि यामाष्टक पाचितानि सीतोपलौषध्यभि संस्कृतानि ॥ ६॥

उन दस गायों के दूध को एक गाय पी जाती है, ऐसी महान् उत्तमा गायें श्रीकनकभवनके लिए बहुत ज्यादा हैं। इन महान् उत्तमा गायों का दूध ८ पहर तक सिद्ध (गर्म) किया जाता है तब उसमें शीतोपल मिलाया जाता है गन्ने के रस से बना हुआ राब, राब से शक्कर (खांड़), शक्कर से चीनी, चीनी से मिश्री बनती है तब इसके बाद मिश्री से कन्द बनता है उसी कन्दको शीतोपल कहते हैं) औरके शरादिक सुगन्धित औषधियां भी मिलायी जाती हैं। इस प्रकार का दूध तथा ॥६॥

सुगन्धिना काम दुहाधृतेन कृतानि पक्वान्न सुतेमनानि ॥
हितेन मात्रा तदिदं समस्तं प्रेष्याभि राभ्यां हि तदा सुनीतम् ॥१०॥

इसी प्रकार कामधेनु के सुगन्धित घी से बने हुए अनेक प्रकार के पक्वान्न पदार्थों को हित मयी भाव से माता ने दूतियों द्वारा इन दोनों सरकारों के लिए सम्यक् प्रकार सजाकर भेजा। दूतियों द्वारा लाये गये उन पदार्थों को ॥१०॥

निशा शनागार विशाल कक्षां विशालवक्षयाः सुविशाल बाहू ॥
अनन्त नारीक्षण हृद्विकारी समागतो मैथिल राजपुत्र्या ॥११॥

रात्रि के भोजनागार विशाल महल में रक्खा गया। विशाल वक्षस्थल वाले और विशाल दोनों भुजा वाले अनन्त स्त्रियों के सुन्दर कटाक्षों से उत्पन्न हुई सुन्दर भावना वाले श्री प्रियतम जू श्रीमैथिल राजपुत्री जी के साथ उस ब्यारू महल में आ पहूँचे ॥११॥

समादृतौ तद्गृह मुख्यया तौ सुकारित म्भोजन मामृतान्नम् ।
सुगन्धताम्बूल सुबीटिकाभि स्तयाचितौ स्वाशन के निवेश्य ॥१२॥

उस घर की मुख्या सुन्दर स्वागत पूर्वक लिवा ले गई और माता जी के भेजे हुए अमृत सदृश अन्नों का सुन्दर तरह से भोजन कराया और आचमन कराके एक दूसरे सुन्दर आसन पर बैठा करके सुन्दर सुगन्धित पानका नागवल्ली नामक बीराको बनाकर पवाया और सम्यक् प्रकारकी पूजाकी ॥१२॥

नीराजमानौ तु तत स्तया तौ विमानमारुह्य गणैः सखीनाम् ॥
निद्रालशारक्त विशाल नेत्रौ समागतौ स्वाप गृहंसुदीप्तम् ॥१३॥

उसके बाद उस कुञ्जेश्वरी ने आरतीकी तब सब सखि समाज सहित श्रीयुगल सरकार विमान पर बैठ करके शयन कुञ्ज में आए। निद्रा के आलस से रँगे हुए विशाल नेत्र वाले उस सुन्दर प्रकाशमान शयन कुञ्ज में सुन्दर तरह आ पहुँचे ॥१३॥

तत्रागत्य मणिप्रकाश सदने दाशी गणै रक्षिते-
रुक्माचाँगण मण्डितास्तरणके विस्तीर्ण खण्डान्तरे ॥
मात्रा प्रेषितकं पयस्तुशयने पीत्वा प्रिया संयुतः-
श्रीरामो रसविग्रहो विजयते चर्वन्हस न्वीटिकाम् ॥१४॥

अनन्त दासीगण जिसमें रक्षा कर रहे हैं, अनन्त मणियोंका प्रकाश जिस महल में छाया हुआ है ऐसे विशाल महल के विस्तीर्ण खण्डों के अन्दर स्वर्ण से सुन्दर भूषित बिछावनों के ऊपर बैठ कर के माता जी के द्वारा भेजे हुए दूध को श्रीप्रिया जू के सहित शयन के समय पीकर के पान का बीरा चबाते हुए रस विग्रह श्रीराम जी विजय को प्राप्त हों ॥१४॥

निद्रालसारुणनवाम्बुज सुन्दराक्षौ शय्यास्थितौ जनकजा रघुराजसूनू ॥
शय्याङ्ग सञ्चित सुखाञ्चित भूषणाङ्गौ नीराजितौ युवतिभिर्नवदम्पती तौ ॥१५॥

निद्रा के आलस से लाल हुए सुन्दर कमल के सदृश विशाल नेत्र वाले जनकजा रघुराजकुमार शयन के योग्य सुखदाई भूषणों से सर्वाङ्ग शृङ्गारित होकर शय्या पर बैठे। उन नवीन दम्पत्तियों की युवतियों ने आरती की ॥१५॥

Scanned by CamScanner

स्त्राप म्विधातु म्मिथिलेन्द्र पुत्र्या दिव्याम्बरै दिव्य बिभूषणैश्च ॥
सन्मानिताः सर्व सखीगणाश्च विधाय जेष्ठासु तथा प्रणामम् ॥१६॥

श्रीमिथिलेस राजपुत्री जी के साथ शयन का विधान करते हुए सब सखीगणों को दिव्य वस्त्रा-भूषणों से सन्मानित किया और उन सखियों ने भी ज्येष्ठा और कनिष्ठा के क्रम से प्रणाम का विधान किया ॥१६॥

प्रवर्द्ध ताम्प्रत्य हरब्ज नेत्रे समंहि यूना रघुनन्दनेन ॥
कामं विलाशो जनकात्मजेयं सखी जनानाम्मुदमावहं स्ते ॥१७॥

यह जनक पुत्री है इसके साथ मुझे मनमाना विलास भोगना है इस प्रकार की भावना से सभी सखिजनों को आनन्द भरते हुये युगा पुरुष श्रीरघुनन्दन जू के द्वारा वे समानावस्था वाली सखियां मेरे कमल नेत्रों को अपने प्रतिहरण करने वाले मेरे नेत्रों में नित्य प्रति बढ़ें ॥१७॥

जेष्ठा वयस्यां जनकात्मजाया मित्याशिवं योज्य तया समेतम् ॥
पतिं प्रणम्याथ ययुः समस्ताः निशा वशेषम्पार चिन्तयन्त्यः ॥१८॥

जो ज्येष्ठा हैं वे श्री जनकात्मजा जी को आशीर्वाद देकर उनके सहित श्री प्रियतम जू को प्रणाम करके रात बीतने की चिन्ता करती हुई सबकी सब चलीं गयीं ॥१८॥

चित्रोपधाने परि सेव्यमानो वालाभिरम्भो व्यजनैः सुगन्धैः ॥
पतद्ग्रहा मोदि समुद्गकैश्च सीतायुतोसा शयने शयानः ॥१९॥

चित्र विचित्र तकिया वाले शयन के बिछावन पर कमल के दलों से बने हुये सुगन्धित पंखे से और आमोद की पीक को डालने की पीकदानी से तथा और भी सेवा सामग्रियों से इन बहुत सी वालाओं द्वारा सेव्यमान सीता के सहित ये प्रियतम शयन कर गये ॥१९॥

रत्नाञ्जिते रत्न गृहे विचित्रे वींणेश्वरीणा ङ्कलगान भावे ॥
श्रीराजराजेन्द्र कुमार रामो विलाश दक्षो जयति प्रकामम् ॥२०॥

रत्नों से जड़ित रत्न घरमें यूथेश्वरियों के बीणादिक बाजाओं द्वारा नृत्य गानके मधुर प्रकाश में विलास रङ्गमें बड़े चतुर श्रीराज राजेन्द्र कुमार श्रीरामजी को मन अभिलाषा पूर्ण जयको प्राप्तहावैं॥२०॥

धन्या स्याम्स्ति मनो वृत्ति र्यस्य कस्या पिभाग्यतः ॥
विलाश विषया सीता पते स्तस्येदममृतम् ॥२१॥

सीता पति के विलास विषय में जिस किसी की भी भाग्य से मनोवृत्ति हो गयी हो उन धन्य के लिए यह चरित्र अमृत के रूप में है ॥२१॥

इति श्रीशङ्कर कृते श्रीअमररामायणे श्रीसीतारामरत्न मञ्जूषायां रहस्याख्याने शयन
बर्णनो नाम षट्त्रिंशत्तमः सर्ग ॥३६॥

इति श्री मधुकर रूप रसास्वादिना कृता टीकायां रहस्याख्याने शयन प्रकार वर्णनो नाम षट त्रिंशत्तमः सर्गः समाप्तः ॥३६॥

Scanned by CamScanner

क्वचिद्रसात्मा रघुराजसूनु निशार्द्धभागे शशि मङ्गलांगे ॥
अनन्त रामा रमण प्रवीणः प्रियाविनोदे प्रकरोति रासम् ॥१॥

कभी चन्द्रमा से माङ्गलिक अङ्ग वाले रात्रि के आधे भाग में अनन्त रामाओं को रमण करने में बड़े चतुर रसस्वरूप रघुराज कुमार श्री प्रिया जू के विनोद में रासोत्सव करते हैं ॥१॥

पीतांशुकावृत विभूषण भूपिताङ्गो मन्दार हार हृदये विलशायमानः ॥
मार्तण्डवन्श सुखवर्द्धन मोहन श्रीरासेविराजति प्रियाकर कण्ठ लग्नः ॥२॥

पीत वस्त्र, दिव्य भूषणों से भूपित अङ्ग वाले और मन्दार पुष्पों के हार विलास कर रहे हैं हृदय पर जिनके ऐसे सूर्यवंशी सभी पूर्वजों के सुख को बढ़ाने वाले सुन्दर मनमोहक शौन्दर्य वाले श्री राम जी श्रीप्रिया जू के साथ परस्पर गलबाहीं देकर कण्ठ से लगे हुए रास के बीच में शोभित हो रहे हैं ॥२॥

नीलाम्बराम्बरविभूषण भूपिताङ्गी सेव्यां सुराधिप नगाधिप कन्यकाभिः ॥
प्राप्ते स्वृतौ शरदि चन्द्रमसः प्रकाशे रासेविनोदयति राघव आत्म कान्ताम् ३॥

नील साड़ी आदि वस्त्रों को धारण की हुई, शेप भूषणों से सजी हुई अंग वाली, देवराज नर-राज कन्याओं से सेविता, अपनी आत्मकान्ता को सुन्दर ऋतु के प्राप्त होने पर शरद पूर्णमासी की रात्रि के पूर्ण चन्द्रमा के प्रकाश में श्रीराघव जी रासरङ्ग के मण्डल में विनोदित करा रहे हैं ॥३॥

प्रियांश दत्तैक भुजाभिरामो भुजैक नृत्या भिनयान्वितश्च ॥
रासे शरचन्द्र मसः प्रकाशेमन्दस्मितो नर्तति राघवोसौ ॥४॥

श्रीप्रिया जू के साथ गलबाहीं देकर अति शोभित हुए श्रीराम जी एक हाथ से नृत्यों के अभि-नयों को बताते हुए शरद ऋतु के चन्द्रमा से प्रकाशमान रासरङ्ग के बीच में ये श्रीराघव जी नृत्य कर रहे हैं ॥४॥

चमत्कृता भूषण पूरितांगः पद्भ्यां चरन्नृत्य गति गुणाढ्यः ॥
ददाति तालं प्रकरोति गानं सुरांगणा मोहन रामचन्द्रः ॥५॥

चमकते हुये भूषणों से परिपूर्ण अंग वाले. नृत्य के गति आदि गुणों से परिपूर्ण, अपने गुणों से देवताओं को भी मोहित कर देने वाले श्रीरामचन्द्रमाजी पैरोंसे नृत्यकी गति लेते हुए भी ताल दे रहे हैं और गान कर रहे हैं ॥५॥

वीणां गृहीत्वाहि सरोज सुन्दरे करे सुचामीकरभूपणाञ्चिते ।
कृतश्च गानं स्वयमेव सीतया स मूर्च्छणं राघव चित्त हारकम् ॥६॥

सुन्दर मणि जटित स्वर्ण के भूपणों से भूपित प्रकाशमान कमल के सदृश सुन्दर हाथों में वीणा को लेकर श्रीराघव जी के चित्त को अपहरण करने वाले मूर्छना के सहित श्रीसीता जी ने स्वयंही गान किया ॥६॥

सद्य स्तदा चन्द्रकला मृदङ्गकं नानाद सार्द्धं स्वर मेलनेन वै ॥
तदा सुकेशी निपुणा ततेघने तया स कांस्यं स्वर मण्डलं धृतम् ॥७॥

Scanned by CamScanner

उस समय श्रीचन्द्रकला जी ने शीघ्रता से मृदंग को लेकर साथ में स्वर से मेल करके बजाया। उस समय सुकेशी नाम की चतुर सखी कांसे के मजीरा आदिक बाजा और तार के सितारादिक बाजा बजाये। इस प्रकार स्वर का मण्डल बाँधा ॥७॥

अतीव सान्द्रम् लय मूर्च्छनादिभिन्नितम्बिनीभिः कृतगानमद्भुतम् ॥
भ्रकुशभावेन तदैत्यराघवो ननर्त नाना गतिभिर्मुदान्वितः ॥८॥

सुन्दर नितम्ब वाली सखियों ने अति सघन कोमल लय मूर्छनादिकों से अद्भुत गान किया। उस समय श्रीराघव जी आनन्द मग्न होकर स्त्री भाव से नाना गतियों द्वारा नृत्य किये ॥८॥

गन्धर्वामर किन्नरागिरि सरि न्नागा नगा साखिन–
श्चैतन्या जड़ातां जड़ा अपियुश्चैतन्य भावन्तदा ॥
नोचर्वन्ति तृणं मुखे गृहितकं साभूत्पशूना न्दशा–
रासेराघव सुन्दरेण स्वधरे वन्शीधृता वैयदा ॥९॥

जिस समय सुन्दर श्रीराघव जी ने रास में अपने अधरों पर वंशी को धारण किया उस समय गन्धर्व, देवता, किन्नर, पर्वत, नदियां, नाग, वृक्ष, लतायें इन सबमें से जो जड़ थे वे चैतन्य हो गये और जो चैतन्य थे वे जड़ भाव को प्राप्त हो गए। जंगलों में चरते हुए पशु मुख में घास लेकर भी नहीं चबाते हैं ? इस प्रकार दशा पशुओं की हो गयी ॥९॥

आकाशान्मदनातुरा रघुवरे सम्मोहिता स्त्रीगणा–
देवानं हि समाययुः क्षिति तले यावच्च नार्य्यो वराः ॥
नागानां वनिता अधो भुवनतो रामे प्रकामा शुभाः–
वन्श्या मोहनकं रघूद्वह कृतं श्रुत्वाहि नादाद्भुतम् १०॥

रघु श्रेष्ठ श्रीराम जी के मनमोहक वंशी से किये हुए अद्भुत नाद को सुनकर श्रीरघुवर में संमोहित होकर के देवताओं की स्त्रीगण मदन से आतुर होकर आकाश से उतर आयीं। नागों की बनितायें पाताल के लोकों से तथा और भी जितनी भी उत्तम नारी हैं सब सुन्दरी श्रीराम जी में कामासक्त होकर इस रास मण्डल के पास पृथ्वी पर आगयीं ॥१०॥

श्रीरामचन्द्र उवाच–कायूयं खलु कस्मात्सकामा अप्यागताहि चात्र किम् ॥
गच्छन्तु स्वस्मि न्लोके स्वपत्नी रमणशीलोस्म्यहम् ॥११॥

श्रीरामचन्द्र जी उन सबसे बोले, "आप सब कौन हैं, सकामी होकर कहां से यहां आयी हैं, यहां क्या काम है, आप सब अपने २ लोकों में चले जाओ, मैं अपनी पत्नियों में ही रमणशील हूँ" ॥११॥

गच्छेति वदति रामे ता अपि जगदुः प्रणय कोपेन तम् ॥
नीति विशारद वचनै र्वनिता विरहाकुला आतीव ॥१२॥

श्रीराम जी के तुम चली जाओ ऐसा कहने पर प्रणय कोप से भरी हुई, अत्यन्त बिरह की व्याकुलता से वे सब बनितायें भी सुन्दर नीति विशारद बचनों से उन श्रीरघुनाथ जी से बोलीं ॥१२॥

नार्य्य उचुः—पति रसि सर्वासां त्वं रामेति नाम्नो व्युत्पत्या श्रुतौ ॥
रमयसि किन्नास्माभि रघुनन्दन मोहनेक्षण ॥१३॥

Scanned by CamScanner

वेद में राम इस नाम की व्युत्पत्ति करने पर आप सब स्त्रियों के पति होते हैं। हे मनमोहन कटाक्ष वाले रघुनन्दन जी ! हमारे साथ क्यों नहीं रमण करते हो ॥१३॥

अखिल लोक रमणशील त्यक्त्वा त्वां खलु कुत्र ॥
गमिष्यामः कूर्मः खलु कैंकर्यं जावक्या स्ते बल्लभायाः ॥१४॥

हे सम्पूर्ण लोकों को रमण कराने वाले हम आपको छोड़कर कहां जायगी, आपकी अत्यन्त प्रिया श्रीजानकी जी की हम निश्चय करके सेवा करेंगी ॥१४॥

पुनरिति हृदय विचारय भवता प्रेरिता वन्श्या नादेन ।
कथम प्युचितं ल्लोके निराकरोस्या मन्व्य राघव ॥१५॥

आप ही इस बात का अपने हृदय से विचार कीजिये कि निराकार रूप काम के मन्त्र से अभि-मन्त्रित करके इस वंशी के नाद द्वारा आपने ही हमको प्रेरणा की है, हे राघव अब अपने लोकोंमें जाना कैसे उचित होगा ? ॥१५॥

तिरस्कृता नुरागत्वं जहासि हेराम जानकी जाने ॥
मिथिलाधिप कुल कीर्ते राघवमोहनि कुरु प्रसादम् ॥१६॥

हे राम ? हे जानकी जाने ! यदि आप अनुराग का तिरस्कार करके हमको त्यागते हैं तो। हे मिथिलेस-कुल-कीर्ति-स्वरूपा, श्रीरामजी को मोहित करने वाली हे सीते ? आप हम लोगों पर कृपा कीजिये ॥१६॥

करुणानिधे जानक्याः प्रणतिप्रसन्न हृदया याः ।
इच्छा मवेक्ष्या घटनं सुराङ्गणानां वृत्तं प्रभुणा ॥१७।

प्रणाम करने मात्र से प्रसन्न हृदय वाली, करुणा समुद्र श्रीजानकी जी की इच्छा को और उन देवस्त्रियों का जो आचरण है उसको भी देखकर प्रभु श्रीरामजी ने उनकी प्रार्थना को सूघटित किया॥१७॥

नाकाधो भुवनाङ्गणा रघुवरे नित्या नुरागान्विता-
स्तद्वन्श्यः स्वन जात बोध हृदयाः सीता पदाब्जा श्रिताः ॥
ताभिस्ताण्डवकं कृतं सुचरितं लीला विलासान्वितम्-
दृष्ट्वा संस्थिरतां निशाकर निशा ताराश्च वै संययुः ॥१८॥

श्री रघुनाथ जी की वंशी से उत्पन्न हो गया है हृदय में दिव्य ज्ञान जिनके; ऐसी स्वर्ग पाताल आदि सब लोकों की स्त्रियां श्रीसीता जी के चरण कमल के आश्रित हुई श्रीराम जी में नित्य अनुराग पूर्ण हो गयीं, उन सबके साथ सुन्दर चरित्र युक्त लीला से ताण्डव नृत्य को करते हुए विलास रङ्ग मग्न श्रीराम जी को देखकर रात्रि में चन्द्रमा और तारायें सबके सब स्थिरता को प्राप्त हो गये ॥१८॥

उभयो रुभयो नार्य्यो मध्यगति रसिको ह राघवेन्दुः ।
मण्डल मध्यगतोपि सश्च नृत्यति घन शुन्दरोऽनन्तः ॥१९॥

रसिक शिरोमणि श्रीराघव चन्द्रमा जी दो २ नारियोंके बीच होकर तथा रास मण्डल के बीच में भी होकर मेघ के सदृश अनन्त सुन्दर नृत्य करने लगे ॥१९॥

Scanned by CamScanner

बिलुलित चिकुर कपोल कुण्डल लोल विलोल मौक्ति नाशं ॥
मदनविकाशन हासं चन्द्रं निन्दति राघवास्यम् ।२०।

चंचल अलक, बिलुलित कुण्डल- इस प्रकार के सुन्दर कपोल, नासिका में हिलती हुई मुक्ता, कामदेव को विकसित करने वाली मुस्कयान-इन सबसे युक्त श्रीरामजी का मुखचन्द्र आकाश के चन्द्रमा की निन्दा करता है ॥२०॥

रासाङ्गणेऽङ्गणानाङ्गणे विजयते राघवस्य लास्यम् ॥
नूपुर रव गत गगनं चित्रपदं सुरगायकानाम् ॥२१॥

रास के आँगन में, अनन्त अङ्गनाओं की भीड़ में श्री राघव जी को विलास-चेष्टाएँ विजय को प्राप्त हों, चरणों के नूपुरों की आवाज आकाश में देव गन्धर्वों के विचित्र पद को प्राप्त हो रही है ॥ २१ ॥

सीता सीता कान्तौ रासे मुदान्योन्यांशभुजदत्तौ ॥
विजयेते नृत्यन्तौ गायती सुर सुन्दरी गणेहि ॥२२॥

रास रङ्ग में आनन्द पूर्वक परस्पर अंश भुजा दिए हुए, देव स्त्रियों की भीड़ के बीच में श्री सीता और श्री सीता कान्त नृत्य करते हुए, गाते हुए विजय को प्राप्त हों ॥२२॥

अकस्मादाकाशाच्च डमरू त्रिशूल करकञ्ज धारिणी ॥
वनिता कापि नवीना नताहि सीताराम पादयोः॥२३॥

अकस्मात् आकाश से कर कमल में डमरू और त्रिशूल को धारण की हुई कोई नवीनावस्था वाली स्त्री रास मण्डल के मध्य आकर श्री जुगल सरकार के चरण कमलों में प्रणाम किया ॥२३॥

रासाजिरे वतीर्णा कृत्वा डमरू नादमद्भुतं सा ॥
सामगान कृत रुचिरं नानाभेदै नृत्य सुचिरम् ।२४॥

रास के आँगन में उतरी हुई उस वनिता ने डमरू का अद्‌भुत रुचिकर नाद किया और नाना प्रकार के साम गान के भेदों से सुन्दर रुचिर नृत्य किया ॥२४॥

पुनः कृतैकं चरितं प्रकटी कृता हि तत्र सरिता तया ॥
सरितान्तर गत नृत्यं कुर्वन्त्यो दृष्टाश्च वनिताः ॥२५॥

फिर उसने उस रास रङ्ग में एक चरित्र को प्रगट किया-रास मण्डल बीच उसने एक नदी पैदा की उस नदी के अन्दर नृत्यगान करती हुई बहुत स्त्रियों को सब ने देखा ॥२५॥

नीरस्था नागर्यो नीराद्बहि रागताश्च खेलन्त्यः ॥
नत्वा सीता रामौ पुनः समाजे नताः शिरसा ।२६॥

वे नदी के अन्दर वाली नारियाँ बाहर आकर खेलने लगीं फिर सब ने उस समाज में श्री-सीतारामजी को शिर से नमस्कार किया ॥२६॥

गानन्ता वरुणात्मजाः प्रथमतः कृत्वैव वाद्येलयं ।
रागाम्नाय विधान चारू निपुणा श्रक्रुः स्वरैरुच्चकैः॥

Scanned by CamScanner

रागिण्योपि प्रतोष जातहृदयास्तासांश्च सान्निध्यकम्।
जानक्यापि प्रशंशिता किमपरं ताः कृत्य कृत्यज्ञता:।।२७

उन वरुण कन्याओं ने पहले गान किया; रागों की परम्परा के विधान में सुन्दर पण्डिता उन वरुण कन्याओं ने फिर ऊँचे स्वर से आवाज को बाजाओं के स्वर में लय किया; जिन उन सबके गाने में राग रागिनी भी अपने हृदय से सम्यक् प्रकार उन सब के सामने २ अत्यन्त संतोष को प्राप्त हो गयीं और कहाँ तक कहें साक्षात् श्री जानकी जी ने भी उन सबकी प्रशंसा की जिस प्रशंसा को सुन कर वे वरुण कन्याएँ कृतकृत्य हो गयीं अर्थात अपने पुरुषार्थ को सफल समझा ।।२७।।

कृत्वा गान मुदारं नृत्य कर्तुं श्चोत्थिता वारुण्यः।
दिव्यविभूषण वसना रसना नूपुर झंकृता सुदिक्।।२८

उन वरुण कन्याओं ने पहले तो बड़ी उदारता के साथ सुन्दर गान किया उसके बाद नृत्य करने के लिये उठीं; अपने दिव्य भूषण, वस्त्र, करधनी, नूपुरों के झनकार से दिशाओं को झंकृत कर दिया ।।२८।।

निशीथके वेणु विपश्चि साद्धं गानं वधूनाङ्कलनाद सारम्।।
वधूजनानन्द करस्यचित्तम् रामस्यस्वनंदमनोजपाशैः२९।

आधी रात के बीच वीणा, वेणु आदि बाजाओं के साथ उन बधुओं का जो कल नाद का सारभूत गान है वह सब बधु जनों को आनन्द देने वाले श्री राम जी के चित्त को आनन्द मग्न करके काम के बन्धनों से बाँध दिया ।।२९।।

इति श्रीशङ्करकृते श्रीअमररामायणे श्रीसीतारामरत्न मञ्जूषायां रहस्याख्याने रास-प्रकर्णे नृत्यगानोत्सव नागदेवादि वनितानां समागम वर्णनो नाम द्वित्रिंसत्तमः सर्गः ।।३७।।

इति श्री मधुकर रूप रसास्वादिना कृता टीकायां रहस्याख्याने रास प्रकर्णे नृत्य गानोत्सव नागदेवादि वनितानां समागम वर्णनं नाम चतुस्त्रिंशत्तमः सर्गः समाप्तः ।।३७।।

ततो निकुञ्जेषु विगुञ्जितेषु प्रसून जालैः परिभूषितेषु ।।
रामेणरन्तुं प्रमदाः प्रकामाः प्रसूनशय्यां ललितां प्रतेनुः ।।१।।

उसके बाद फूलों के जालों से परिभूषित भ्रमरादिक वन जन्तुओं से परिगुञ्जित इस प्रकार के अनेक निकुञ्जों में श्री राम जी के साथ इच्छा भरके रमण करनें की इच्छा से सब प्रमदाओं ने ललित पुष्पों की शय्याओं का विस्तार किया ।।१।।

साद्धं कयाचिद्व्यतिहार रीत्या वेष क्रियाभ्यां रमण प्रवेकः ।।
सकिङ्किणि कङ्कण नाद मुद्बहन्रामो रमण्या सुरतं वितेने ।।२।।

किसी सखी के साथ वेष की रचना करके विपरीत रीति से रमण करने वालों में प्रधान श्री-रामजी ने कंकण किंकिनी के नाद (आवाज) को बढ़ाते हुये उस रमणी के साथ विलास का विस्तार किया ।।२।।

कस्याश्चिदेकान्त गतोनिकुञ्जे रामोरमण्या नलिनी दलाक्ष्याः ।।
नेत्रेऽञ्जनं मोदयुतो दधाति तस्याःभुजांस्वस्य विधायकण्ठे।।३।।

किसी एकान्त कुञ्ज में गए हुए श्रीरामजी कोई कमल दल के सदृश नेत्र वाली रमणी नेत्रोंमें, आनन्द मग्न हो कर उसकी भुजा को अपने कण्ठ में, अपनी भुजा को उसके कण्ठ में डाल करके, अंजन लगा रहे हैं ॥३॥

मुदाहि ताभ्यां सह राजपुत्रः कुंजे कयाचिन्मधुलिट् सुगुञ्जे
चिक्रीडसारीफलके स्वकामं गृहं विधायात्म पदे प्रवीणः ॥४॥

आनन्द मग्न हुए राजकुमार भ्रमरों से गुञ्जित किसी एकान्त कुञ्जमें, रमण करने में प्रवीण, मन मानी बाजी को लगा करके किसी के साथ चौपड़ खेल रहे हैं ॥४॥

काचिद्विलम्बेन प्रियागतं पतिं रामं वितर्ज्याम्बुज श्रोणि तेक्षणैः ॥
सरोज नालेन च ताड़नोद्यता सामोदिता तेन वचोभिरूज्वलैः॥५॥

कोई नायका बड़ी देर में समय बिता के आए हुये प्राणप्रिय पति श्रीराम जी को नेत्रों से और वचन से तर्जना देकर हाथ में कमल के नाल को लेकर मारने केलिये तैयार हुई उस प्रिया के नितम्ब देश में कटाक्ष करके विलास के बचनों से श्री प्रियतम जू ने उसको प्रसन्न कर लिया॥५॥

ततः समालिङ्ग्य कृतां रतोत्सवो तां चारू हासां क्वणिताङ्गभूषणैः ॥
रामेण वद्धे द विचक्षणात्मना नत्यांप्रपेदे पुनरूत्सुकां प्रियाम्॥६॥

उसके वाद आलिंगन करके अङ्ग भूषणों के झनकार से विलासोत्सव को करने वालो उसके बाद मन्द मुसुक्या कर फिर उत्सुक हुई उस प्रिया को वेद मर्मज्ञ विद्वानों की आत्मा श्री राम जी ने नमस्कार की विधि को किया ॥६॥

सर्वाति शौन्दर्य्ये विशेषशालिनी मान्याप्य शेषे निज सुन्दरीगणे ॥
प्राणप्रियासा स्वतिमानसम्भृता तच्छ्रु य तस्या निकटं जगाम सः॥७॥

जो शौन्दर्य में भी सबसे अतिशय विशेष हैं और समस्त अपनी सुन्दरी गणों में सब में विशेष मान्य भी हैं—इस प्रकार की अति सन्मान से पलित प्राणों से भी अधिक प्रिया ने मान कर लिया है ऐसा सुन कर श्री प्रियतम जू उनके निकट गए ॥७॥

उपस्थित श्चाञ्जलिना स तस्या रोषारुणाम्भोज दलायताक्ष्याः॥
अग्रे समग्रं प्रियतात्मभावं निवेदितुं तां प्रतिगां विधत्ते ॥८॥

वे श्रीरामजी, रोष के मारे लाल हो गये हैं कमल दल के सदृश विशाल नेत्र जिनके, ऐसी उन प्रिया के आगे अपने प्रियता के सम्पूर्ण भावों को निवेदित करने लिए हाथ जोड़ कर खड़े होकर उन प्रिया जू के प्रति स्नेह की वाणी बोलने लगे ॥८॥

मानोऽयमानन्द प्रदे कथं तव मय्याशु तद्ब्रूहि करोमिकिं तत्त ॥
तवानूकूलं हि तदाचराम्यहं त्वत्प्रति कूल्यंहि त्यजामि सर्वथा॥९॥

हे आनन्द देने वाली ? यह आपका मान किस लिए है उसको मेरे प्रति शीघ्र कहिए मैं क्या करूँ मैं तो हमेशा जो आप के अनुकूल होता है उसी का आचरण करता हूँ, आप के प्रतिकूल जो भी हो मैं उसको सर्वथा त्यागता हूं ॥९॥

Scanned by CamScanner

न्यायो न मानो मयि प्राण वल्लभे तवानुकूलैक सुवर्त्म वर्त्तिनि॥
त्वच्चेष्टितं चेष्टित एव प्राणिनां छाया तथाहं तव चारितं चरे ॥१०॥

हे प्राण वल्लभे ! मेरे लिए आपका यह मान करना न्याय नहीं है मैं तो हमेशा एक आप के अनुकूल मार्ग का ही अनुशरण करता हूँ। आपकी चेष्टा से ही सम्पूर्ण प्राणियों की चेष्टा होती है तथा मैं तो आप की छाया होकर आचरण करता हूँ ॥१०॥

मानोयमानन्दकरः किमुत्प्रिये विनावियोगेन वियोग दुःखजः ॥
सुस्मार्य्य सुश्रोणि बिहारकं सुखं तत्कि लभेचित्तसमुन्नता वपि ।११॥

हे प्रिये ! यह विना हि वियोग हुये वियोग जनित दुःख से उत्पन्न हुआ मान क्या यह आनन्द को देने वाला है हे सुश्रोणी ! विहार में अत्यन्त ऊँचे वढ़े हुए चित्त को भी यह वियोग जनित दुःख का स्मरण दिलाना क्या इससे सुख प्राप्त हो सकता है ? ॥११॥

एताः समस्ताः नरराजपुत्र्यस्तवाङ्ग भूतामांय रन्तुकामाः ॥
नतासुदृश्यो बिभिचार दोषो योगाय क्षेमाय त्वमस्ति हचासाम्।१२॥

ये रमण करने की कामना वाली समस्त राज कन्याऐं आपकी अङ्ग भूता हैं जिनकी प्राप्ति और रक्षा करने वाली तुम हो। इस प्रकार की इन सुन्दर नेत्र वतियों के साथ मेरा भी रमण करना व्यभिचार दोष नहीं होता है।।१२॥

तवोपदिष्टा सुनिवेसितं मनो नचेतरासु स्वयमात्म मोहनैः ॥
हावैःप्रियाणां ललितादि बीक्षणै रनन्यभावेन त्वयि प्रतिष्ठितम्।१३

अनन्य भाव से तुम्हारे में प्रतिष्ठित हुईं इन प्रियाओं के सुन्दर हाव पूर्वक मेरी आत्मा को मोहित करने वाले कटाक्षों से आपकी उपदेश दी हुई इन प्रियाओं में मैंने अपने मन को सुन्दर आवेशित कर रक्खा है और अन्यों में नहीं ॥१३॥

औदार्य्य शीलादि गुणैः समुद्भवा कीर्तिः प्रिये लोक समग्रव्यापिनी॥
ईर्ष्या गुणात्सातु विभेतिते शुभा राहोर्यथा चन्द्रमसी सुचन्द्रिका॥१४

हे प्रिये ! शील, उदारता आदि अनन्त गुणों से उत्पन्न हुई आप की सुन्दर कीर्ति समस्त लोकोंमें व्याप्त हो रही है वह आपकी कीर्ति ये ईर्ष्यादि गुणोंसे उसी तरह भयभीत हो रही है जिस तरह से चन्द्रमा की चांदनी राहु से डरती है॥१४॥

स्नेहः परः प्राणपतेः प्रियायाः परं धनं चान्य धनं न तस्याः ॥
तद्दर्शितुं किंतु परिक्षितुम्त्वा मानोहि मान्ये त्यज सर्वथात्वम् ॥१५॥

प्रिया के लिये प्राणपति का परम स्नेह ही श्रेष्ठ धन है और अन्य प्रिया के लिये नहीं है आपने इसी बात को दिखाने के लिये अथवा मेरी परीक्षा करने केलिए ही यह मान मेरी समझ से धारण कर रक्खा है इस लिए तुम इस मान को सर्वथा त्याग दो ॥१५॥

प्राणेशस्य प्रिया वचांसि सततं स्नेहान्वितान्येव सा
श्रुत्वानन्दमवाप्यमन्द हँसितै रुत्थाय प्राणेश्वरम् ॥

Scanned by CamScanner

श्लेस्याप्यथ सुखावहं शंसिमुखी तमं मुदं संददौ
सख्योप्येवं तयोर्मुदेन मुदधा श्रक्रुश्च वाद्योत्सवम् ॥१६।

मन्द हँसते हुए प्राणेश्वर के एक रस प्रेम से भरे हुए वचनों को सुनकर वह प्रिया आनन्द को प्राप्त हुई और लो मैं मान को त्याग देती हूँ ऐसा कह कर उठ करके प्राणेश्वर को आलिंगन किया; इस प्रकार चन्द्रमा के सदृश मुख वाली प्रिया ने अपने प्रियतम के लिए सम्यक् प्रकार आनन्द को दिया उन दोनों की प्रसन्नता में प्रसन्न होने वाली उन सब सखियों ने भी बाजा आदिक सङ्गीत का महान् उत्सव किया ॥१६॥

इति श्रीशङ्कर कृते श्रीअमररामायणे श्रीसीताराम रत्न मञ्जूषायां रहस्याख्याने रासप्रकर्णे रति विहार मानोपनयनो नामाष्टत्रिंशत्तमः सर्गः ॥३८॥

इति श्री मधुकर रूप रसास्वादिना कृता टीकायाँ रहस्याख्याने रास प्रकर्णे रति विहार मानोपनयनो नामाष्टत्रिंशत्तमः सर्गः समाप्तः ॥३८॥

पुनश्च रामोरमणी विहारी ससीतया वारिणि सम्प्रविश्य ॥
क्वचिन्निमग्नः क्वचिदुत्ततार क्वचिद्धशन्कर्षति स्वां प्रियाश्च ॥ १ ॥

फिर रमणियों के साथ विहार करने वाले श्री राम जी ने श्रीसीता जी के साथ जल में प्रवेश किया; कहीं बूड़ते हैं; कहीं तैरते हैं, कहीं पर हँसते हुये अपनी प्रिया को खींचते हैं ॥१॥

सरोज नालैः परिताडयन्ति परस्परश्चापि प्रियं हि वालाः ॥
प्रियोपि धृत्वा च करं प्रियायाः जले प्रविश्यानन माचुचुम्ब ॥ २ ॥

कहीं पर परस्पर कमलों के नालों से पीटते हैं और सब सखियाँ भी प्रियतम को और प्रियतम भी सब सखियों का हाथ पकड़ कर खींचते हैं। कोई प्रिया को जल में खींच कर मुख-चन्द्र को चूमते हैं ॥२॥

करं प्रियाप्राणपतें गृहीत्वा जले समाकृष्य समं निमग्ना ॥
मत्स्याहि पश्यन्ति सुकौतुकं तज्जलान्तरे मङ्गलमाचरन्त्यः ॥ ३ ॥

कोई प्रिया प्राणपति के हाथ को पकड़ कर जल में खींचती है और स्वयं बूड़ती हैं। इस प्रकार के कौतुकों को जल के अन्दर मछलियाँ देखती हैं और मङ्गल विधान के आचरण करती हैं ॥३॥

उद्वीक्ष्यकान्ताः प्रियमुत्प्लवन्तं रामं विशालाम्बुज सुन्दराक्षम् ॥
करे सनालाम्बुज मादधाना धावन्ति हाहेति कोलाहलन्त्यः ॥ ४ ॥

विशाल कमल के सदृश नेत्र वाले प्रियतम श्रीरामजी को इधर से उधर जल में कूदते हुये देख कर सब प्रियाएँ हाथ में नाल सहित कमलों को लेकर महान कोलाहल मचाती हुई हा! हा! इस प्रकार कह कर दौड़ती हैं ॥४॥

रामो रसावेश विनोदकारी कान्ता वनान्तेषु नितान्तचारी ॥
करेसनालाम्बुज गुच्छधारी कान्तानुधावन्नधिकं स्वदीव्यत् ॥ ५ ॥

रस के आवेश में विनोद करने वाले उन कान्ता समूहों के वन में स्वतन्त्र विचरने वाले श्रीराम जी अपने हाथ में नाल के सहित कमलों के गुच्छा को धारण करके उन कान्ताओं के पीछे दौड़ते हुये अधिक सुन्दर प्रकाशमान हो रहे हैं ॥५॥

Scanned by CamScanner

सुमूर्ति विद्युन्निवहे रराम सुमूर्त्तिमेघोपि च श्रावणीकः ॥
जलेऽमलेविश्य तथा विशेषं रराज रामः प्रमदागणेऽर्णो ॥६॥

मूर्तिमान अनन्त विजलियों के समूहमें मूर्तिमान श्रावणके मेघ इन दोनों से भी अधिक शोभित सुन्दर आनन्दमय प्रमदागणों के बीच रमण करते हुए श्रीराम जी निर्मल जल वाले विशाल सरोवर में भीतर चले गये॥६॥

कराब्जयोः कापि प्रियं सुपाशे छलेन चानीय प्रिया प्रवीणा ॥
रामं सरो वारिणि सम्प्रविष्टा सा वारुणीसर्व कला प्रलब्धा ॥७॥

कोई अति चातुरी प्रिया वरुणकन्या सब कलाओं में चढ़ी बढ़ी है । वह वरुण कन्या जल के अन्दर प्रवेश करके छल पूर्वक अपने दोनों करकमलों के बन्धन से प्रियतम श्रीराम जी को बांध करके ले आयी ॥७॥

स्वयं बिवाहं प्रतिसूचनाय रामेण सार्कं पट ग्रन्थनञ्च ॥
कृत्वाहि शीघ्रं वरुणालयंसा गतात्र रासे वनिताः शुचन्ति ॥८॥

और शीघ्र श्रीराम जी के वस्त्र के साथ अपने वस्त्र की गांठ बांध करके सबको–इनके साथ मेरा हो बिवाह हुआ है ऐसी सूचना देती हुई वह बनिता इस समाज में से प्रियतम को लेकर अपने पिता के घर वरुण लोक को चली गई । इस रास मण्डल की सब बनितायें महान् सोच में पड़ गयीं ॥८॥

मातुः समीपम्प्रथमं गतासा जग्राह पादं शिरसा प्रणम्य ॥
वरः पुनः साच बधू स्तथाहि प्रयोजितौ वाग्भिः शुभेजनन्या ॥९॥

वह वरुण कन्या पहले तो अपनी माता के समीप में गयी, सिर से अपनी माता के चरणों में प्रणाम किया फिर उसी प्रकार दोनों वर–बधुओं को माता ने अपनी वाणी से शुभाशीर्वाद दिया ॥९॥

पुत्र्या वरोस्तीति पटस्य ग्रन्थि विलोक्य मात्रा सहसा प्रतीता ॥
सुखाब्धिमग्ना तु निरीक्ष कान्तिं रामस्य कञ्जायत लोचनस्य ॥१०॥

माता ने वर के साथ कन्या की वस्त्र–ग्रन्थि को देखकर–ये मेरी पुत्री के वर हैं–ऐसा सहसा विश्वास किया । कमल के सदृश विशाल नेत्र वाले श्रीराम जी की अङ्ग कान्ति को देखकर सुख समुद्र में मग्न हो गयी ॥१०॥

ततश्चरित्रं स्वयमात्म मोहनं मात्रे नयानिश्छलतो निवेदितम् ॥
मुदातया तद्वरुणः प्रबोधित स्तदा सहर्षो पितरौ बभूवतुः ॥११॥

उस वरुण कन्या ने निश्छलता पूर्वक अपनी माता से स्वयं अपनी आत्मा से इन प्रियतप जू को मोहित करने का चरित्र निवेदन किया फिर माता ने भी वह सारा समाचार अपने पति वरुण जी को जनाया । इस प्रकार दोनों माता पिता अति हर्ष को प्राप्त हुये ॥११॥

दृष्टिं सहर्षां तु पितु र्विलोक्य मुदंययौ सा वरुणात्मजापि ॥
लज्जावती सा बदनारविन्दम् ननाम दृष्ट्वा पितरं प्रियाग्रे ॥१२॥

Scanned by CamScanner

पिता जी की उस हर्ष मयी दृष्टिको देखकर वह वरुणकन्या भी अति आनन्द को प्राप्त हुई। पिता जी के मुखचन्द्र को देखकर, प्रियतम जू आगे कुछ लज्जित सी होकर, पिता जी के चरणों में प्रणाम किया ॥१२॥

कन्या वरौ दम्पतिना तदा च सिंहाशने रत्नमये मनोज्ञे॥
प्रस्थाप्य चार्घादिक षोडशैश्च प्रपूजितौ धन्य तमेन चाद्यः ॥१३॥

उस समय दोनों माता पिता ने उन दोनों वर कन्याओं को मन रमणीय रत्नमय सिंहासन में बैठाकर अर्घ्य पाद्यादि षोडशोपचार विधि से वर कन्या की पूजाकी और आज अपने को धन्य माना॥१३

निरीक्ष्य पाशी रघुनन्दनस्यरूपं वशीकार करं निमग्नः ॥
प्रशंशयन्ना त्मसुलाभ भाग्य मुवाच रामं म्प्रति प्रीति युक्तः ॥१४॥

वरुण राज वश करने वाले श्रीरघुनन्दन जू के रूपको देखकर आदन्दमग्न होगये। अपने मस्तक के सुन्दर भाग्य की प्रशंसा करते हुये प्रेम युक्त श्रीरामजी से बोले ॥१४॥

पुत्र्यो मेभवदंघ्रि रेणु शरणं प्राप्ता निजैः सुकृतैः—
कीर्ति में कृत सर्व लोक धवला लोक त्रयं मूर्च्छिता॥
नो जानामि किमस्ति चात्र सुकृतं धन्यो स्म्यहं श्रीमतं-
दशरथन्दनं बलवतं सम्बन्धिनं प्राप्य च ॥१५॥

हे महाराज ये मेरी पुत्रियां अपने सुन्दर पुण्य के प्रताप से आपके श्रीचरणकमल रज की शरण को प्राप्त हुई हैं मेरी कीर्ति ने सब लोकों में उज्ज्वल होकर तीनों लोकों को मूर्छित कर दिया। मैं नहीं जानता कि इस जगह पर मेरा कौन सा पुण्य है। श्रीमान महाबलवान् दशरथ जी को सम्बन्धी रूप में प्राप्त करके मैं अहो धन्य होगया ॥१५॥

सुलक्षणानामपि राम चन्द्र सर्वाङ्ग सौन्दर्य सुवेषनीनाम् ॥
उद्वाह चिन्ता ग्रथितो विधात्रा जानामि तत्वं परिबोधितस्ते ॥१६॥

हे रामचन्द्र जी! सर्वाङ्ग शौन्दय सुन्दर वेष वाली तथा सुन्दर लक्षण वाली इन्हीं कन्याओं की चिन्ता से विधाता ने मुझे ग्रसित कर रक्खा था। आपसे परिबोधित हुआ मैं आपके तत्व को जानता हूँ ॥१६॥

सृजत्यवत्यहरो हरिविधि रेषां परं कारणमेकमेवहि ॥
गुणत्रये स्वात्मगति विधायिनां सहस्रपादा क्षिशिरो रु बाहवः ॥१७॥
धर्मादि रक्षण विधौ सुरपालनाय येचा सुरान्दलयितुं बहुशोवतारा: ॥
सर्वस्य कारणकला रघुनाथ एको योध्याधिनाथ सुत एव परः परेशः ॥१८

उत्पत्ति, पालन, प्रलय करने वाले ब्रह्मा, विष्णु महेशों के पर कारण अद्वितीय एक आप ही हैं अपनी आत्मगति से इन तीनों को तीन गुणों में विधान करने वाले सहस्र पाद, नेत्र, सिर, ऊरू, बाहु इस प्रकार की वेद वाणियों से आप ही की स्तुति की जाती है धर्मादिकों के रक्षण विधि में देवताओं के पालन के लिए, असुरों को दलन करनेके लिए बहुत से अवतार जिससे होते हैं वे सबके कारण श्रीरघुनाथ जी की एक कला है। इस प्रकार के श्री अयोध्याधिपति कुमार एक आप ही परात्पर पर ईस हैं ॥१८॥

Scanned by CamScanner

वाक्कैतवेन श्रुतयः परिगोपयन्ति यन्निश्चयन्तिमुनयः सततं विचारैः ॥
अन्तर्वहिश्च परिपूर्ण स्वतः प्रकाशं चिन्मात्र रूप रहितं कति चिद्वदन्ति ॥१६॥

वेद की श्रुतियां अपनी वाणी के छल से जिनको छिपाती हैं मुनि लोग एक रस बिचार से जिसका निश्चय करते हैं, जो स्वतः बाहर भीतर परिपूर्ण हैं जिनका रूप रहित चैतन्य प्रकाश है इस प्रकार से कोई २ विद्वान कहते हैं ॥१६॥

भक्त्यावियुक्त मनसो बहुयत्नतोपि–
नोप्राप्नुवु निविड़ वाग्विपिनान्तकेतम् ॥
भाव प्रबोधनिपुणा रसिकाः सुभक्त्या–
बिन्दन्ति बाक्परि गुण्ठित रामतत्वम् ॥२०॥

भक्ति से रहित मन वाले लोग वाणी के सघनता में बहुत यत्न करने पर भी जिनको प्राप्त नहीं कर सकते हैं, केवल भाव-प्रवोध में निपुण, रसिक लोग अपनी सुन्दर भक्ति से शब्दों की सुन्दर गूढ़ता के अन्दर श्रीराम तत्व को प्राप्त करते है ॥२०॥

जन्मान्तरैः परमभाग्यतया सुलब्धः सम्बन्धभाव सुखदो रघुनन्दनेयम् ॥
पुत्रीभिरेव तव तेनविना श्रमेण प्राप्स्यन्ति माशु चवरं विधिना प्रवुद्धः ॥२१॥

हे रघुनन्दन ? जन्मान्तर के परम भाग्य से प्राप्त हुआ यह आपका सम्बन्ध भाव अत्यन्त सुखदायी है। ब्रह्मा ने ही तुम्हारी पुत्रियां बिना परिश्रम के ही सुन्दर वर को शीघ्र प्राप्तकर लेंगे, ऐसा उपदेश मुझे किया था ॥२१॥

तत्वं ते पिच दर्शनं रघुपते सत्साधनैर्दुर्ल्लभम्–
पुत्रीणां हि प्रसादतो द्वयमिदं लब्धं मया सौख्यदम् ॥
किञ्चैकं हृदि लालसा जनकजायुक्त स्मभव दर्शनं–
साफल्यञ्च तया विना च बिफलं गायन्ति विद्वज्जना: ॥२२॥

हे रघुपते ! आपका तत्व और दर्शन सत्साधनों से भी अत्यन्त दुर्लभ है। यह पुत्रियों के प्रसाद से मैंने इन दोनों सुखदायियों को प्राप्त कर लिया है, थोड़ी लालसा हृदय में एक और भी है कि आपका दर्शन श्रीजनकजा जी के सहित मिले तब आपका दर्शन सफल हो क्योंकि उनके दर्शन बिना आपका दर्शन विफल ही होता है ऐसा विद्वान लोग कहते हैं ॥२२॥

योगमुद्रोवाच–अन्व गृही चापि तुतोष श्रुत्वा रामो मनोज्ञं बरुणस्य बाक्यम्॥
प्रदर्शि तश्चात्म द्वितीय रूपं बामे बरेण्यं बरुणाय सीता ॥२३॥

योगमुद्रा बोली कि हे सुकान्ति ? श्रीराम जी वरुण जी के मन रमणीय बचनों को सुनकर सन्तुष्ट हुए और स्वीकार भी किये। अपनी आत्मा से भी अधिक सुन्दर दूसरा रूप श्रीसीता जी को वाम भाग में बैठाकर वरुण जी को दर्शन दिया ॥२३॥

प्रपूजितो दम्पतिना च दम्पती सपत्नीकेनैव यथा बिधानकैः ॥
हस्तौ समानीय ह्युपरिथतोग्रके महोत्सवाप्तः प्रणतिं चकार सः ॥२४॥

वरुणउवाच—नाथैको द्वन्दनामास्ति ममभित्रं पुरातनम् ॥
काश्चित्तस्य गृहे सन्ति कुमार्यो रूपमोहकाः ॥२५॥

वरुण जी बोले कि हे नाथ एक मेरे द्वन्द नाम के पुराने मित्र हैं उनके घर में भी सुन्दर मन मोहक रूप वाली कुछ कन्याऐं हैं ॥२५॥

स्वीकारं भवता तासां क्रियतां वचनान्मम ॥
एवमुक्त्वा समाहूय वरुणेन प्रबोधितः ॥२६॥

"आप मेरे वचन से उनको भी स्वीकार करें"—इतना कहकर वरुण जी अपने मित्र को बुलाकर समझाया ॥२६॥

बोधितो वरुणेनासौ रामभक्ति समन्वितः ॥
बभूवनागराजोपि मत्वात्मानं कृतार्थकम् ॥२७॥

इस प्रकार वरुण से प्रबोधित वे नागराज भी अपनी आत्मा को कृतार्थ मान करके श्रीराम भक्ति से पूर्ण हुए ॥२७॥

तदातु नागराजेन नागानां सत्कृतिर्यथा ॥
तथारीत्या कुमार्य्यस्ताः श्रीरामाय समर्पिताः॥२८॥

उस समय नागराज ने अपनी नाग जाति की सुन्दर जैसी क्रियाऐं हैं तैसी रीति से विधान करके उन कन्याओं को श्री राम जी के लिये समर्पण किया ॥२८॥

दत्वारत्न समूहानि प्रणतिश्च पुनः पुनः ॥
कृत्वातुतोष श्रीरामं रामोपिस्वसुरं हितम् ॥२६॥

बहुत रत्नों का समूह दहेज में दिया; बार २ श्रीराम जी को प्रणाम किया, श्री राम जी भी अपने स्वसुर उन नागराज पर अति संतुष्ट हुए ॥२६॥

विमानं वरुणोप्येकं वारिमार्गावगाहिनं ॥
विद्युन्निभश्चरामाय ददौ नम्य पुनः पुनः ॥३०॥

वरुण जी ने एक जल मार्ग से चलने वाले बिजली के समान चमकीले विमान को श्रीराम जी के लिए देकर बार २ प्रणाम किया ॥३०

वारिवारण मेंकश्च वार्य्यश्वमेक मद्भुतम् ॥
षोडसैव पुनः कन्याः रत्नमाणिक्य भूषिताः ॥३१॥

एक जल का हाथी, एक जल का घोड़ा जो कि अद्भुत हैं, फिर सोलह ही कन्याओं को रत्न माणिक्यों से भूषिता श्रीराम जी के लिये दिया ॥३१॥

बध्वाञ्जलिं च रामस्य पटे तेन च ग्रन्थिताः ॥
नागराजं च वरुणं सुवाग्भिराघवः प्रभुः ॥३२॥

श्री राम जी के वस्त्र से उन सबके वस्त्रों से ग्रन्थि बाँध कर नागराज और वरुणराज दोनों जने हाथ जोड़े हुये उन दोनों को श्रीराघव प्रभु सुन्दर वाणी से ॥३२॥

Scanned by CamScanner

प्रतोष्यदत्तमादाय स्थित्वा दिव्याऽर्णजानकम्॥
क्षणा द्विद्यु दिवा भापन्नाविर्भूतोविहार के ॥३३॥

संतुष्ट करके उनको दी हुई समस्त वस्तुओं को लेकर दिव्य जल विमान में बैठ कर एक क्षण में बिजली की तरह चमक करके जहां पहले विहार कर रहे थे उस विहार स्थान में प्रकट हो गये ॥३३।

जलेदृष्ट्वातु वनिता महाश्चर्य्यं ययुस्तदा ॥
शरीरेमृतके प्राणा आगताश्च तथा मुदम् ॥३४॥

उन विहार स्थल को वनिताओं ने उन जल यान में बैठे हुये वनिताओं के साथ आए हुये अपने प्रियतम को देखकर महा आश्चर्य चकित हो गयीं; जिस तरह से मरे हुए शरीर में प्राण आ जाते हैं उस तरह से आनन्द हुआ ।।३४।।

अद्भुतं तच्च प्रख्यानात्कथयित्वारघूत्तमः ॥
नार्य्यः प्रतोपिताः सर्वा ययाकारं रराम च ॥३५॥

उस अद्भुत दृश्य को देखकर चकित हुईं उन सब नारियों को श्री रघुत्तम समस्त कथाओं को कहे, सब नारियों को संतुष्ट किया; फिर पहले ही की तरह रमण करने लगे ॥३५।

श्रमिताहं जले गाधे देहि बाह्वम्वलम्वनम् ॥
छलेनाहूय काप्येव ॰मालिंगति मुदाप्रियम् ॥३६॥

मैं अगाध जल में अत्यन्त थक गयी हूँ,'मुझे अपनी भुजा का अवलम्बन दीजिए—इस प्रकार किसी ने छल से बुलाकर प्रियतम जू को आलिंगन किया ॥३६॥

वारिण्या विंश्य सर्वांगं कृत्वा चोर्द्धं प्रकोष्टकम् ॥
निस्सारय प्रियहे मा मिति व्याजेनश्लिष्यति ॥३७॥

कोई सर्वाङ्ग से पानी में बूड़ कर दोनों हाथों के प्रकोष्ठ को ऊपर उठाकरके हे प्रियतम ! मैं बूड़ गयी, मेरे को निकालो-इस बहाने से बुलाकर प्रियतम को आलिंगन कर लिया ॥३७॥

राघवात्र समागच्छ दर्शयामि सुकौतुकम् ॥
समीपे चागते कान्ते विहस्यालिङ्गति प्रिया ॥३८॥

किसी सखी ने हे राघव ? आप इधर आइए मैं आपको कौतुक दिखाती हूँ—ऐसा कहके बुलाया, कान्त के समीप में जाने पर प्रिया ने हँस कर आलिंगन किया ॥३८॥

एहि एहि भृशं कान्त जलेमां किं श्च कर्षसि ॥
ममञ्जाहूय चाश्लिष्य जले कापि वराङ्गना ॥३९॥

किसी सखी ने हे कान्त ? इधर आइये, इधर आइये, जल में मुझ को कौन खींच रहा है—ऐसा कर कर समीप में बुलाया और प्रियतम को आलिंगन करके वह श्रेष्ठ अङ्गवाली ने जल में डुबकी लगा ली ॥३९॥

कारुण्यान्तः प्रियं रामं मग्ना मग्नेति शब्द्य च ॥
स्वाभिलाप कैतवेन पूजयन्ति जलें गनाः ॥४०॥

कोई अङ्गना कारुणिक हृदय वाले प्रियतम राम जी को मैं बूड़ गयी, बूड़ गयी–इस प्रकार की आवाज करके अपने समीप बुलाया और अपनी अभिलाषा पूर्ण करने के लिये छल से प्रियतम जू को आलिंगन करके जल के अन्दर पूजा करती है ॥४०॥

मुदाप्रिया ग्राहितकन्धरप्रियः प्रिया तथा ग्राहित कान्त कन्धरा ॥

प्रतेरतु र्वारिणि वाम लोचनौ श्रीजानकी भानुकुल प्रदीपकौ ॥४१॥

कोई प्रिया आनन्द मग्न होकर प्रियतम जू के कन्धे को पकड़े है उसी प्रकार किसी प्रिया के कन्धा को कान्त पकड़े हुये हैं। इस प्रकार सुन्दर नेत्र वाले दो २ करके जल में तैर रहे हैं इस प्रकार श्री जानकी और सूर्य कुल दीपक प्रियतम दोनों मिलकर जल विहार कर रहे हैं ॥४१॥

अंघ्रि प्रिया प्राणपते गृहीत्वा जलान्तरे कर्पति सापिमग्ना ।

आदाय तस्या बसनं प्रियोपि स्वब्जाननायाः प्रहसन्ततार ।४२॥

कोई प्रिया प्राणपति के चरणों को पकड़ कर जल के अन्दर खींच करके लायी स्वयं भी बूड़ी, प्रियतम भी हंसते हुए उस कमल नेत्री के वस्त्रों को लेकर तैरने लगे ॥४२॥

इत्थं बारिणि बारिजायतदृशाम्बृन्दे मनोजोत्सवम्

कृत्वा कोटि मनोज सुन्दर वपुः श्रीकौशलेशात्मजः

शेषां वीक्ष्यनिशा प्रियालशयुतां स्थित्वारथ स्त्रीगणै

र्गायद्भिः परितो जगाम भवनं स्वापाय सीताप्रियः॥४३॥

इस प्रकार जल में जलज नेत्री स्त्रियों के झुण्ड में मनोजोत्सव करके करोड़ों कामों से अधिक सुन्दर शरीर वाले श्री कौशलेशात्मज रात्रि को कुछ बाकी जानकर आलस्य से भरी हुई प्रिया को लेकर गान करती हुई समस्त स्त्री गणों के साथ रथ में बैठ कर सीता के प्रिय शयन के लिए अपने भवन में गये ॥४३॥

इति श्रीशङ्कर कृते श्रीअमररामायणे श्रीसीतारामरत्न मञ्जूषायां रहष्याख्याने प्रमदावनगत श्रीसीताराम रास बिहार वर्णनो नामैकोन चत्वारिंशत्तमः सर्गः ॥३९॥

इति श्रीमधुकर रूप रसास्वादिना कृता टीकायां रहस्याख्याने प्रमदा वनगत श्रीसीताराम रास विहार वर्णनो नामैकोन चत्वारिंशत्तमः सर्गः समाप्तः ॥३९॥

अथराज कुमार्य्यू वाच—वयसामृदुलाः स्त्रीणां शीलने चैव तत्पराः ॥

वयस्याः रसिकाग्रस्य राघवस्य भवन्ति ये ॥१॥

राजकुमारी सुकान्ति ? बोली कि हे योग मुद्रे ? जो रसिकेश श्री राघव जी की जो कोमल उम्र वाली स्त्रियायें हैं उनको शील आदि सद्‌गुणों से युक्त सेवा में तत्पर समवयस्क सखा हैं ॥१॥

तेषां कथय नामानि भावयोग्यानि चाद्यमे ॥

अन्येप्रिय सखायश्च दाशातेषां हिनामच ॥२॥

उनके भावना योग्य सुन्दर नामों को पहले मुझसे कहो और जो उन प्रियतम जू के अन्य सखा है; दास हैं— उनके नामों को भी कहो।

Scanned by CamScanner

श्रीयोगमुद्रोवाच–रसात्मन्यप्रमेयेस्युः श्रीरामेयत मानसाः ॥
मोहना वयवाः शील चक्षुषो पांग दर्शनाः ॥३॥

श्रीयोगमुद्रा बोली कि अप्रमेय रसात्मा श्रीरामजी में सावधान चित्त वाले मन मोहनी अङ्ग शोभा वाले, अपने शील भरी हुई प्रिय नेत्र कटाक्षों से सुन्दर दर्शनीय ॥३॥

रसवन्मृदुवाण्यातु तस्य चित्तापहारकाः–
सोपि तेषां भावशक्त श्चुम्बना लिङ्गनादिभिः ॥४॥

अत्यन्त कोमल वाणी से रस बरसाते हुए उन प्रियतम जू के चित्त को चुराने वाले उन सखावों के भाव के अधीन होकर के वे प्रियतम भी चुम्बन आलिंगन द्वारा उन सबके चित्त को चुराते हैं ॥४॥

प्रियकाहि सखाय स्ते विट चेट विदूषकाः ॥
पीठ मर्दक एवं हि चत्वारस्तु स्वभावतः ॥५॥

श्रीप्रियतम जू के विट, चेटक विदूषक, पीठमर्दक ये चार प्रकार के सखा हैं जो अपने सुन्दर स्वभावों से प्रियतम जू की सेवा करते हैं ॥५॥

मोहनांगो मयङ्कास्यों मृदुलो मोहन स्वरः ॥
निम्नास्यः शीलनेत्रश्च शीलाक्षः संकुचेक्षणः ॥६॥

उन सखाओं के नाम इस प्रकार हैं—मोहनाङ्ग, मयंकास्य, मृदुल, मोहनस्वर, निम्नास्य, शीलनेत्र, शीलाक्ष, संकुचेक्षण ॥६॥

सुधाधरो, रङ्गनेत्रो, मृताधर, मनोहरो, ॥
सुन्दराक्षः कामतन्त्रो भीरुको भावशीलकः ॥७॥

सुधाधर, रङ्ग नेत्र, अमृताधर, मनोहर, सुन्दराक्ष, कामतन्त्र, भीरुक, भावशीलक ॥७॥

नवलांगो भीरुनेत्रो नवलो नवको पिच ॥
नवशीलो नवांगश्च मृदुस्मेरः स्मिताधरः ॥८॥

नवलाङ्ग, भीरु नेत्र, नवल, नवक, नवशील नवाङ्ग, मृदुस्मेर, स्मिताधर ॥८॥

लज्जिताक्षी लोलहस्तश्चपल श्चुम्बन प्रियः ॥
चित्रदृष्टिः स्नेहकरो हेमांगो हारहेरसो ॥९॥

लज्जिताक्ष, लोलहस्त, चपल, चुम्बनप्रिय, चित्रदृष्टि, स्नेहकर, हेमाङ्ग, हारहेरस । ९॥

प्रणेयः प्रेमशीलश्च प्रेमवश्यो ऽमृतंवदः ॥
दयालुः सुवदः प्रेयाः प्रिया कारो वशङ्करः ॥१०॥

प्रणेय प्रेमशील, प्रेमवस्य, अमृतंवद, दयालु, सुवद, प्रेया, प्रियाङ्कर, वशङ्कर ॥१०॥

मृदुशीलो जनाक्षश्च ललनेहो ललामकः ॥
मृगाक्षः कञ्जनेत्रोपि प्रेम पालः स्मितम्वदः ॥११॥

Scanned by CamScanner

मृदुशील, जनाक्ष, ललनेय, ललामक, मृगाक्ष, कंजनेत्र, प्रेमपाल, स्मितंवद ॥११॥

प्रियादरो गुप्तकेलिः नव्यांगो नव्यभावुकः ॥
नव्यशीलो, भव्यमाली, नवलाशील सोहलौ ॥१२॥

प्रियादर, गुप्तकेलि, नव्याङ्ग, नव्यभावुक, नव्यशील, भव्यमाली, नवलाशील, सोहल ॥१२॥

भूषणांगो, भूषणेह्यो भूषणोपि, प्रसंगदः, ॥
श्रमंकरो, विघ्न नाशो, वयः श्रीश्च श्रमाकरः ॥१३॥

भूषणाङ्ग, भूषणेय, भूषण, प्रसंगद, श्रमंकर, विघ्ननाश, वय, श्री, श्रमाकर ॥१३॥

गुप्तरागो, रागशीलः, प्रेयसी, गुण मानधौ ॥
सर्वांगदो, विशेषज्ञः, संकेतज्ञ, स्तिरस्मितः ॥१४॥

गुप्तराग, रागशील, प्रेयसी, गुणमानध, सर्वाङ्गद, विशेषज्ञ, संकेतज्ञ, स्तिरस्मित ॥१४॥

रमंको, मानशीलः, स्त्रीबिम्बो, वेणी धरोंगुली ॥
प्रियालकः प्रेमनिधि, हृदयालु, हृदिस्पृकः ॥१५॥

रमङ्क, मानशील, स्त्री बिम्ब, वेणीधर अंगुली, प्रियालक, प्रेमनिधि, हृदयालु, हृद्‌स्पृक ॥१५॥

लवङ्ग नामा ललितो, लावण्य, श्च मनोरमः ॥
मोहनाक्षो, मोहनास्य, सुकेशः, सुरमः, शुकः ॥१६॥

लवङ्ग, ललित, लावण्य मनोरम, मोहनाक्ष, सुकेश, सुरम, शुक ॥१६॥

एते चान्येपि मृदुलाः श्रीरामस्य विहारिणः ॥
नर्म्माः नर्मरसेभिज्ञा मानिनीनाञ्च मानहाः ॥१७॥

इतने सखा तथा और भी बहुत से विहार के सहायता करने वाले श्रीरामजी के नरम सखा हैं, ये लोग नरम स्वभाव, नरम रस मर्मज्ञ, माननीयों के मान को नाश करने वाले हैं ॥१७॥

अन्ये वीररसावेशाः शस्त्रविद्या विशारदाः ॥
मृगया क्रीडने श्रीमद्राघवस्य सहायकाः ॥१८॥

अन्य जो सखा हैं वे वीर रस के आवेशी, शास्त्र विद्या में विशारद, शिकारादि खेलों में श्री राम जी के सहायक हैं ॥१८॥

लोकवीरो, वीरभानुः, रत्नसेषर, वीरभौ ॥
यशोमत्तः, कीर्तिबाहुः, कुलशेखर, भीरवौ ॥१९॥

उन सबके नाम बताते हैं— लोक वीर, वीरभानु, रत्नशेखर, वीरभा, यशोमत्त, कीर्ति बाहु, कुलशेखर, भीरवा ॥१९॥

रणकेलि शुद्धतश्च वीरसीदो, महारथः ॥
सारबाहु, दीर्घबाहुः, रणधीर, महाबलौ ॥२०॥

रणकेलि शुद्धत, वीरसीद, महारथ, सार बाहू, दीर्घबाहु, रणधीर, महाबल ॥२०॥

Scanned by CamScanner

बीरशेनो, यशोमाली, महोजाः रणनर्तकः ॥
खङ्गबाहु, खङ्गखेली, रणकोपी, बलाकरः ॥२१॥
वीरशेन, यशोमाली, महातेजा, रणनर्तक, खङ्गबाहु, खङ्गखेलि, रणकोपि, बलाकर ॥२१॥
युद्धशीलो, युद्धलाशी, सत्रुसीदन, सज्जयौ ॥
कीर्त्तिराजो, यशोराजो, रणार्कः कुलमण्डनः ।।२२॥
युद्धशोल, युद्धलासी, शत्रुसीदन, सज्जय, कीर्तिराज, यशोराज, रणार्क, कुल मण्डन ॥२२॥
बिजयी, जयशालश्च, कीर्त्तिहारो, यशोध्वजः, ॥
कीर्तिध्वजो मानशीलो, दृढमुष्टिः सुकन्धरः ॥२३॥
वि जयी, जयशील, कीर्तिहार, यशोध्वज, कीर्तिध्वज, मानशील, दृढ़मुष्टि, सुकन्धर ॥२३॥
रुक्ममौलिः रणेसिहः, समिञ्जय, श्च सज्जयौ ॥
बीरर्षभः, कुलमौलिः, कुलपाला रिभञ्जकौ ॥२४॥
रुक्ममौली, रणसिंह समिंजय, सज्जय, वोरर्षभ, कुलमौलि, कुलपाल, अरिभंजक ॥२४॥
जयशीलो, बीरसिंहो, बिप्रसेवक, गोत्रपौ ॥
कुलरत्नः, कुलेन्दुश्च मन्त्रधी, नींति गोपनौ ॥२५॥
बलाम्बुधि, बींर्य्यबाहुः र्वलबाहुः कुलर्षभः ॥
दानशीलः, कालकुन्तो, वलराजि, र्वलार्णवः ॥२६॥
जयशील, वीरसिंह, विप्रसेवक गोत्रप, कुलरत्न, कुलेन्द्र, मन्त्रधी, नीतिगोपन, बलाम्बुधि, वीर्य वाहु, कुलर्षभ दानशील, कालकुन्त, वलराजी बलार्णव ॥२५-२६॥
परान्तकः, कान्तिराजः, कुलभानुः, सुबिक्रमः ॥
जगतीशो, दानशौण्डो, जनपालो, लमन्तकः ॥२७॥
परान्तक कान्तिराज, कुलभानु सुविक्रम, जगतीश, दानशौण्ड, जनपाल लमन्तक ॥२७॥
रणरुद्धो, महीरत्नः, शीघ्रञ्जय, रणोद्भवौ ॥
बन्शरत्नो, दग्रबाहू, रबिकुण्डल, भानुभौ ॥२८॥
रणरुद्ध महीरत्न, शीघ्रञ्जय, रणोद्भव, वंशरत्न, उदग्रवाहु, रविकुण्डल, भानुभ ॥२८॥
कीर्त्तिशीलः, प्रजापालः, प्रभाशीलो, बलौघकः ॥
रणेहर्षो, भीमकुन्तो, ह्यमोधासुगश्रीकरौ ॥२९॥
कीतिशील, प्रजापाल, प्रभाशील, बलौवक रणहर्ष, भीमकुन्त अमोधा, आसुग श्रीकर ॥२९॥
एतेचा न्येपिरामस्य वयस्या राजकन्यके ॥
तेजस्विनी राजपुत्रा वलबुद्धि समन्विताः ॥३०॥
हे राजकन्यके ! ये तथा और श्रीरामजी के समान अवस्था वाले बड़े तेजस्वी राजकुल में उत्पन्न हुए, बलबुद्धि में परिपूर्ण राजकुमार हैं ॥३०॥

वयसा मृदुला नम्रा दासा स्तत्सेवनेरताः ॥

अनिशं सविधस्था ये तेषां नामानि मे शृणु ॥३१॥

जो अवस्था से बड़े कोमल इनकी सेवा में स्थिर रहने वाले उनके नामों को भी मुझसे सुनो ॥३१॥

चन्द्रको, भद्र, सौभद्रौ, सात्विको, नन्दकस्तथा ॥

नवलो, नवनीतश्च, प्रेयकः, सुमुख, स्तथा ॥३२॥

चन्द्रक, भद्र, सौभद्र, सात्विक, नन्दक, वनल, नवनीत, प्रेयक, सुमुख, ॥३२॥

सुरेखः, सुगणो हेली हरितो बहु भायकौ ॥

वर्णको, विधुक, श्चैव वञ्जुलो, वोधक, स्तथा ॥३३॥

सुरेख, सुगण हेलि, हरित, बहुभाग्यक, वर्णक, विधुक, बंजुल, बोधक ॥३३॥

सुपेषः, परमो, मत्तो, मधुको, मेनको, मुखी ॥

शृङ्खो, गिरिक, श्चैव, गौरो, गोलेख, गानगौ ॥३४॥

सुपेख, परम, मत्त, मधुक मेनक मुखीं, शृङ्खल, गिरिक गौर; गोलेख, गानग ॥३४॥

परञ्जुः, पूरको, मेनो, भूरसो, भानुको, दकौ ॥

नवलेखो, नागरीको, नौतमो, गौरवो, पिच । ३५॥

पर जू, पूरक, सेन, भूरस, भानुक, उदक, नवलेख, नागरिक, नौतम, गौरव ॥३५॥

भ्राजक्रू, राजिको, प्यंशुः रसालुश्च, मनोलकः ॥

सालिकः, सेचकः, शोभी, संकुलो मेकलो, भुजी ॥३६॥

भ्राजकू, राजिक, भंसु, रसालु, मनोलक, सालिक, सेचक, शोभी, संकुल, मेकल, भुजी ॥३६॥

पारमी, परमी, सञ्चुः, सुलच्छी, कलधीः, सुधीः ॥

धीरसेकी, सोलकश्च परभू, रमको, वसुः ॥३७॥

पारमी, परमी, सञ्चु, सुलच्छी, कलधी, सुधी, धीरसेकी, सोलक, परभू, रमक, वसु ॥३७॥

बल्लु,श्च धरसुः, कान्तः, ठोभी, तारक, तन्तुकौ ॥

तुङ्गभो मालुभो. भोगी, भौरको गुणभो गरुः, ॥३८॥

वल्ल, वरसु कन्त, ठोभी तारक, तन्तुक तुङ्गभ, मालुभ, भोगी, भौरक, गुणभ, गरू ॥३८॥

प्रातिमा, नक्रलो, कामो, मधुरो, मधुको, मधुः ॥

सौरमो, बन्धुको, वागी, मालसो जूपकः सुखी ॥३९॥

प्रांतमा, नक्रल, काम, मधुर, मधुक, मधु, सौरम बन्धुक, वागी, मालस, जूपक, सुखी ॥३९॥

रन्तिको, रासिको, शान्तिः सौकरो, वाहुलो, द्रुसिः ॥

रत्नलो, रसकु, गुण्ठी, कण्ठी, लोवर, लोलकौ ॥४०॥

रन्तिक, राशिक, शान्ति, सौकर, वाहुल, दुसि, रत्नक, रसकू, गुण्ठी, कण्ठी, लोवर, लोलक ॥४१॥

मोदको, मेरुको, मंसी, मनोली, मुद केलिकौ ॥
सारको सुरभो, भाली परागी, पारगी, ललुः ॥४१॥
मोदक, मेरुक; मन्सी, मनोली मुदक, केलिक, सारक, सुरभ, भाली, पारगी परागी लल्लू ॥४१॥
दोलको, दलको, दामी, दाशिको, दाकभो, दली ॥
दूरभो' रलको' रङ्गी' तरङ्गी' तरलो' मनी ॥४२॥
दोलक, दलक, दामी, दासिक, दाकभ, दली, दूरभ, रत्नक, रङ्गी, तरङ्गी, तरल, मनी ॥४२॥
अंशको' ह्यारसीना भुनैंपको' नर्म्म' कुन्तलो ॥
कौमुदो' नवली' भृङ्गो' भाजुः' सञ्चव' चन्दभौ ॥४३॥
असक, ह्यरसी नाभु नैपक, नर्म, कुन्तल, कौमुद, नवली, भृङ्ग, भ्राजु, सञ्चव, चन्दव ॥४३॥
भासु' रासुग' रम्भोली' रसुक' स्तिथिको' रकुः ॥
कुवलो' कुम्बरी' सानु' मंतिलो' सार' मेखलौ ॥४४॥
भासू, आसुग, रम्भोली, रसुक, तिथिक, रकू, कुवल, कुम्बरी सानु, मतिल, सार, मेखल ॥४४॥
मृदको' ऋजु' पालूकौ' पल्पशी' कञ्जु पानको ॥
मञ्जुलो' रूपको' भागी' तेजस्वी' वीर' माघजौ ॥४५॥
मृदुक, ऋजु, पालुक, पल्पसी, कंजु, पानक, मञ्जुल, रूपक, भागी, तेजस्वी, बीर, माघज ॥४५॥
सुरलो' वरलो' सिंचो' भानुको' भावरो' धुनी ॥
व्रतकः' पाणवो; नन्दुः; कोकिलो' घुवको' मिनुः ॥४६॥
सुरल, वरल, सिञ्च, भानुक, भावर, धुनी, व्रतक, पाणव, नन्दु, कोकिल, धुवक, मिनु ॥४६॥
मयूरो; मेधुरो' मेधो; वेदी; वीणो; वरालकः ॥
अनशीलः; पीवरो पिरणको; नूपुरो; रसः ॥४७॥
मयूर, मेधुर, मेध, वेदी- वीण- वरालक- अनसील- पीवर- पिरणक- नूपुर- रस ॥४७॥
सुरसो; भारलो; भावुः कल्याणः; चेमलो दशी ॥
सुनीरो; मुक्तको; मल्लो; मण्डनी; भूषणो;भरूः ॥४८॥
सुरस- भारल- भावु- कल्याण- चेमल- दसी- सुनीर- मुक्तक- मल्ल- मण्डनी- भूषण- भरू ॥४८॥
चात्रकः; श्चित्रक; श्चित्र; श्चम्पको; रुचको; रसुः ॥
चञ्चरीक; श्चन्दनश्च; चन्दकः; कोरकः कली ॥४९॥
चात्रक- चित्रक- चित्र- चम्पक रुचक- रसू- चञ्चरीक- चन्दन, चन्दक, कोरक, कली ॥४९॥
हंशश्च; सारस' श्चैव' कन्दुको; गुच्छ गुम्मफको ।
केयूर' मण्डलो केशी; कुण्डलो मौलि पादुकौ ॥५०॥
हंस, सारस' कन्दुक' गुच्छ, गुम्फक' केयूर, मण्डल' केसी' कुण्डल, मौलि' पदुक ॥५०॥

Scanned by CamScanner

आनन्दो, हर्ष, रागीणौ, लग्नको, माधुरी, व्रतः ॥
सुधाकरो, गौरकश्च, गम्भीर, सुमुखो, नदुः ॥५१॥

आनन्द- हर्ष- रागीण- लग्नक- माधुरी' माधुरी- व्रत' सुधारक' गौरक' गम्भीर' सुमुखी नदु ॥५१॥

रत्नको, रसलो, भोगी, मनुपी, काशिकः, सुखी ॥
बृन्दी, बृन्दक, बृन्दारो, बिन्दुको, बिदुको, वदो ॥५२॥

रत्नक' रसल' भोगी' मनुपी' कासिक' सुखी' बृन्दी' बृन्दक' बृन्दार' विन्दुक' विदुकवदी ॥५२॥

एते चान्येपि लावण्यालशङ्काक् देश कालवित् ॥
श्रीरामे भक्तियुक्ताश्च सेवन्ते सर्वदा सुखम् ॥५३॥

ये सब तथा और भी बहुत से श्रीराम जी में सुन्दर भक्ति वाले' बड़े सुन्दर' सुकुमार' मीठा बोलने वाले' देशकाल अवस्था को समझने वाले' सदा सुखपूर्वक श्रीराम जी की सेवा करते हैं ॥५३॥

इति श्रीशङ्करकृते श्रीअमररामायणे श्रीसीतारामरत्न मञ्जूषायां उत्तराख्याने वयस्यानां दाशानां नाम संज्ञा कथनं नाम चत्वारिंशत्तमः सर्गः ॥४०॥

इति श्री मधुकर रूप रसास्वादिना कृता टीकायां रहस्याख्याने वयस्यानां दासानाँ नाम संज्ञा कथनं नाम चत्वारिंशत्तमः सर्गः समाप्तः ॥४०॥

राजपुत्र्युवाच—अयोध्याया मध्यभागे वर्णितः पूर्णतस्त्वया ॥
बाह्यतश्च तथा तस्या वर्णनं पूर्णतः कुरु ॥१॥

सुकान्ति बोली कि हे योग मुद्रे श्री अयोध्या जी के भीतरी भाग का तो तुमने पूर्ण वर्णन किया उसी तरह से बाहरी भाग का भी पूर्ण रूप से वर्णन करो ॥१॥

योगमुद्रोवाच—शृणु राज पुत्री दानिं यत्पृष्टन्तद्वदाम्यहम् ॥
त्वत्प्रीत्या परमं शोभा मैश्वर्यं च तथापरम् ॥२॥

योगमुद्रा बोली कि हे राजपुत्री! तुमने जो कुछ पूछा वह तुम्हारी प्रसन्नता के लिये मैं बताती हूँ सुनो; श्री अयोध्या जी के बाहरी भाग की परम शोभा तथा परम ऐश्वर्य का भी वर्णन करूँगी ॥२॥

ब्रह्म ज्योति रयोध्यायाः प्रथमा वरणं शुभम् ॥
यत्र गच्छन्ति कैवल्याः सोहमस्मीतिवादिनः ॥३॥

श्री अयोध्या जी के बाहर में प्रथम आवरण बहुत सुन्दर ब्रह्म ज्योति का मण्डल है जहाँ पर सोहमस्मि मन्त्र का जप करने वाले विद्वान् कैवल्य मुक्ति को प्राप्त होते हैं ॥३॥

द्वितीयं तु देश द्वीपाद्या पगव्ध्यग संयुतम् ॥
वासुदेवादि लोकैश्च राजते तत्ततीयकम् ॥४॥

दूसरे आवरण में दिव्य देश सातों द्वीप तथा सातों समुद्र भी हैं और तीसरे आवरण में वासुदेव आदिक अनन्त विष्णुओं के लोक हैं ॥४॥

तेषां मध्ये तु शाकेतं मण्डितं मणि मन्दिरैः ॥
प्रमोद विपिनं यस्य चतुर्दिक्षु विराजते ॥५॥

Scanned by CamScanner

इन तीन आवरणों के बीच में चारों दिशाओं में मणिमय भूषित पर्वतों के सहित तथा भीतर में चारों तरफ़ में प्रमोदवन आदि बारह वनों के सहित श्री साकेत धाम है ॥५॥

पुरतः पञ्च क्रोशश्च विशालं दश योजनम् ।
तस्यो भयतः सरयुः सप्त दुर्गा नुवाहिनी ॥६॥

श्री साकेत नगर से पाँचकोश बाहर चारों तरफ में चालीस कोश पर्यन्त चौड़ाई में—इस मैदान के दोनों किनारे श्री सरजू जी सात आवरण दुर्गों के बीच सप्तस्रोत होकर के चारों तरफ बहती हैं ॥६॥

शालैस्तालैस्तमालैश्च रसालै द्रुम शंकुलम् ॥
मन्दारैः कल्प जातीयैर्देव वृक्षैश्च शोभितम ॥७॥

सातों आवरण वाली श्री सरजू जी के दोनों किनारों की भूमियों पर साल, ताड़, तमाल आम आदि वृक्षों की सघनता छाई हुई हैं; बीच २ में मन्दार कलपवृक्ष आदिक जातियों के देव वृक्षों से वह भूमि शोभित हैं ॥७॥

तड़ाग बापिकाश्चैव मणि बद्धतटाः शुभाः ॥
स्फटिकै बँद्ध नीबाह कूपैश्च परि शोभितम् ॥८॥

जहाँ तहाँ तालाब बावड़ी मणिमय बँधे हुये घाट वाले, तथा कहीं २ स्फटिक मणि से बने हुए किनारे वाले कुंआ अतिशोभित हैं ॥८॥

मृग यूथानि रम्यानि चरन्ति च रमन्तिच ॥
नादितं द्विज संघैश्च कूजितं भ्रमरा कुलैः ॥९॥

उन बनों में मृगाओं के झुण्ड अति सुन्दर चरते हैं और रमण करते हैं। पक्षियों के समूहों ने कल्लोल मचा रक्खा है; भ्रमरों के झुण्ड गूँज रहे हैं ॥९॥

नृत्य कृत्केकिनां युग्मै र्गानकृत पिक यूथकैः ॥
निर्वैर गज सिंहानां यूथैश्चापि विराजितम् ॥१०॥

मोर दो २ होकर नृत्य कर रहे हैं; कोकिलाऐं झुण्ड की झुण्ड गा रही हैं; हाथियों के झुण्ड और सिंहों के झुण्ड निर्वैर होकर वन में घूमते हुए शोभित हो रहे हैं ॥१०॥

युग्मकै राज हंशाना सारसाना श्चयुग्मकैः ॥
कपोतानाश्च युग्मैश्च मनोज्ञं मोहनं परम् ॥११॥

राजहंस दो २ होकर सारस भी दो २ होकर, कपोत भी दो २ होकर मन रमणीय विलासों को करते हुये सबके मन को मोहित कर रहे हैं ॥११॥

भूमि प्रदेशकास्तत्र नाना मणिभिरञ्चिताः ॥
कुत्रचिन्नील वर्णाश्च कुत्रचित्पीत वर्णकाः ॥१२॥

उन प्रत्येक आवरणों की भूमि प्रदेश विविध प्रकार की मणियों से चित्र बिचित्र रचित हैं। बीच २ में कहीं २ नील, पीत आदि बहुत रंगों की वेदियाँ बनी हैं ॥१२॥

Scanned by CamScanner